



हस्तलिपि-विज्ञान



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६

पटना ६

# ॥ हस्तलिपि-विज्ञान ॥

॥ बालकृष्ण मिश्र ॥

⑥ वालकृष्ण मिश्र

प्रथम संस्करण

१९६८

प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.

जिल्हा ६

अवस्था

रिफार्म स्टूडियो जिल्हा ६

मूल्य

१

मुद्रक

नवान प्रेम जिल्हा ६

समपण

उस मालिक को जिसने  
ज्ञान के दीप  
जलाये



## प्रस्तावना

कुछ वष हुए मैंने हस्तलिपि विज्ञान के विषय में एक रस लिखा था। यह विज्ञान-गंगा पत्रिका' ग्वालियर में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पुस्तक की वास्तविक भूमिका वही रही है। कुछ संपोषन के साथ वह लेख इस पुस्तक के प्रारम्भ में रिया गया है। विषय की सहज व्याख्या इसमें मिलेगी। हस्तलिपि विज्ञान का उपयोगिता—सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में प्रयोज्य इसके प्रति मेरा अपना दृष्टिकोण आज भी प्रभावशाली सक्षिप्त विवरण इस रूप में मिलेगा।

इस रूप में प्रकाशन के उपरान्त अनेक गम्भीर प्रश्न मेरे सामने आए। हस्तलिपि विज्ञान की अनिवार्यता के विषय में बहुत-सी बातें आगे बढ़ाए प्रस्तुत हुई। जो विद्वान गम्भीर विचारक महानुभाव इस विषय की ओर आकर्षित हुए, और जिन पाठकों को इस विषय की मनोवैज्ञानिक क्षमता प्रमाणित हो गई तथा इसका कुछ अनुभव हुआ, उन्होंने समय समय पर मुझे सहायता प्रार्थना की। उन महानुभावों में मुझे ऐसा प्रतीति मिली कि हस्तलिपि विज्ञान के विषय पर और अधिक प्रकाश डाला जाए तथा इस विषय की विधिवत् प्रक्रिया का सुविस्तृत विवरण दिया जाए। इसी उद्देश्य में प्रस्तुत पुस्तक का रचना का प्रयोजन किया गया है।

पाठ्यालय दोनों में प्रायः गत एक गताश्री में इस विषय पर गम्भीर ग्राह्य हो रहा है। अनेक प्रयोग एवं अनुसंधान कार्य चल रहे हैं। पत्र-व्यवस्था इस विषय का परोक्ष एवं गम्भीर साहित्य प्रकाशित हो चुका है। यह साहित्य मूलतः जर्मन एवं फ्रेच भाषाओं में है। अपेक्षा में भी इस विषय का काफी साहित्य उपलब्ध है। उन देशों में यह विषय विविध ज्ञान के रूप में



पुष्टता प्राप्त कर चुका है तथा मनाविज्ञान शास्त्र का एक आवश्यक एवं उपयोगी अंग मान लिया गया है। हैम्बग बोन म्यूनित्स आदि कई महाविद्यालयां में यह विषय प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है। परन्तु वहाँ के पण्डितों ने केवल रोमन लिपि का ही उपयोग किया है।

जो मूल तत्त्व रोमन लिपि पर सिद्ध हो सजते हैं वे अथवा उस प्रकार के अन्य सिद्धांत अन्य लिपि-रूप पर सामान्यतः लागू हो सकते हैं। इस प्रकार के विचार से मैंने हस्तलिपि विज्ञान का उपयोग देवनागरी आदि उत्तर भारतीय लिपियाँ पर प्रारम्भ किया है। हिन्दी में इस विषय की कोई आदर्श पुस्तक प्राप्त नहीं हो सकने में इस अनुसंधान प्रयोग एवं लेखन कार्य में अशुविधाएँ रही हैं जिनको मुद्दामाने का प्रयास मैंने किया है सफ़ाई कहा तक मिल सकी है इसका उचित अवन पाठ्यगण ही कर सकेंगे। मेरा मूल प्रयास इस विषय से सम्बंधित ज्ञान एवं प्रारम्भिक सामग्री का संचय करना रहा है और आता रही है कि मह आगे आने वाले ज्ञानासु मनोविज्ञान के विद्वानों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

पाश्चात्य देशों में हस्तलिपि विज्ञान का लक्ष्य जीवनोपयोगी व्यावसायिक, औद्योगिक आदि पक्षों में रहा है जिनमें मानव-स्वभाव के मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म निरीक्षण की महत्ता है, जैसे कि विभिन्न प्रकार के पदों के लिए प्रार्थी आवेदकों का चनाब छात्रों के लिए गिना सम्बन्धी सलाह नवयुवतियों एवं नवयुवकों के लिए व्यवसाय सम्बन्धी मार्गदर्शन मानसिक स्वास्थ्य एवं सेवाकाय में सलाह तथा ज्ञान मनोविकास-सम्बन्धी परामर्श आदि । अतः यदि भारतीय विज्ञान समीक्षक इस विषय का लक्ष्य निर्धारित करने इसकी गम्भीरता में प्रवेश करेंगे तो निश्चय ही विषय-परिचय एवं तत्सम्बन्धी उपयोगिता अधिक सफल सिद्ध होगी ।

प्रायः पिछले पच्चीस वर्षों से यह काय धीरे धीरे अवकाशानुकूल चलता रहा है। इस काल में बहुत-से विद्वान् महानुभाव शिक्षक तथा मनाविज्ञान के वरिष्ठ अधिकारियों तथा सहस्रों मित्रों ने शास्त्रार्थ एवं योगदान किया है। इसके लिए मैं अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ। श्री प्रफुल्ल चन्द्र चर्जी भूतपूर्व प्रधानाचार्य विपिनबिहारी विद्यालय

साँसी तथा श्री एफ० सी० चौथिया वरिष्ठ अधिवारी, व्यावसायिक परामर्श सल्लाह, महाराष्ट्र राज्य बम्बई एवं श्री रामचन्द्र रिछारिया प्रचार अधिवारी, वन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय का विषय आभारी हूँ । इनके निर्देशन प्रेरणा एवं सहयोग के बिना सम्भवतः प्रस्तुत कार्य सम्पन्न नहीं हो पाता ।

श्री राजेन्द्र गर्मा का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने नताजी सुभाषचन्द्र बोस पुरपोतमदास टण्डन, राहुल साठ्याभन, सरदार बलमभाई पटेल और रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि की बहुमूल्य हस्त लिपियाँ प्रदान कर इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ाने में मेरी सहायता की । महात्मा गांधी के पत्र के लिए मैं राजपाठ एण्ड सन्स दिल्ली का आभारी हूँ ।

परमावश्यक आभार श्रीमती गीला सधूजी, निर्देशक राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० को भी है जिनकी उदारता से यह नवीन विषय प्रकाश में आ रहा है ।

झाँसी

—बालकृष्ण मिश्र



# सूची

१	हस्तलिपि विज्ञान	६
२	हस्तलिपि और व्यक्तित्व	१६
३	हस्तलिपि विज्ञान का विकास	१६
४	मानवज्ञानिक विद्वत्पण के उदाहरण	४१
५	व्यक्तित्व का विश्लेषण	५३
६	अगर कम लिख जाए	६८
७	लिखावट का मनोविज्ञान	७७
८	विज्ञान लिखावटें, कुछ व्यक्तिगत अनुभव	१०३
९	हस्तलिपि विज्ञान के उपयोग	१११
१०	विविध लिखावटें	१२४
परिगणित—१	पुस्तकों की सूची	१४१
परिगणित—२	सरपामा की सूची	१४३
परिगणित—३	बेरोबी का मौखिक कथन	१४५



# हस्तलिपि-विज्ञान

हस्तलिपि विज्ञान का जैसा के स्वभाव व्यक्ति-य और मानसिक अवस्था से सीधा सम्बन्ध है। इस सत्य का अनुभव हम सत्र निय ही करते हैं। लिखने वाला की लिखावट पहचानी जाती है। उदाहरणार्थ जमी मेरा लिखावट है वसी आपकी नहीं है। और जसा आप लिखते हैं वसा वबन आप हो नित्वन हैं। आपकी लिखावट का अपना मौलिक रूप है जिसे आपका परिचिन व्यक्ति मनी भानि पहचानते हैं।

लिखावट के पीछे से चिह्नों अयोगामी अग्रगामी ऊर्ध्वगामी वक्राकार सीधी रेखाएँ कुछ विमग और विराम का गव लिखने वाले अपने विशेष ढंग से लिखते हैं। एसा क्या? हस्तलिपि विज्ञान की उत्पत्ति इस क्या? मूकक प्रश्न के सहारे जानी है। जसा आप लिखते हैं आप क्या हा क्या लिखते हैं? आपका इस विषय ढग में लिखने में अवश्य हो कोई रहस्य है। नम रहस्य का मनोवैज्ञानिक विच्छेपण करना हस्तलिपि विज्ञान का ध्यय है।

हस्तलिपि विज्ञान से लिखने वाले के स्वभाव मानसिक गन्त तथा चरित्र के ऐसे विषय ज्ञान का पना घन्ता है जा उसका व्यक्तित्व का निमाण करत है। यह विद्या कोई भूत भविष्य बनान वाली यानिप विद्या नहा है वरन् विज्ञान पर आधारित मनुष्य के चरित्र का दपण है। इसने द्वारा हम यह दगन है कि अमुके व्यक्ति मानस्य में क्या है। वितन गहर पानी में है।

यान यह है कि मनुष्य के स्वभाव में, मन में तथा चरित्र में जो भी भानियाँ भनी-भुरी प्रवृत्तियाँ प्रपान होती हैं वे मनुष्य की प्रियक क्रिया पर अपना प्रभाव अपना छाया डालता है। जोषी अथवा अज्ञान प्रवृत्ति का मनुष्य जिस क्रिया प्रनार में चलता लिखता है अथवा विषय हाव भाव में वान चित्र करता है उनी प्रनार वह विषय ढग से विषय चिह्नों टा-नों पुमाव बि-भ्रों मानात्रा द्वारा लिखता भा है। उगछा अन करण उी बाध्य करता है कि वह अपनी हस्तलिपि में

अपनी विनोयता की छाप लगा दे। इस प्रकार से भिन्न भिन्न मानसिक अवस्था में लिखे गए पत्रों को देखते हुए एक ही प्रकार के चरित्र-गुण वाले भिन्न भिन्न व्यक्तियों की लिपि को देखते हुए इस विद्या को वैज्ञानिक रूप मिलता है और हम विवासपूर्वक कह सकते हैं कि अमुक प्रकार की लेखन गयी वाला व्यक्ति अमुक प्रकार की मानसिक विनोयता रखता है। अमुक प्रकार का आचरण करता है। उदाहरण के लिए कह सकते हैं कि विभिन्न प्रकार के व्यक्ति जैसे कि आत्म निर्भर व्यक्ति उत्साही व्यक्ति लोभी तथा कायर व्यक्ति चंचल व्यक्ति अपनी विभिन्न लिखावटें लिखते हैं। इन लिखावटों पर उनकी सामयिक एवं मानसिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। जसा कि भय घबराहट क्रोध दुःख निराशा आदि उत्तजना की अवस्था में लिखी गई पत्रिका तथा अक्षर अपने स्वभाव के अनुरूप विभिन्नता प्रदर्शित कर देते हैं। जो मनुष्य स्वभाव से गम्भीर और स्थिर चित्त है उसे अपने उत्तजना जनित आवग तथा घबराहट को रोक लेने की आदत होती है। उसे अपने मन पर अधिकार होता है। उसकी आत्मशक्ति दब होती है। परिस्थितियाँ उस हिला नहीं सकती। अतः लेखनी भी उसके अधिकार में चलती है। उसके बनाए हुए अक्षर स्थिर रहते हैं। कारण क्या है? उसके भावुकता के आवेग से उसकी आत्मशक्ति की मात्रा बहुत अधिक बचती होती है। भावुकता में मनुष्य क्या नहीं दे डालता क्या त्याग नहीं कर देता है? तो क्या वही व्यक्ति लेखनी चलते समय स्याही अथवा स्थान की कजूसी करेगा? उसकी लेखनी में स्याही उसकी भावुकता के प्रवाह की तरह प्रचर मात्रा में बहना स्वाभाविक ही है। भावुकता प्रधान व्यक्ति की लिखावट में परिवर्तनशीलता की मात्रा अधिक पाई जाती है। इसमें आत्म निर्माण की शक्ति निबल रहती है। आध्यात्मिक बर्तित वाला व्यक्ति अपने मन को अपने विचारों को ऊपर अन्त की ओर उठाने का प्रयत्न करता है। इसलिए जब वह लिखता है तब उसके अक्षरों का ऊपरी भाग अधिक स्पष्ट और उन्नत होता है। अपने आपका कुछ विनोय महत्वपूर्ण समझने वाले व्यक्ति अपनी बात को असाधारण और आवश्यक जोर देकर कहता अथवा दोहराता है। कारण यह है कि उसका अन्तर्भूत अपनी दुर्बलता को जानता है कि उसकी बात को साधारण ढंग से वह महत्त्व नहीं मिलेगा जो कि वह प्राप्त करना चाहता है। इसमें आत्म विवास की कमी है। यह व्यक्ति जब स्थिरता है अथवा अपने हस्ताक्षर करता है तो उसके नीचे स्थान पर विनोय दबाव देकर एक रेखा अथवा एक से अधिक रेखाएँ साच देता है। ऐसा कार्य अथ व्यक्ति बड़े आकार के अक्षर बनाता है। दखा गया है कि अधिकतर ऐसे व्यक्ति अपने अक्षर बड़े आकार के तथा अस्पष्ट बना देते हैं। ये आचरण किसी प्रकार की विनोयता के चिह्न बनाने के लिए होते हैं जिसमें पाठकों का ध्यान उनकी ओर विनोय रूप से आकर्षित हो सके। मानो यह चिह्न देकर कहना है कि देखिए श्रीमानजी मैं हूँ। मैं यहाँ हूँ मुझ भी देलिए।

मेरे महत्त्व की ओर ध्यान दीजिए। इस तरह मैं हम दायने हैं कि जिखावट मनुष्य की एक ऐसी क्रिया है जिस पर उसकी मानसिक अवस्था का तुरन्त स्पष्ट एक गुढ़ प्रभाव पड़ता रहता है।

इस प्रकार के मनावानिक दृष्टिकोण से इस विषय का अध्ययन तथा गुढ़ वानिक आधार तयार होना ॥ जिस पर मैं नहीं किया जा सकता। मनुष्य के व्यक्तिगत मूल्यमान उसकी वास्तविक पहचान करने का सबसे अच्छा और मही माध्यम उसकी जिखावट ही है। मनुष्य अपना काम निभालने के लिए एक बार अपना भाषा वाणी हाव भाव मुख चेष्टा आदि के सममानुष नाटकीय बनाकर आपको धाने में डाल सकता है। परन्तु अपनी जिखावट में वह अपने अन्तःकरण की अज्ञान प्रेरणाओं का स्पष्ट होना से नहीं रोक सकता है। हमने पहचान हाती है कि जिम्मेदार व्यक्ति किम प्रकार का व्यक्ति है। कितने गहरा पानी में है।

आज मैं प्रायः ८० वर्ष पूर्व प्राप्त की प्रसिद्ध इतिहासकार पादरी मिश्री ने इस विद्या की गोज की थी और इस विषय के अध्ययन की नींव डाली थी। उन्होंने बहुत से प्रयोग किए थे। उनके आधार पर हस्तलिपि विज्ञान के अनेक मूल तथ्यों का निर्माण किया था। तदुपरान्त हम से कल्पित तथ्य प्रामाणिक आधार को प्राप्त कर सके। अतः अनेक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की बमौटी पर चले नहीं टहर सके। पादरी मिश्री के बाद यूरोप के अनेक विज्ञान विभिन्न परिस्थितियों में इसकी छानबीन के प्रयोग करते रहे। हममें अनेक दृष्टिकोण जम कि शरीर शास्त्र, मनाविज्ञान गणित ज्ञान गणित गिणु विज्ञान गणित आदि सम्मिलित हो गए थे।

सन् १८६५ से १९२० तक पास जमना, इटली स्विटजरलैंड के आस्ट्रिया में इस विषय पर बड़े-बड़े गम्भीर अनुसंधान होत रहे। गिणु विज्ञान के विषय डाक्टर प्रायः मनाविज्ञान के डाक्टर मायः दानिक डाक्टर क्लॉस के द्वारा इस विषय की नींव पड़वत और विधिवत् हाती गई। तदुपरान्त डाक्टर राबर्ट मोडक और हन्स हवावी ने भी इस क्षेत्र में विविध काम किया है। आज दिन भी जिखावट एडन हैरी आ टेलार एरिफ गिगर आदि बहुत से यूरोप और अमरीका के महान् विज्ञान हमन प्रकार और प्रकार के काम में लग हुए हैं।

इस विज्ञान का सबसे अधिक प्रचार जमनी में हुआ। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व हीन हैम्बर्ग का नाम स्मूनिक् स्पेसिफिक आदि अनेक महाविद्यालयों में इस विद्या की गिणा होने लगी थी। जो युद्ध के काल में गेम्टापो के विविध कारणों से बन्द कर दी गई थी। युद्ध के उपरान्त पुनः इसका पठन-पाठन वहीं प्रारम्भ हो चुका है। बर्माइ इगवा उपयोग समान तथा राजनीति ब्रुडुम्ब तथा आ के प्रत्येक अंग में होता है। इसलिए जमना में इसे अपना उन्नति और राजनीति का विविष्ट अंग बनाया। यही कारण है कि जमन अपने समयकारियों के विविष्ट चुनाव में इतन मग्न रहत है। जमनी ॥ उद्युक्त समयारी का चुनाव बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।



करने का प्रयास करता है और दूसरी तरफ अपने भाग्य का कोमल म लगा रहता है। कभी वह गेहूँ की आर्थिक दशा को भग-बुरा कहता है और कभी रा-प्रणाली एवं उसके कणधारों में तप निराशा रहता है। उसका जीवन किसी प्रकार से चलीता होता जाता है।

पश्चिमी यूरोप के देश और अमेरिका में इस विज्ञान का प्रयोग अपराध की छानबीन और अपराधी प्रवृत्ति का सुधार के काम में भी किया है और जहाँ-जहाँ इसको अवसर मिला है उसे सफलता मिली है।

‘यायप्रियता’ उत्तरदायित्व आत्मसम्मान की भावना एवं निश्चय उत्पन्न करने सहयोगिता और धन व्यय स्वस्थ लक्षण और इसके विपरीत कष्ट-मत्सरता आडम्बर कायरता इत्यादि हीन लक्षण प्रायः मानव समाज में ऐसे साधारण अपितु ‘यायक’ लक्षण हैं जो व्यक्तिगत आचरण का संचालन करते हैं। परन्तु बहुधा यह मुख्य और आवश्यक लक्षण होने हुए भी तब तक अपने यथाय-रूप और मात्रा में दृष्टिगोचर नहीं होते जब तक व्यक्तिगत स्वभाव का गगनार और बहुत समय तक सम्भारतापूर्वक अध्ययन न किया जाए। ये स्वस्थ अथवा हीन लक्षण आचरण के द्वारा ही दृष्टिगोचर होते हैं। हस्तलिपि व्यक्तिगत आचरण का छपा हुआ रिवाज है। ‘ताजमाए’ खार छपा जाता है उस मिट्टाना जयवा-बन्ना सम्भव नहीं हो सकती और इसको समय समय पर पुनः निरीक्षण के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है।

हस्तलिपि विज्ञान नूतन अवश्य है परन्तु अनुसंधान और प्रयोग के क्षेत्रों में यह अपनी उपयोगिता पूर्णतया और बार-बार सिद्ध कर चुका है। पिछले महा-युद्ध में अमेरिका का सरकार ने अपनी सेना के लिए विश्वस्त पत्राधिकारियों का चुनाव और उनकी नियुक्ति जमे-कठिन कार्य का पूर्ति के लिए इस विद्या को महत्व पूर्ण स्थान दिया था।

हस्तलिपि द्वारा उच्च पत्राधिकारी अपने विभागों में नौकरी के लिए चुन जाने का अभिनया की उपयोगिता या अनुपयोगिता जान सकते हैं। सरकारी नौकरी में उत्तरदायित्व का बहुत ऊँचा स्थान है और बौद्ध सा व्यक्ति जिस स्थान के लिए उपयुक्त है वह बहुत बड़ा प्रश्न है यदि मनुष्य के व्यक्तित्व के महत्व का सम्बन्ध उसका कार्य से है। इस प्रश्न का हल करने का अभी तक कोई विवशनीय साधन नहीं है। यदि सही आत्मा सही पत्र पर नियुक्त हो सके तो हमारी बहुत सी समस्याएँ जिनके कारण जीवन कठिन हो रहा है सुलझ जाएँ। हस्तलिपि-विज्ञान हम क्षमता में भा-सृष्टा का हाथ बटान के लिए तैयार है।

## हस्तलिपि और व्यक्तित्व

### लिखावट में मौलिकता

हस्तलिपि या लिखावट व्यक्तित्व का माया सम्बन्ध है और हम मनुष्य का अनुभव हम सब निरूपित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की लिखावट का एक अपना निराला रूप होता है। हमारी मनुष्यता का यह है कि सब लिखने वाले की लिखावट अलग अलग पचानी पड़ती है। उदाहरण के लिए वह मनुष्य है कि जमीन पर लिखावट है यथा आपकी लिखावट नहीं है। जमा में लिखना ही क्या बरत में ही लिख मकाना है। जमा आप लिखते हैं यथा वस्तु आप ही लिखते हैं।

लिखावट का हम मौलिकता का हम भग्न भीति और महज भी पहचान गत है। यह पहचान दत्तता का सम्बन्ध है जिनकी कि लिखा भी परिचित व्यक्ति का आदृष्टि में उमरा पहचान गता। परिचित व्यक्ति अपने स्वयं का ही एक ही अर्थ आरम्भणा का भी पहचान जान है। परन्तु इस प्रकार के व्यक्तित्व का वास्तविक स्थापित नहीं है यह प्रकार के व्यक्तित्व व्यक्तित्व के व्यवहार का अर्थ अन्तर्गत व्यक्तित्व व्यक्तित्वों में भी मिली एक का भी कोई स्थायी मान प्रमाण तथा प्रमाण नहीं है। यह व्यक्ति इस प्रकार नहीं मान जा मकर। परन्तु लिखावट इन मनुष्य भिन्न है। यह लिखावट का व्यक्तित्व का एक अन्तर है। एसा ही व्यक्तित्व व्यक्तित्व है जमा कि उमरा स्वयं वस्तु लिखने का निजा हम आति। परन्तु हमम एव लिखना है यह है हमका बिना और बिना वस्तु स्थापित। जो लिखा है सामन है। हमम मनुष्य का लिखावट वस्तु व्यक्तित्व का स्पष्ट व्यक्तित्व है और हमका वस्तु लिखा है। हमम वस्तु पर निगमन उदाहरण एक प्रमाण के लिए य अन्तर्गत व्यक्तित्व व्यक्तित्वों में मिली वस्तु है। यह वस्तु पचनी जा मकरा है। जमा लिखा व्यक्तित्व की अन्तर्गत पचनी जाता है। उदाहरण के लिए वह वस्तु है कि जमा

आपके पास कोई पत्र आता है तो रिफाफ व ऊपर लिखे हुए पत्र की लिखावट से हा पत्र लिखने वाले का पहचान हो जाता है यदि उस व्यक्ति का लिखावट म परिचिन होत हैं ।

एक व ता व विद्यार्थी अपने सहपाठी अन्य विद्यार्थियों की लिखावटें पहचानत हैं । व सत्र अपन अध्यापका का लिखावटें पहचानत हैं । अध्यापक-गण भी अपनी कक्षा व सब विद्यार्थियों की लिखावट पहचानत है । आप अपन साथ म काम करन बाग की लिखावट पहचानते है और किसी समय भा उनम स किसी एर को दगने ही कह उठते हैं कि यह अमुक व्यक्ति न लिखी है । उस तरह म हमारा विस्वास कर लन का अवसर प्राप्त होता है कि सब लिखन बाग का लिखावट अपना निजी मौलिकता रखता हैं और लिखावट का उमक लिखने बागे स कतना सीधा सम्बन्ध है कि ज्ञाना का एक ही मान उन म हमारा किसी प्रकार की कठिनाई नहा जाना ।

उम प्रसंग म एक और सक्न असगत प्रमान नहा जाना । राजकाय म्तर पर भी लिखावट की मौलिकता को मायना प्राप्त है । बहुधा स्थान प्राप्ति व लिए आवन्त-पत्र जासूफ की अपनी लिखावट म ही भगाए जाने हैं । अतः आवश्यक रूप हस्तलिपि म ही लिख जात हैं । और किसी भी स्थान पर जहाँ व्यक्तिगत अधिकार का प्राथमिकता देना आवश्यक है अपने हाम से ही हस्ताक्षर करना पडता है । वका म पास्ट आफिस तथा कचहरिया म जहा कहा भी किमा प्रकार का पैत देन जाना है वहाँ निजा हस्ताक्षर का स्थिरता का विनाप मन्व लिया जाना है ।

लिखावट व विषय मये सामान्य विचार हैं । जमाकि हम सत्र अपने परमायी जीवन म तथा परम्पर-व्यवहार म निय ही देखते हैं अनुभव करत हैं तथा उनका मानन ना हैं । लिखावट मन्व की उम प्रकार व अनेक उदाहरण हम मिलत हैं तथा व प्रमनु भा किए जा सकत हैं । परन्तु कानिज व लिए इतना पयाप्त नही है । जो सजता है कि यह विचार मन्सरी तीर पर सामने जाए हैं । मन्व मन्व व्यक्तिता का अभिगच्छि म तथा गुणलाप निरूपक सामान्यता की दृष्टि म उम प्रकार की गता लपन हा मन्वनी है और यह यादयुक्त भा है जत्र तत्र हम उमरे समयन म पर्याप्त निश्चित प्रमाण नहा मिल जाण । घन्त-मा बातें या म्भार मत म उपन जाना है व हमारा उपनता व कारण भी हो सक्ती ह । म्भार मानमिक पण्डित्वता यत्ता है कि किसी भी धारणा का मान उन स पहल उमक विषय म पयाप्त छानबीन हा जाए और उमक वमयुक्त प्रमाण मिल जाए ।

अन वैज्ञानिक पडति मानन बाग प्रभावान विचारका न उम विषय पर अनक तथा विभिन्न तरह क प्रभाव किए और यह मिद्ध किया कि लिखावट की मौलिकता का कल्पना निराधार नहा है । उमर अनेक स्पष्ट जाधार है ।

विश्रामान लिखावट का मौलिकता व भूतनत्वा का पथकरण किया और जमा मन्विका का लिखावट व चिह्न का मिज्ञान करक मेव किया कि कोई

भी तो लिखावटें पूर्णरूप से समान नहीं हैं।

इससे यह हम्मलिपि विनान के जो अनव विभाषा व्याप्ति प्राप्त कर चुके हैं उनमें से हमें 'तारा' का नाम अप्रगण्य है। इन्होंने अपनी पुस्तक में अपने सम्बन्धी प्रयोग का बतलाना ही मेहनत बतलाना दिया है। यह सिद्ध है हम्मलिपि विनान इस मूल सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक अवैली लिखावट अपना निजी अनाबी मौलिक विलक्षणता रखती है। यह भी मान लिया जा चला है कि हम्मलिपि पर लिखने के साधन जिन कि लिखने का नवानता का प्रभाव पड़ता है। विविध भाषाओं के अक्षरों के लिखित स्थायी आकार आकार विभिन्न होते हैं। अतः इनकी भी लिखावट की बनावट पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु हम्मलिपि विनान का यह अधिकतम बतलाना है कि हम्मलिपि की ऐसी मौलिक विविधता का मुख्य मूलभूत कारण लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व की विशिष्टता और अनुकरण है।

तथापि प्रश्न यह उठता है कि लिखावट बनाने वाले तत्त्व क्या इनकी अधिकतर सत्यता में हैं कि उनमें अनव सयोगों में बने हुए लिखावटों के अनव उदाहरण एक दूसरे से पूर्णतः विभिन्न एवं मौलिक हो जाते हैं।

इस प्रकार की कठिनाई का मुद्दाना के लिए समस्या का साधारण रूप से ही परामर्श किया जा सकता है। इन समस्या का निराकरण करने में मुख्य प्रश्न यह पता है कि हम्मलिपि के विभिन्न चिह्नों की बनावट के अधिक-से-अधिक विभिन्न रूपों में प्रचार हो सकते हैं ?

ऐसा परामर्श करने के लिए निम्नलिखित विधि अपनाई गई था —

हम भी एक लिखावट लिखे गए जिन पर पता लिखा हुआ था। उन लिखावटों

पर 'W C I' के अक्षरों 1 अक्षर का लिखा गया था। यह एक मात्र अक्षर लिखा गया था। यह पुस्तक के लिखावटों के उदाहरण सख्या (१) और (२) में प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार से हम हम्मलिपि या एक अक्षर लिखने पर दो भी विभिन्न नमूने मिल जाते हैं। पाठक इन चिह्नों का सावधानी से निरीक्षण कर सकते हैं। हमारी बनावट का एक-दूसरे से मिलान कर सकते हैं। मुराबका कर सकते हैं। ऐसा करने में उन्हें पता चला कि बाई भी दो चिह्नों पूर्णतः एक-दूसरे में नहीं मिलते तथा उनमें समानता भी नहीं मिलती। (हमें यह कह देना आवश्यक है कि लिखावट पर से लिखे गए ये अनव चिह्न अपनी विशेषता के आधार पर नहीं मिल सकते हैं। यह महत्व तथा स्वाभाविक रूप में आया था परन्तु पर से ही पाठक परामर्श किए गए थे।)

अतः इस प्रकार के अनव उदाहरणों का निरीक्षण आत्मनय में रोचक एवं रचनात्मक है। इन दो भी चिह्नों की बनावट में जो विविधता है उसमें स्पष्ट होना है कि इस प्रकार का बाई भी एक चिह्न अनव प्रकार में बन सकता है। यह चिह्न प्रभावित है अपनी शक्ति से चौड़ाई में लिखावट के शुरुआत में लगना के

ग्राह्य हस्ता और अय्य ग्लाना से। कुछ चिह्न भाले का तरह ऊपर मात्र और नीचे की तरफ पतलुवन है। कुछ चिह्न नाच आवाज रंगा का तरह आन हूए मात्र हा जात हैं। कुछ हिरत गुने हैं कुछ ग्लानी क सम दगाव से प्रभावित हैं। कुछ चिह्न सुगम तथा काम्य हैं। कुछ मात्र तथा वनी ह। कुछ महज सरत ग्लानी की गति से वन है। कुछ ज रा की परिधि रेखाए स्पष्ट एवं उपयुक्त हैं। कुछ अक्षर अस्पष्ट पट्ट हुए और भद्दे हैं। कुछ अक्षर दाइ और अम्बा वाइ और एक कुलावत्तर जस चिह्न से प्रभावित हाने हैं। कुछ अक्षर का अंतिम रेखा का बुगारत्तर जस चिह्न से अंत हाना है। कनिषय अक्षर न जाति तथा अंत म कुछ अनिरिक्त रखाए जुनी हई हैं जो कि यथ हैं। कुछ अक्षर का सकार स्थिर एक सा है। कुछ अक्षर अपने झकाव म बार बार बल रह हैं। कुछ अक्षर सीधे हैं। दूसरे हिरतो हू गहरियात्तर रेखा जा म हैं। कुछ ज रा की रेखाए नागत्तर हैं। दूसरे अक्षर मिट हुए हैं। कुछ अक्षर बीच बीच म टट हुए हैं अथवा सभागे गए हैं। कुछ अय अक्षर पुन लिखे जान के कारण बाट म ठीक न्यि गए हैं साध गए हैं। इस प्रकार के विवरण से विन्ति होना है कि ग्लानावट व चिह्ना के बहुत म गण है जो कि इस प्रयोग क २०० ग्लाना म मौलिक हप म अलग-अलग मिन्ते हैं। इस विवरण से यह सक्त भी मिन्ता है कि इस प्रकार की विभिन्न अनोयी मौलिकता से प्राप्त योग म भी जितना अनगणित अनुगपन मिन् जाता है। कितन प्रकार का विविध ग्लानावटें मिलेंगा इसका गणित करने के लिए कई प्रकार से इन विविध ग्लाना का गुणन करते रन्ना पड़ेगा।

समय-समय पर मैंने अनेक यकनिया से पता ग्लान का प्रयास किया है कि उनका समझ म अनेक प्रकार के लिखने क कितन अधिक ग्लान हो सकते हैं। कुछ गला का कहना है कि य एक सौ से भी कम हाय। बहुत हा थोड विचारक हैं जो कि इस प्रकार का विविधता आ की सम्या हजार तर सम्भावित कहत हैं। वचन एक ही व्यक्ति एसा था जिसने अपनी कल्पना पचास हजार तक पहुचा दी था। कुछ वप पहु मरे मित्र एवं सहयागी जूस त्रपू जामित न भी इसी प्रकार का प्रयाग किया था और बताया था कि उह एन भा एसा व्यक्ति महा मिन् जिमन ग्लानावट क प्रकारा की सम्या दम हजार से आग कल्पना का हा।

मैं यह समस्या अपन उत्कटित पात्रा की त्रियागता पर हा छोन्ता ह। उहें पट जानन के लिए ग्लान क विविध कोणा का सम्या का अक्षर की विविध ग्लान विविध चोन्त म ग्लानी क दगाव व ज रा का परिधिया म अनिरिक्त चिह्न एवं अनगणक प्रारम्भिक उतार चगाव एवं अन्त क बुगारा क गगाव म तथा रंगा आ क उतार चगाव से गणन करने रन्ना पड़ेगा।

अन इस प्रकार क प्रयाग विचारणा पात्रा जा कि हस्तलिपि विज्ञान का वतानिकता म प्रवण करना चाह्य ह अपन समय क अनुभव गारा प्राप्त कर

सकत हैं । १

## लिखावट में परिवर्तनशीलता

लिखावट बढती रहता है। प्रत्येक व्यक्ति जबकि एक तरफ अपनी मौलिक लिखावट लिखता है तभीतर उस समय-भ्रम पर बढता भी होता है। बढ लोग तो कई बार अपनी लिखावट बदल देते हैं और स्वयं भी उसको पहचानन में लिखावट का अनुभव करते हैं।

वास्तव में यह कहना उचित नहीं है कि लिखने वाला अपनी लिखावट बदल देता है। यह कहना अधिक सही होगा कि इन व्यक्तियों की लिखावट समय-समय पर बदलती रहती है। यह परिवर्तन लिखक की सामयिक मानसिक अवस्था में अनुसर होता है। कभी आप जल्दी में हैं और घसीट कर लिख देते हैं। कभी आपकी मानसिक अवस्था अनिश्चितता की उलझन में है उस समय लिखनी निश्चित रूप से आगे बढ़ने में असमर्थ होती है। ऐसा दशा में लिखावट अस्थिर रहती है। जगह-जगह पर अंगुठियाँ होती हैं। लिखनी रुकती है बाल-छाँट होती है और कागज पर एक ऐसा उलझा हुआ चित्र बनता है जिससे कोई भी निश्चित निष्कर्ष निकालना संभव नहीं होता।

अतः हम यह कहते हैं कि लिखक का मानसिक अवस्था का प्रभाव लिखावट पर रहता है और एक का अवस्था में परिवर्तन दूसरा अवस्था को प्रभावित करता है। मानसिक अवस्था का सम्बन्ध व्यक्तिगत स्वभाव तथा चरित्र की गति में भी है। इसलिए यह कहना भी असंगत नहीं होगा कि लिखावट में परिवर्तनशीलता व्यक्तिगत स्वभाव एवं चरित्र गति में सम्बन्धित है।

क्या कहें हैं कि लिखावट लिखने के भौतिक माध्यम पर निर्भर रहती है, जग रोज के प्रयोग में आने वाली लिखनी कागज में बटन की गला प्रकाश आदि। यदि भौतिक परिस्थितियाँ एक लिखक के माध्यम पूर्ववत् रहें तो संभव है कि लिखावट अपने पूर्व रूप का तरह-ही बनी रहगी और उसमें परिवर्तन नहीं आएगा। यह सही है कि जब आपका सड़ होकर बचका अपरिचित लिखनी में अथवा लिखनी हुई लिखावट के लिख में बदल लिखनी पड़गा तो निश्चय ही आपका लिखावट में परिवर्तन आ जाएगा। संभव है कि निम्न लिखनी बाग में लिखनी हुई लिखावट में बदल लिखनी होना नही बनगा। परन्तु अनुभव में यह दशा गयी है कि लोग अपनी गहरी भौतिक सुगमता में लिखनी हुए भी लिखनी हुई लिखावट लिखावट हैं और यह मानते हैं कि मानसिक परिस्थिति का प्रभाव लिखावट का बनावट पर भौतिक परिस्थिति में अधिक है। समान लिखनी-गुविद्या होना हुए भी लिखावट में परिवर्तन मानसिक अवस्था में परिवर्तन आने के कारण में ही होता जाता है।

१ लिखनी परिस्थिति ३।

स्वाभाविक मानसिक अवस्था का सतुल्य त्रिगुण म त्रिधावत् म परिवर्तन आता है। स्थिरता जानी रहता है। जब चित्त स्थिर नहा जाता तो मन की ग्रहण करने वाले और उसको संचालन करने वाले स्नायु भी स्थिर नहा रह पाते। इस प्रकार की परिस्थिति का उदाहरण हमन ऊपर दिया है जबकि हम जन्म म घमोन् स्थित हैं जयवा अनिश्चिन्ता का परिस्थिति में जटक जटक कर लिखत हैं। खद काध आग्रह डर की अवस्था म मन अपनी स्वाभाविक गति प्राप्त नहा करती। अनिश्चित मन निश्चिन्त कायक्रम पर नहा चला। इस प्रकार क विचारों का जनमवा को लेकर हस्तलिपि विज्ञान का विभाजन आग बना है और विज्ञान वाले व्यक्ति की मानसिक अवस्था म परिवर्तनशीलता क तथ्य एव उसकी मात्रा की जाच करता है।

बच्च बुद्धि वाले व्यक्ति का स्वभाव म परिवर्तनशीलता स्वाभाविक है। उनके मन की चंचलता की मात्रा क समान ही उनकी त्रिधावत् म भी चंचलता रहती है। जस छोटे बच्चे जस बच्चे से मन बढत है तो अनेक प्रकार क अन्तर बनाने है। उनकी त्रिधावत् स्थिर होने लगा है। मन मन जस उनम गभारता स्थिरता एकाग्रचित्त हान का वृत्तिमा पुष्ट हान गनी हैं यह संचार कुछ बच्चा म जल्दी होन लगता है और दूसरा म कुछ दर स धीरे धीरे जाता है। प्रखर बुद्धि वाले बच्चे जल्दी ही अपनी स्वभावसिद्ध मानसिक चंचलता पर काबू पा लेत हैं।

दस विचार वाले व्यक्ति म इस प्रकार की चंचलता का अभाव रहना है। उनका व्यवहार जाचार विचार स्थिर रहता है, जिसम अस्थिरता का स्थान नहा मिलता। एमे व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करत है। अपनी विचारधारा तथा कायक्षमता म विचरित नहा हात। वे भावुकता क आग्रह म बह नहा जाते। एस व्यक्ति अपने निजी चरित्रवत् स अपनी मानसिक तथा शारीरिक परिस्थितिया अपन अधिकार म रखत हैं।

एमे व्यक्ति जिस परिस्थिति म भा लिखत हैं स्पष्ट और स्थिर लिखत हैं। एमे भी योग हैं जो बच्ची स्त्री रेलगाडिया म नित्य ही लिखत है। यह डाका दिन चया है और यदि व स्थिर और स्पष्ट त्रिधावत् न लिख तो उनका काम ही नहीं चल सकता जस रेलगाडिया क गाँव। चाहे भौतिक परिस्थिति अनेकू हा अथवा प्रतिकूल रेलगाडिया क गाँव का अपना मानसिक परिस्थिति इतना स्पष्ट करनी पता है कि वह अपना यात्रा का ठायरी स्पष्ट रूप स लिखता चला जाए और उमका उच्च अधिकारी जब चाहे उमका स्पष्ट रूप म निरीक्षण एव अवरोधन कर सक। चला स्त्री रेलगाडिया म बढकर विज्ञान म अपन शरीर एवं हाथ को सम तरह स समझना पता है कि जिसस वह कम-स कम हि।

एकाग्रचित्त म विज्ञा भी कायक्रम म ग रहन क लिए आवश्यक है कि भावुकताप्रधान आग्रह पर अधिकार पा लिया जाय। यह कथन त्रिधावत् क लिए

उनका हा सय है जिनका कि किसी दूसरे कायक्रम व गिए।

परिवर्तनशीलता शिवावट का एक अत्याज्य लक्षण है परन्तु मौलिकता शिवावट का सर्वप्रथम लक्षण है। समय समय पर सबकी शिवावट परिवर्तन प्रदर्शित करती है कोई कम कोई अधिक परन्तु किसी भी हालत में इतना नहीं बदल जाती कि उसको पहचाना न जा सके। यह परिवर्तन इतना अधिक नहीं होता कि वह अपने मौलिक रूप को खो दे। शिवावटें बदलने पर भी पहचाना जाती हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो उसका मौलिकता का पहला लक्षण जो कि स्थिरता है स्थिर न रहेगा।

शिवावट में परिवर्तन होत हुए भी मौलिकता बनी रहने का कारण है शिवावट का भौतिक अणु को बनाकर जम कि सीधी रखाए कोण गोलाकार रखाए मात्राए एक बिंदु आदि। इनमें से कुछ ऐसा है जिन पर परिवर्तन का प्रभाव कुछ कम होता है और दूसरे ऐसे होते हैं जिनसे प्रभाव से ही बदलने लगते हैं। इनमें से कौन से स्थिर हैं अथवा कौन से अस्थिर हैं ये अपनी-अपनी निजी शिवावटों की बनावट में सम्बंध रखते हैं। शिवावट में परिवर्तनशीलता एक छाया के समान है, जो समय-समय पर शिवावट का रूप प्रभावित करता है। हम भी मूल शिवावट का प्रभावित नहीं कर पाते। हम विषय में दूसरा ध्यान यह भी है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव में कुछ कम लक्षण होते हैं कि जो विभिन्न परिस्थितियों में समान रूप में स्थिर रहते हैं। दूसरे कुछ लक्षण समय तथा परिस्थिति के अनुसार प्रभावित होते रहते हैं। यह मनुष्य की उस बलि की ओर मन्नत करना है जिसमें वह समय तथा परिस्थिति के अनुसार अपना व्यवहार करता है। नई परिस्थिति में रहना तथा उसमें लाभ उठाना मांगता है। परन्तु अपने आपका हिमा भी परिस्थिति में ना ना होता है। अपना निजी व्यक्ति बनावट रखता है। ये उत्तर व्यक्ति के लक्षण के जो मंगल हो रहे हैं। ये उसका स्थायी स्तम्भ हैं। हम ध्यान का स्पष्ट छाया हम शिवावट का बनावट में मिली है जिसमें हम मानने में बर्ताई नहीं होती कि शिवावट एक ही मानसिक परिस्थिति या अनुकरण करती है। और यह उनका हा उदाहरण मन्त्रपाही तथा लाला है जिनका कि उनका शिवावट बाल व्यक्ति का अपना निजी व्यक्ति बनावट है।

गुरु और समाधान—शिवावट में मौलिकता का विवरण करने हुए दो प्रश्न हमारे सामने आते हैं जिनसे धारा-मुक्त प्रतीत होते हैं।

(अ) शिवावट की आसताओ—जिसे दूसरे व्यक्ति का मौलिक शिवावट बदलना जायाजा है। यह कानून के विरुद्ध है और एर स्टाइल अपराध ना हो सकता है।

हस्तलिपि विद्या के विषय में यह प्रश्न उठता है कि जब शिवावट का इतना सारा मन्त्र की जा सकती है कि एक व्यक्ति जिसे दूसरे व्यक्ति का



लिखावट लक्षणों एक भी बना दे ता उसमें मौखिकता को जोकि लिखावट का प्रारम्भिक तथ्य है श्रृष्टता कहा रहा ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हम लिखावट की मूल रचना का विवचन करना पड़ेगा। साधारण मौखिक लिखावट की रचना में अपनी स्वतन्त्र गति स चरती जानी है। इसमें स्वच्छता है और गति भी है। परन्तु गढ़ी हुई लिखावट की रचना में परिस्थिति विपरीत होती है। उसमें न स्वच्छता है और न गति है। यह चिह्न प्रतिचिह्न सावधानी से गनी जानी है। ऐसी लिखावट को हम लिखा घट नहीं कह सकते।

लिखावट गढ़न बाग्य यवित जिम लिखावट की नक़्क़ करता है उसके प्रत्येक चिह्न को वह सावधानी से और अन्य जलग बनाता है। इसमें अपनी चित्र बन बहुत धीरे धार और सावधानी से धार धार उठा-उठाकर धराई जाती है। इस लिखावट को बहुत सावधानी से तथा बहण-यत्र (आतमी गीणा) से अथवा अन्य बज्ञानिक विधि से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि लिखावट गनी गई है। गढ़ी हुई जालसाजी की लिखावट सुरत पहचानी जानी है। अतः इस लिखावट में जालसाजी किये जान के कारण लिखावट के मौखिक तथ्य की श्रृष्टता में कमी नहीं आती। व्यक्तिगत लिखावट से तात्पर्य स्वच्छ एवं गतिमाल लिखावट से है। इसमें अविच्छिन्नता का प्रवाह रहता है। यह लिखावट अनिवार्य रूप से मौखिक होती है अतः हम स्वयं देख सकते हैं कि लिखावट का प्रथम तथ्य श्रृष्ट है और इसमें किसी भी प्रकार का गमायुक्त प्रश्न नहीं उठता।

वास्तव में हस्तलिपि विज्ञान लिखावट की जालसाजी की जाँच के माय से कही आया हुआ है। इससे जालसाजी करने वाले यरित के व्यक्तिगत लक्षण तथा जालसाजी करने के प्रयोजन तक का पता लगाना सम्भव हो सका है।

(ब) लिखावट की परिवर्तनशीलता के विषय में—हस्तलिपि विज्ञान के माध्यम से शरित निर्धारण करने के विषय में बहुधा एक प्रश्न और सामने आता रहता है। ऐसा कहते हैं कि लिखावट बग़नी रहती है। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि वे अपना लिखावट विभिन्न प्रकार से लिख सकते हैं। फिर ऐसी लिखावट में मनावज्ञानिक विवर्णन कस किया जा सकता है और उनसे निर्धारित शरिता के किम प्रकार में विवर्णनीय मान गना सम्भव है।

वास्तव में यह प्रश्न हस्तलिपि विज्ञान के मूल तत्त्वा की पुष्ट करना है जमा कि हम लिखावट के विषय में यह कह सकते हैं।

फिर लिखावट में यदि स्वाभाविक परिवर्तनशीलता का लक्षण न हो तो मनावज्ञानिक धानबान के लिए माध्यम हो न मित। परिवर्तनशीलता में ही मानव का चरन अवस्था का चरन है उसका जड़ता में नग। जिम प्रकार से व्यक्तिगत मानव चरता है मानता है विचार करता है आचरण और परस्पर-व्यवहार

करता है उसी प्रकार से उसकी लिखावट समग्र एवं परिस्थिति व अनुरूप प्रतीत  
हानी रहती है।

## लिखावट का भौतिक आधार

प्रत्येक भाषा का लिखित रूप होता है। जैसे अंग्रेजी भाषा रोमन अक्षरों  
में लिखी जाती है। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। मराठी भाषा  
भा देवनागरी में ही है। गुजराती भाषा भी देवनागरी से मिलती जुलती है।  
बंगला व अरबी भी बहुत कुछ इसी आधार पर मान जा सकते हैं।

अतः मध्य लिखित भाषाओं में बहुत-सी बातें समान हैं। जैसे वाइ और स  
दाइ और वा लिखना मात्राएँ लगाना अक्षरों को मिलाना अनुस्वार विराम,  
अधविराम आदि का प्रयोग करना।

लिखना सीखने के लिए इन भाषाओं का अपना एक निजी रूप है। स्थायी  
आधार है। अक्षरों के तथा मात्राओं आदि के निश्चित रूप है। ये स्थायी आकार  
छोटी बक्ष्ताओं के विद्यार्थियों के निश्चिन्त के लिए उदाहरण के रूप में कापियाँ में  
रूपे हुए आते हैं। अध्यापकगण बहुधा बच्चा को इन कापियाँ पर ही मुद्रित का  
अभ्यास कराने का प्रबंध करते हैं।

अक्षरों की लम्बाई और चौड़ाई भी निर्धारित है। माधारणतः अंग्रेजी के  
अक्षर चौड़ाई से निहाई इन्ध तक लम्बे तथा चौड़े लिखने का अभ्यास किया  
जाता है।

इन बातों का अतिरिक्त लिखावट में ऐसी भौतिक परिस्थितियों का ध्यान  
भी रखा जाता है जिनसे मुद्रित सुगम हो जाता है और नित्य का अभ्यास में बाधा  
के स्वाभाविक पर भी अनुचित दबाव नहीं पड़ता। जहाँ वे लिखते बटन की सही विधि  
जमीन पर हो। अथवा डस्क या भूत पर यथोचित प्रकार की सुविधा रखनी का  
सही तरह से पत्रना और चयना सफाई का ध्यान रखना आदि। ये सभी बातें  
हैं जो मध्य लिखित भाषाओं के लिए लागू हैं।

जब लिखने वाला व्यक्ति लिखने के लिए सही विधि से बैठता है तथा  
लिखने का गायन का उचित प्रयोग करता है तो उसका अंग पर अनुचित भार नहीं  
पड़ता। माथे का उभरा लिखावट भी स्पष्ट स्थिर एवं सुव्यवस्थित बनती जाती  
है। लिखने का क्रिया से ध्यान पना नहीं होनी और क्रिया के सफरतापूर्वक  
गमन होने में आत्मिक मनोप भी प्राप्त होता है। अतः आवश्यक है कि लिखने  
का क्रिया का उचित अभ्यास लिखावट का प्रारम्भ में होना चाहिए।

लिखना मागन बाल विद्यार्थी बाल तथा युवा मध्य लिखावट का उपरान्त  
हूँ आधार पर लिखना सीखना प्रारम्भ करने हैं। अध्यापकगण भी मुद्रित का  
ध्यान रखते हुए ऊपर लिखे हुए आधार पर ही अभ्यास कराने हैं। लिखने का

अभ्यास होने पर प्रत्येक व्यक्ति अपना निजी गरी अपना रता है जिसका हम कहते हैं कि यह उसका मौखिक लिखावट है।

लिखित भाषा का विश्लेषण करने से विदित होता है कि मनुष्य लिखित भाषा का म लिखावट के मूल तत्त्व समान हैं। जग कि रखाए साचना। य रेखाए अधोगामी अग्रगामी ऊर्ध्वगामी सीधी वक्राकार वाणाकार, गोलाकार हा जाती हैं। जहाँ जसी जरूरत पड़े और अक्षरों में जहाँ जसी निर्धारित कर दी गई है। इसके अनिश्चित मात्राओं के चिह्न जग-अग निर्धारित कर लिए गए हैं। विराम तथा विसर्ग आदि भी किसी न किसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं। यह लिखावट के चिह्न बनाते समय बड़ी लेखनी भारी हो जाती है उसे ऊपर से नीचे की तरफ रेखा साचने समय। वही यह रेखा हल्की हो जाती है उस कि नीचे से ऊपर की ओर जान पर।

हस्तलिपि से मनावज्ञानिक अध्ययन करने के लिए और व्यक्तिगत गरी के सुधार के अभ्यास के लिए लिखावट के ऊपर लिए गए आधारों को जो कि लिखावट के मूल तत्त्व है समझ लेना आवश्यक है क्योंकि हर बार इन मूल तत्त्वों से ही काम पड़ता है।

## लिखावट का मनोवैज्ञानिक आधार

जमा कि हम पहले कह आए हैं प्रत्येक लिखावट सीखने वाला विद्यार्थी लिखने का अभ्यास हा जान पर अपनी निजी गरी अपना रता है। ऐसा क्या होता है? हस्तलिपि के मनावज्ञानिक अध्ययन तथा अनुसंधान का प्रारम्भ इस छोट-से प्रश्न से होता है।

आपनी लिखावट की गरी विचित्र है। अपनी निजी है मौखिक है किसी दूसरे में नहा मिश्रणी एका क्या है? आपके इस विचार दृष्टि से लिखने में अत्यंत ही गौरव रहस्य है। हम रहस्य की खोज करना हस्तलिपि विज्ञान का लक्ष्य है क्योंकि यह विषय क्या जाता है कि लिखावट आपकी स्वभाव एवं व्यक्तिगत चरित्र और के अंशों से प्रभावित होती है तथा उनसे प्रकट करती है।

लिखना साधन या विद्यार्थी लिखने का प्रारम्भिक अभ्यास हा जान पर मुख्य लिखते हैं। उनका लिखावट प्राय लिखावट के स्थायी आकार के समान बनती है। एका भी यह मकन है कि इनका यह सब लिखावटें एक-सी बनी हुई प्रतीत होती हैं क्योंकि मुख्य लिखित समय सावधानी का विषय प्रयोग किया जाता है। निम्न समय धार धार लेखना का बार-बार उठाना ध्यान एकाग्र करके लिखावट की बनावट के प्रत्येक चिह्न को धार धार सावधानी से क्रमपूर्वक बनाना आवश्यक होता है। इस सावधानी की अवस्था में प्रमुख लक्षण लेखनी की गति का अवरोध है। मेलक इस अवरोध के साथ व्यक्तिगत सावधानी एकाग्रचित्त क्रम

सम्पत्ति स्थिरता आदि निमाणकारक वस्तुता का प्रयोग करता है। एसी परि-  
 स्थिति में हम मानते हैं कि सुख का अभाव समान है। और माय-माय  
 यह भी मानते हैं कि इन स्थितियों के जिन कारणों से वे व्यक्तिगत स्थिति  
 मौजूद हैं जिनसे कि सावधानता व काम करने का प्रयत्न प्राप्त होता है।

यदि विवेक एसी स्थिति में है जो जितना भी सावधानता प्रदान करने  
 पर भी सुख के स्थायी रूप के समान नहीं बनती। अथवा घाटा-मा प्रारम्भिक  
 सुख के प्रत्यक्ष के बाद ही अपना निराशा पर आन लगती है। इस स्थिति  
 का अन्तर्भव हम व्यक्तिगत व्यवहार में करते हैं। हम निश्चित करते हैं कि  
 हजार पैसे आते हैं। जिनसे हम देखते हैं कि कुछ पैसे आते हैं जो जिन कारणों से  
 सावधानता में स्थिति है और जिनसे विपत्ति यह है कि जिनसे अन्त तक वे प्राप्त  
 नहीं परन्तु सुख प्राप्त में स्थिति में है। दूसरे एक है कि जो प्रारम्भिक भाग  
 में सुखित प्रदान होता है और अपनी स्वाभाविक घड़ी पर आकर समाप्त हो  
 जाता है। इनमें तीन प्रकार हैं। प्रथम जो प्रारम्भ में कुछ सुखित है कुछ  
 दो चार पक्षों तक जब कुछ एक पक्ष ही पक्ष तक और बाद में अपना स्वाभाविक  
 घंटा पर, अन्त में लिखन बाद के हल्का-सा भी स्पष्ट पर नहीं जा सकते। दूसरे  
 एक जो कि बाद में घंटा के बाद फिर से अन्त में सुखित है—यह प्रथम में स्थिति  
 बाल के हल्का-सा स्पष्ट परन्तु में जा जाता है। और तीसरे प्रथम है कि किसी  
 निम्न स्थिति पर स्पष्ट पर जा सकते हैं। ऐसा माय-माय प्रतीत है कि जिन कारणों से  
 जिन कारणों के स्पष्ट करने की आवश्यकता प्रतीत है उन कारणों का तथा उन  
 कारणों का सावधानता में स्थिति दिया है। जिससे जितना तो है कि कम-से कम पढ़ने  
 बाद का प्रत्यक्ष के आगे के आवश्यक जग सुमचने में गहरा न रह जाय।

यस प्रकार में स्थिति में ही तीन स्थितियों का अन्तर्भावित प्रत्यक्ष भी  
 अन्त-जगत्त होता। परन्तु जिनसे अपना विनिम्नताएँ होने का स्थिति समान है—  
 यह है स्थिति में गति का प्रयोग। हम तब ही स्थिति में स्थिति वाला व्यक्ति  
 सावधानता का प्रयोग आवश्यक नये समझता जिसमें स्थिति की गति का सम  
 एवं स्थिर रहा जाय। यह स्थिति स्थिति में बड़े बड़े प्रयोगित रहता है। स्थिति  
 बाद अपनी शक्तता बल्यता विचारधारा आदि को प्रयोगित करने में व्यस्त रहता  
 है। वह स्वभाव से ही प्रयोग स्वभाव का होता है। शक्ति व्यक्ति अपना साक्षिक  
 शक्ति का उपयोग अपने निम्न आचरण के विवेक के लिए नहीं कर सकते। जो  
 व्यक्ति अपने विचारों के प्रवाह को रोकने में असमर्थ हैं अथवा एकाग्रचित होकर  
 सोचने अथवा नाम करने में असमर्थ हैं, इस प्रकार की स्थिति की गति का  
 प्रयोग करते हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि ये वे व्यक्ति हैं जो अपने विचारों को अपने  
 मन में बाँधे हुए बाना का तुरन्त ही बह डालना चाहते हैं। चाहें उनकी इस तरह  
 श्रुतलिपि और व्यक्तित्व

अभ्यास होने पर प्रत्येक व्यक्ति अपना निजी गली अपना गता है जिसकी हम कहन है कि यह उमरा मौलिक गिवाव है।

गिवन भाषा का विच्छेदन करने से विन्ति होता है कि सब गिवन भाषाओं में गिवाव व मूल तत्व समान ही हैं। जस कि रखाए साचना। य रेखाए अधोगामी अग्रगामी ऊर्ध्वगामी सीधी वक्राकार वाणाकार गोलाकार हो जाती हैं। जहा जसी जरूरत पड़े और अक्षरा में जहा जसी निर्धारित कर दी गई है। इसके अनतिरिक्त मात्राओं के चिह्न अंग-अलग निर्धारित कर लिए गए हैं। विराम तथा विसर्ग आदि भी किसी न किसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं। यह लिखावट के चिह्न बनाते समय कभी ऐसी भारी हो जाती है जसे ऊपर से नीचे की तरफ रेखा खींचते समय। कभी यह रेखा हल्की हो जाती है जस कि नीचे से ऊपर की ओर जाने पर।

हस्तलिपि से मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए और व्यक्तिगत गली व सुधार के अभ्यास के लिए गिवाव के ऊपर लिए गए आधारा को जोकि गिवाव के मूलतत्त्व हैं समझना आवश्यक है क्योंकि हर बार इन मूलतत्त्वों से ही काम पड़ता है।

## लिखावट का मनोवैज्ञानिक आधार

जसा कि हम पहले कह आए हैं प्रत्येक गिवाव सीखने वाला विद्यार्थी लिखने का अभ्यास है। जान पर अपनी निजी गली अपना गता है। ऐसा क्या होता है? हस्तलिपि व मनोवैज्ञानिक अध्ययन तथा अनुसंधान का प्रारम्भ हम छोट से प्रश्न से होता है।

आपका गिवाव की गली विचित्र है। अपनी निजी है मौलिक है किसी दूसरे से नही मिलती ऐसा क्या है? आपको इस विवेक दग से लिखने में अवश्य ही काम रहस्य है। हम रहस्य का खोज करना हस्तलिपि विज्ञान का लक्ष्य है क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि गिवाव आपकी स्वभाव एवं व्यक्तित्व पर विचार आदि के प्रभाव से प्रभावित होता है तथा उनका प्रतिबिम्बित करती है।

लिखना मानव वाच विद्यार्थी लिखने का प्राथमिक अभ्यास है। जान पर मुख्य लिखन है ता उनकी गिवाव प्रायः लिखावट के स्थायी आधार के समान बनता है। ऐसा भी कह सकते हैं कि किसी भी सब गिवावों एवं सी बनी हुई प्रभाव होता है। क्योंकि मुख्य लिखन समय सावधानी का विशेष प्रयोग किया जाता है। लिखन समय धार धार लिखना का बार-बार छठना ध्यान एकाग्र करके लिखावट की बनाने के प्रत्येक चिह्न का धार धार सावधानी से प्रत्येक बनाना आवश्यक होता है। हम सावधानी की अवस्था में प्रमुख प्रभाव लिखना की गति का अवरोध है। यदि हम अवरोध के साथ व्यक्तिगत सावधानी एकाग्रचित्त प्रेम

सत्यता स्थिरता आदि निर्माणकारक बलिया का प्रयोग करता है। एसी परिस्थिति में हम मान सकते हैं कि सुख की यह स्थिति समान है। और साथ-साथ यह भी मान सकते हैं कि इन लिखावटों के लिखने वाले में व्यक्तिगत लक्षण मौजूद हैं जिनसे प्रभावधाना से काम करने की क्षमता प्राप्त होती है।

इसके विपरीत ऐसी लिखावटें भी हैं जिनमें भी प्रभावधाना से प्रयोग करने पर भी सुख के स्थायी रूप के समान नहीं बनती। जयवा चाटा-मा प्रारम्भिक सुख के अभ्यास के बाद ही अपनी निजी शक्ति पर आने लगती हैं। इस लिखावट का अनुभव हम व्यक्तिगत पक्ष-व्यवहार में करते हैं। हस्तलिखित पत्र में पत्र हमारे पास आते हैं। उनमें से हम देखते हैं कि कुछ पत्र ऐसे हैं जिनमें शक्ति ने प्रभावधाना से लिख है और जिनमें निष्पत्ति यह है कि शक्ति से अतः तब के प्रारम्भिक एकासी सुख शक्ति में लिखे गए हैं। दूसरे ऐसे हैं जिनमें प्रारम्भिक भाग में सुखित प्रतीत होता है और अपनी स्वाभाविक घसीट पर आकर समाप्त हो गए हैं। इनमें तान प्रसार है। पत्र य जो प्रारम्भ में कुछ शक्ति मुक्ति है कुछ दो बार पकिया तब कुछ एक पत्ती ही पकित तब और बाद में अपनी स्वाभाविक घसीट पर अंत में लिखने वाले के हस्ताक्षर भी स्पष्ट पड़े नहीं जा सकें। दूसरे ऐसे जिनमें बीच में घसीट के बाद फिर से अंत में मुक्ति है—इतना पत्र में लिखने वाले के हस्ताक्षर स्पष्ट पत्र में आ जाते हैं। और तीसरे पत्र हैं जो कि किसी निजी स्थान पर स्पष्ट पत्र आ सकते हैं। ऐसा मानना पत्र है कि लिखने वाले ने जिस भाग्य का स्पष्ट करने की आवश्यकता समझी है उन अक्षरों को तथा पत्र में प्रभावधाना से लिख लिया है। जिससे पत्रता सा है कि कम-से कम पत्रने वाले का शक्ति के आराम से आवश्यक जग समझने में शक्ति नष्ट जाए।

इस प्रकार से लिखी गई तीनों लिखावटों का मनावधाना विश्लेषण का अन्त-अन्त होगा। परन्तु इनमें अपना विनिर्भरता एते हैं भी लक्षण समान है—यह है लिखावट में गति का प्रयोग। इस तरह की लिखावट लिखने वाला व्यक्ति साधना का प्रयोग आवश्यक नहीं समझता जिससे लिखावट का गति को सम एक स्थिर रखा जाए। यह लक्षण लिखावट में वगैरह गति प्रतीत करता है। लिखने वाला अपनी भावना कल्पना विचारधारा आदि का प्रतीत करने में व्यस्त रहता है। वह स्वभाव से ही प्रभाव स्वभाव का जाना है। मानव व्यक्ति अपनी तात्कालिक शक्ति का उपयोग अपने निजी आचरण के विश्लेषण के लिए नहीं कर सकते। जो व्यक्ति अपने विचारों के प्रवाह को रोकने में असमर्थ हैं अथवा एकाग्रचित्त हाकर सोचने अथवा काम करने में असमर्थ हैं इस प्रकार की लिखावट का गति का प्रयोग करते हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि ये व्यक्ति हैं जो अपने विचारों को अपने मन में आई हुई बातों का तुरन्त ही कह डालना चाहते हैं। चाहे उनकी इस तरह

से कही गई बात सुनने वाले व्यक्ति की समय में आइ हा अथवा न आई हा। उह इसका आभास नहीं है परवाह भी नहीं है। व वह सक्त हैं कि हमने तो अपनी बात कह दी और स्पष्ट कर दी। सुनने वाले व्यक्ति यदि उनकी बात का समझने का वागिंग न करे तो व क्या कर सकत हैं।

शिवने वाले का या या कहिए कि रखनी द्वारा व्यक्त करने वाले का भी यही हाल है। उनको तो रख देने में मन्त्र पढ़ने वाले समझने की वागिंग में लगा रहे। समझने अथवा नहीं समझ यह उसकी समस्या है।

एक स्थान पर यदि आप इस पुस्तक को बंद कर दें और अपने मिलने वाले व्यक्ति की बातचीत हाव भाव आदि वावहारिक आचरण व विषय में सोचें तो सम्भव है कि तुरन्त ही आपका ध्यान ऊपर लिए हुए प्रकार से अपनी बात को व्यक्त करने वाले व्यक्ति की ओर आकर्षित हो जाएगा। इस प्रकार के व्यक्ति समाज के प्रत्येक स्तर एवं वर्ग में मिलते हैं। ये व्यक्ति अपना बात को किसी-न किसी तरह से कह डालना चाहते हैं। कई व्यक्ति बहुत जल्दी-जल्दी बोलते हैं। कोई जोर जोर में बातें है। भावमय होता है कि लड़ने वाले ही हैं। कोई हनगते हैं फिर भी जोर लगाते है। ध्यान देने से इस प्रकार के भावावेश-व्यक्तीकरण के अनेक एवं विभिन्न प्रकार के उदाहरण मिलते हैं। परन्तु समानता इनमें एक व्यक्तिगत लक्षण की है। ये सब बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति हैं। इनका जीवन व्यक्ति प्रभावित है।

एक वर्ग में आने वाले कुछ व्यक्तियों में एक लक्षण और होता है। मनो वचनिक दृष्टिकोण में वह भी महत्वपूर्ण है। वह है अपनी कहना परन्तु दूसरा की न सुनना। दाता बाता में मीठा सम्बन्ध है। जिसे अपनी कहने की जल्दी है उसे दूसरा की बात सुनने का कहा अवकाश है। यह अधीरता है। दूसरे की बात सुनने के लिए धैर्य आवश्यक है। अधीर व्यक्ति का चिन्तन में भी अधीरता की मात्रा का अधिकाधिक समावेश होना स्वाभाविक है और होता भी है।

वावहारिक परिस्थिति में ऐसी मानसिक अवस्था वाले व्यक्ति को आवश्यकता में अधिक बालना पता है। कभी-कभी आप के पास लम्बे चौं पत्र आते हैं जिनका यदि मूढम स्वर से विच्छेदन किया जाए तो तथ्य की बात घानी ही निकलगा। भावधानी में साच हुए विचार धारा में ही स्पष्टत व्यक्त हो जान हैं। अभावधाना से कहा यह बात का अनन्त होना।

## लिखावट की सामाजिकता

लिखावट एक सामाजिक आवश्यकता है। यह हमन्निपिबि ज्ञान में दूसरा दृष्टिकोण है। एवं व्यक्ति लिखता है तमर व्यक्ति के पत्र के लिए उमस कुछ जानने के लिए कुछ मन्त्र पान के लिए कुछ समझा के लिए कुछ भावने के

लिए। आप पत्र पान हैं पत्र गिनन वाग्न प्रक्ति व आगय का स्पष्टन समय लन  
 व लिए। वाग्न म उम पत्र का म्याया रस का तरह रस मा गिया जा सकना है।  
 समय आन पर यह पुन दगा जा सकना है। अन यह मान गना पठना है कि जा  
 प्रक्ति पुढ और स्पष्ट लियावट गिनन हैं व सामाजिक दृष्टि म हमर प्रक्तिया  
 का भावनाआ का उनका प्रक्तिगत सामय्य का ध्यान रखत हैं और जा व्यक्ति  
 एमा घमात् लियात हैं जो कि पनी नहा जा सकना अथवा जिमका साफ-माफ अथ  
 हा नहा निराला जा सकता व अपना काम ता करना चाहत हैं परन्तु हमरा का  
 अवहन्ना करत हैं। सहज हो व अपना भार हमर प्रक्ति व ठगर डक्क दना  
 चाहत हैं। एमा आचरण नामाजिन दृष्टिगोण से बाठनीय नहा है।

अस्पष्ट लियावटें जा कि माफ-माफ पना नहा जा सकता गिनन वाले  
 व्यक्ति की अव्यवस्थित अवस्था सूचिन करती हैं। एमा व्यक्ति अपन भावावग म  
 अपना धान कट डालना है। उय हम बाग का ध्यान नहा रहना कि कान् दूसरा  
 व्यक्ति हम पडगा और वह अस्पष्ट लियावट का पन्न म अममय रहगा। एम  
 व्यक्तिमा म अट का भावना मुख्य रहती है। व व्यक्ति करत हैं कि जा व समपत  
 हैं अथवा कहत हैं बहा ठीन है। और उसम अच्छी बात बो दूसरी नहा हो सकनी।  
 बछ लाग जाननूपनर अस्पष्ट गिनन हैं। एस हम्नाभर बन्धा देखन म आन हैं  
 जिनम कुछ भा पना नहा जा सकता। व कवर धानी माक् का तरह हात हैं।  
 समवन एमा गिनन वाला व्यक्ति परिस्थिति का सहजनक ही रखना चाहता है।

जा महानुभाव अपनी स्वय का लियावट सुगमता म न पन सक उनक  
 लिए क्या कहा जाए। और जा अपना लियावट स्वय न पहचान सकें उनक लिए  
 क्या कहा जाए हमनी कपना पाठक स्वय कर लें। एम व्यक्ति का व्यक्तित्व तथा  
 चरित्र भरोसा करन योग्य है अथवा नहा यह मयात्मक तथा विचारणीय विषय  
 है। हो सकना है कि यह कवर ध्यावहारिक वास्तविकता का अपानता हा स्वाभा  
 विक अभावधाना हो अथवा अहंकारयुक्त स्वाय की भावना हा या उद्दण्टायायुक्त  
 आचरण हा। निश्चय ही यह एक मावधान स्पष्ट और भरोसा करन योग्य  
 व्यक्तित्व का धानन लग गिपि कगारि नहा है।

अन लियावट म गतिगिगता के विषय म कहा जा सकना है कि एमी  
 घमात् लियावट जिम पर गिनन वाग्न व्यक्ति का जागरूक अवरोध नहा है उमक  
 अपिकार क वाहर है। एमा लियावट विरुत है अस्पष्ट है और ग्यहीन है।  
 गितने वाग्न व्यक्ति जस चाह लग्यहान रखनी चगता हआ स्वय अपन लक्ष्य का  
 ता वटना है और उम आचरण म उमका निजी प्रक्तित्व भी विलीन हा जाना है।  
 यह व्यक्ति व नष्ट कर दन वाग्न लक्षण है।

हमक विपराज एव एमा लियावट है जो कि गतिगाल हात हुए भा स्पष्ट  
 है। यह गिनन वाग्न व्यक्ति का उव एव अष्ट मानमिन समयता का व्यक्त करना  
 हस्तलिपि गीर व्यक्तित्व



है। ऐसा व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में गतिशीलता को अपनाता हुआ अपने लक्ष्य का प्राप्ति करने में समर्थ होता है। वह भावक आकाश में बह रहा जाना। उसकी भावनाएँ एवं जीवनशक्ति नियम एवं समय के अवरोध के बाहर नहीं जा सकती। वह जितना चाहता है स्पष्ट गति में कहता है। दृढ़ता से कहता है और चाहता है कि उसको पत्न बाध अथवा व्यक्ति भा उसका आशय को बिना किसी प्रकार का गवा के समझ सकें। समय गति का संचार है आत्मशिवता है स्वावलंब है प्रज्ञा है मामाश्रयता है और अधिकार की प्रवृत्ति है।

लिखावट में परिवर्तन के विषय में लिखते हुए यह कहा गया था कि लिखावट के कुछ चिह्न बदलते रहते हैं और कुछ स्थायी आकार में बने रहते हैं। वे बदलते नहीं हैं। इनके कारण लिखावट में मौलिकता बना रहती है। जो चिह्न बदलते हैं वे लिखावट में गति का संचार ज्ञान से बदलते लगते हैं। इस प्रकार के चिह्न में परिवर्तन का मात्रा एवं प्रकार का निर्धारण लिखावट के सूक्ष्म निरीक्षण से होता है। उदाहरण के लिए कहा जा सकता है कि ये चिह्न पाठ्य अक्षर के अंतिम स्तर मात्राएं आदि आदि की ओर भागते हुए से लिखाई देते हैं। इस प्रकार के सूक्ष्म निरीक्षण से लिखावट की गति। कला की मात्रा का निर्धारण होने लगता है। और यह समझ में आने लगता है कि अमुक लिखावट धीरे धीरे मध्यमगति से अथवा तेज-गति से लिखी गई है।

हस्तलिपि विज्ञान के विशेषज्ञों ने निवेदन एवं विधिवत प्रयोगों से हस्त लिपि के अनेक चिह्नों के स्थायी एवं परिवर्तित आकार से लिखावट में गति की मात्रा माप करने के गुरु (फार्मूला) सिद्ध कर लिए हैं। इनके उपयोग से लिखावट की बिना भी तत्त्वार में उसकी गतिशीलता की मात्रा का माप लिया जा सकता है। अमुक लिखावट कितनी गति से लिखी गई है। यह माप हस्तलिपि विज्ञान के मनावनानिक विवरण के लिए प्रयोज्य होता है। जैसे कि तीव्र, मध्यम तथा मन्दगति।

व्यक्तिरूप के घण—मनावनानिक दृष्टिकोण से लिखावट में गतिशीलता का तत्त्व व्यक्तित्व का माट और पर तान दोनों में विभाजित कर देना है। वहिमसी प्रवृत्ति बाध प्रति जनमया प्रवृत्ति बाध व्यक्ति और उभयमुखी जयवा समप्रवृत्ति बाध प्रति।

एक वर्गीकरण में लिखावट के अथवा चिह्न में भी समयन मिलता है। किसी भाग में चिह्न का भराया करना यत्ति के वास्तविक निर्धारण करने के लिए एतद स ग्याता नहा है। एक चिह्न अनन्य गणना की ओर संकेत कर सकता है। परन्तु उनमें से किम। एक गणना का यत्तिरूप का स्थायी गणना मान देने के लिए कम मन्त्रम का द। अथवा चिह्न का समयन मिलना आवश्यक है। उन ऊपर लिए हुए ताना वर्गीकरण के निर्धारण के माध्य लिखावट में अथवा चिह्न से पाए जाने वाले लक्ष्य का ध्यान करना नितांत आवश्यक है। यह समयन उपर लिए हुए

व्यक्तित्व क लक्षण जम कि बहिर्मुखी अन्तरमुखी, उभयमुखी के निर्धारण क लिए मित्रता चाहिए ।

लिखावट का आकार एक दूसरा पन्ना चिह्न है जिस गतिशीलता से प्राप्त हुए सकेत का समयन करना है । उन्ना लिखावट बहिर्मुखी छाती लिखावट अन्तर्मुखी और मध्यम आकार का लिखावट उभयमुखी प्रवृत्ति मूचिन करता है ।

व्यक्ति की मर्यादा चिह्न लिखन में व्यक्ती का स्वरूप है । भाग लिखावट जिसमें लक्षणा देवाकर लिखनी है बहिर्मुखी हल्की लिखावट जिसमें लिखावट अन्तर्मुखी हा हाथ स चलनी है अन्तर्मुखी और मध्यम देवाव वाला लिखावट उभयमुखी प्रवृत्ति की प्रताप होता है । लिखावट के अर्थ चिह्न में प्रकार के अन्त में सहायक जान है । परन्तु व्यक्तित्व के व्यक्ती के वर्णानिक तथ्य के लिए यदि ऊपर लिखे हुए तीन चिह्न का समान समयन मित्र जाए तो पयाप्त है । लिखावट के ये चिह्न (१) गतिशीलता (२) आकार और (३) व्यक्ती का भागी स्वरूप ऐसे माट चिह्न हैं जो कि प्रत्येक लिखावट में मिलते हैं और इनका पहचानकर अनुभव करना बहुत ही सुगम होता है । इसीलिए लिखावट में गतिशीलता का निर्धारण एक उभय तान्न वग समयन बेगहान गति में बहिर्मुखी उभयमुखी एक अन्तर्मुखी प्रताप वाला व्यक्तित्व का वर्गीकरण लिखावट के ऊपर लिखे हुए तीन चिह्न से जम कि गतिशीलता आकार और व्यक्ती के भाग देवाव से ही किया जाता है । इसमें यदि किसी प्रकार का गिरा रह जाए तो अपन प्राप्त नियम हुए निर्धारण के समयन करने के लिए लिखावट के अर्थ चिह्न का तर्का करना ही उचित होता है ।

यह मूलन ध्यान देने का विषय है कि लिखावट का गतिशीलता—तान्न एक समयन—का प्रभाव लिखावट के आकार और व्यक्ती के देवाव आदि लिखावट के अर्थ चिह्न पर मा होता है ।

इस प्रकार से व्यक्तित्व का एक माता-मा परन्तु निश्चित वर्गीकरण हो जाता है । हम यह पता चल जाता है कि अमुक लिखावट लिखन वाला बहिर्मुखी अन्तर्मुखी तथा उभयमुखी प्रवृत्ति में म निम क्षेत्र में जाता है । इतना निर्धारण हो जान में हेम्जलिपि विज्ञान का प्रत्येक व्यक्ति का एक निश्चित साक्षात् मित्र जाना है जिसके अर्थ मूढम स्थान व्यक्तित्व के दूसरे अनेक गुणा की पराप्ता के द्वारा पूर किए जा सकते हैं ।

## लिखावटों का वर्गीकरण

व्यक्तित्व के वर्गीकरण के अनुरूप लिखावट का वर्गीकरण भी किया गया है जिसका उपयोग व्यक्तित्व के तीन वर्गों (बहिर्मुखी उभयमुखी तथा अन्तर्मुखी) का अन्त करन में ही मक ।

## द्रुतगामी लिखावट

ऐसी लिखावटें जिन्की गति तान्न है जो अक्षर के आकार में बड़ी हैं फन्ती हुई स्थान छोड़ती हुई लिखी गई है अक्षर प्रमादयुक्त हैं एक दूसरे से मिश्रित हैं लिख है तथा जिन्में लक्ष्मी या दबाव अधिक है माशाएँ तथा बिन्दु विरग आदि आगे की ओर भाग रहे हैं द्रुतगामी लिखावटें कहलाती हैं। इस प्रकार के लिखावट के चिह्न प्राप्त होने से बहिमुखी प्रवृत्ति सूचित होता है।

## समगति लिखावट

ऐसी लिखावटें जिन्की गति सम है अक्षर अधिक बड़े अथवा अधिक छोटे आकार के नहीं हैं समान स्थान के प्रसार में लिखी गई हैं और जिन्में लक्ष्मी का दबाव अधिक नहीं है समगति लिखावटें कहलाती हैं। ये उभयमुखी प्रवृत्ति सूचित करती हैं। इनमें बहिमुखी प्रवृत्ति के कुछ लक्षण हैं तथा प्रतिरोध के भी हैं।

## प्रतिरोधी लिखावट

ऐसी लिखावटें जिन्में मन्दगति के चिह्न हैं जैसे कि छोटे आकार के अक्षर रिक्त स्थानों का अभाव छोटे हाँफे पीछे की ओर झुके अक्षर लेखनी का दबाव हल्का प्रतिरोधी लिखावटें कहलाती हैं। ये अन्तमुखी प्रवृत्ति सूचित करती हैं।

## वैज्ञानिक खोज के लिए लिखावट

हस्तलिपि विज्ञान द्वारा व्यक्तिगत विवरण के लिए स्थायी से लिखी हुई लिखावटों का आवश्यकता है। यह कम से कम आधा पन्थ साठे कागज पर हो। अच्छा है यदि यह एक पूरा पन्थ हो। हो सब तो सफ़्त रंग का साठ कागज हो। लिखावट स्वतः तथा स्वच्छ गति एवं स्विच से लिखी गई हो। अच्छा तो यह है कि वनानिक खोज के लिए विनाश न लिखी गई हो। लेखक के मन में अपने बचाव की भावना नहीं हो। सहज रूप में लिखी हुई लिखावट उत्तम माना जाता है।

लिखन की विज्ञान साधारण भौतिक परिस्थिति में बैठकर की गई हो। लिखन वाक्य व्यक्ति को पत्र से इस बात की जागृही न हो कि उनकी लिखावट मनावनामिक विवरण के लिए प्रयोग में लाने के लिए उत्प्रेरण भाना जाएगी। लिखावट का गन्ना महज स्वभाव से उत्प्रेरण में गन्ना जाना जायेगा। पास्ट का पत्र लिखा गई लिखावटें सही आधार नहीं मानी जाना क्योंकि लिखन बाल का उस यात्र में स्थानमात्र में हो लिखना पन्ना है और स्थानाभाव के कारण बहुधा उसमें लिखावट के चिह्न अपना महज वनावट बनाने हैं।

इस प्रकार में लिखावट के आधार के लिए सही उत्प्रेरण मित्रों पर हस्तलिपि-विज्ञान नाम लिखन वाक्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही निर्धारण

निश्चित रूप से किया जा सकता है। यदि लिखावट की महज धनावम गणना हो तो एक से अधिक नमूना का आवश्यकता पड़ सकती है।

हस्तलिपि विज्ञान व्यक्तित्र का जाँच करने का एसा माध्यम है जिससे लिखने वाले व्यक्ति के शून्यतम लक्षणा का पता लगाया जा सकता है। इस प्रकार की जाँच करने की शक्त विमा भी अन्य व्यक्तित्व निर्धारण प्रणाली में नहीं पाई जाती। पाश्चात्य देशों के विज्ञान ने यह अपने चरानिक अनुसंधानों से बारबार सिद्ध कर लिया है।

## हस्तलिपि विज्ञान का विकास

किसी भी विषय का वर्णन करते समय यह आवश्यक समझा जाता है कि उसकी उत्पत्ति एवं विकास पर भी प्रकाश डाला जाए। अतः हस्तलिपि विज्ञान का विकास का सही वर्णन यहां दिया जाता है जो कि इस छोटी-सी पुस्तक का आखिरी समझने के लिए पर्याप्त होगा।

साहित्य की प्राचीन पुस्तक में लिखावट से मनप्यक स्वभाव तथा गुणों की पहचान करने के सबेरे मिटने रहने हैं। एक प्रचलित विद्वत्ता है —

पाप धर्म धानी शस्त्र ध्यानी ब्रह्म विवेक

अक्षर होय न एक से देखे पुरुष जेक।

इससे स्पष्ट है कि अगर अपना मौलिकता के कारण विचित्र माने गये हैं तथा अपने उद्देश्य का निजी विचारना के खोने भी माने गए हैं। प्रायोगिकी अर्थात् हस्तलिपि विज्ञान की उत्पत्ति फ्रांस देश के निवासी श्री जीन हिपोलाइट मित्रों से माना जाता है। यह एक विद्वान् पारंगत थे। बहुत समय तक उन्होंने विविध लिखावटों का निरीक्षण एवं अध्ययन किया तथा उन लिखावटों के लिखने वाले व्यक्तियों के व्यक्तिगत चरित्र का भी अवलोकन किया। उन्होंने अपने अनुभव से लिखावट के भ्रूत चिह्नों का सम्यक्करण किया उनका अध्ययन का पहचाना और उनमें प्रत्येक का लिखने वाले व्यक्तियों के विविध व्यक्तिगत लक्षणों में सम्बन्धित किया। जैसा कि लिखावट के बड़े अक्षर सूचित करते हैं। लिखने वाले व्यक्ति का विचारगति का विज्ञान उसकी अभिव्यक्ति एवं मानसिक गति को दर्शाता कहाँ आता है। आमतौर पर पाठकों का ज्ञान बचने वाले लिखावट लिखने वाले व्यक्ति का मानसिक चित्रण आमतौर पर स्वमुखा का नाशना स्पष्ट दर्शन में रहता आता व्यक्तिगत लक्षणों को सूचित करते हैं। यह प्रकार से मित्रों ने अपने अनुभवों का प्रयोग किया। यह मनमाने एक छाया-मा पुस्तिका के रूप में सन् १८३१ में प्रकाशित हुआ। यह अपने विषय का माना हुआ सर्वप्रथम प्रकाशन

कहा जाता है। इसके द्वारा भिक्व ने हस्तलिपि विज्ञान को जन्म दिया तथा इस विषय का नामकरण भी किया। भिक्व वं कथनानुसार हा यह विषय ग्राफोलोजी अर्थात् हस्तलिपि विज्ञान कहलाया।

तत्पश्चात् यह विषय दो प्रकार के योगों के हाथ लगा। पहले तो वं अवसरवादी व्यक्ति थे जो मानव स्वभाव को एक पहली अवस्थात थे और हस्तलिपि-विज्ञान को उस पहली को सुलझाने का साधारण साधन। इन व्यक्तियों ने इस विषय का तुरन्त ही अपनी जीविका कमाने का अन्तर्निहित साधन बना दिया। ये जिप्सिया की तरह जगह जगह फिरते थे और इससे द्वारा गये वं स्वाभाविक एकाग्र ही बनाने का ढाँचा बना ही रहा करते थे वरिष्ठ उनसे अधिक मध्यम मन्त्रों के अनेक प्रश्नों का उत्तर भी हमसे माध्यम से देने का दावा करते थे। इस व्यक्तियों का काम मानवीय दुर्बलताओं से ग्रस्त लोगों का निवारण करना था। सीधे-सादे स्वभाव के लोग इनकी बातों में आ जाते थे। ये गण भिक्व के वास्तविक अनुयायी नहीं थे। ये तो अवसर से लाभ उठाने वाले स्वार्थी लोग थे। ऐसे लोगों के स्वाध्याय आचरण के कारण ही ग्राफोलोजी मज्जा का साधन बनकर रह गई। प्रभावान् प्रतिभा-शाली विद्वानों ने इस विषय को एक हीन साधन समझकर त्याग दिया तथा इस विषय को किसी भी बौद्धिक क्षेत्र में स्थान प्राप्त नहीं हुआ सका। इसकी अवहट्ठना होने लगी।

फिर भी कुछ ऐसे गम्भीर विचार के थे जो कि भिक्वों के प्रयासों को ध्यय मानने को तयार नहीं थे। यह समय था कि भिक्वों का हस्तलिपि विज्ञान मूल्य एक बौद्धिक परीक्षा की नसोटी पर पूणतः सही नहीं उतर सका था। इस स्तर पर हम को चरित्र एक यथार्थ निष्ठागण करने की प्रणाली के रूप में माना जा सकता भी सम्भव नहीं था। परन्तु यह निश्चित था कि इसमें एक नवीन क्षमता का आभास था। यह एक नवीन माग था मनुष्य के अन्त्य तत्वा के निराकरण का। इन विद्वानों विचारकों ने भिक्वों के आधारभूत तत्वा की गहराई को देखा और उनमें प्रगतिशील अन्वेषण के लिए पर्याप्त मसाला पाया। इन विचारशील महानुभावों में उन लोगों के शरीर विज्ञान, मनाविज्ञान, अध्यात्म आदि विषयों के कुछ माने हुए पण्डित भी थे। इस योगों ने हस्तलिपि विज्ञान के पुनः अध्ययन नवीन खोज तथा प्रयोगों को किया को बनाय रखा। कागन्तर में अपनी खोजों में अपने हस्तलिपि विज्ञान को एक पूणतया नवान् स्तर प्रदान किया।

इसमें हस्तलिपि विज्ञान को पुनर्जन्म मिला। एक नया आधार भूमि और इसकी प्रणाली व्यक्तिगत कतिपय अच्छे अथवा बुरे लक्षणों को बताने के बजाय एक पूणतया मनोवैज्ञानिक भूमिका पर आधारित हो गई।

ग्राफोलोजी वं इस नवीन रूप में, भिक्वों की ग्राफोलोजी से बहुत अन्तर आ चुका था। इन विचारकों ने हस्तलिपि विज्ञान वं अनेक चिह्नों को (भिक्वों की

तरह) अलग-अलग आधार न मानकर संपूर्ण लिखावट व चित्र को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का आधार माना था। और यह सिद्ध किया था कि लिखावट एक संपूर्ण चित्र है जो कि कागज पर लिखने वाले ने स्वेच्छा से बना लिया है। लिखावट के चिह्न अलग-अलग अपनी महत्ता नहीं रखते और विभिन्नता में उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है। लिखावट के संपूर्ण अंगों का संयोग ही अपनी मौखिकता प्रकट करता है। यह लिखावट की अपनी निजी कहानी है और इस कहानी को ग्राफोलोजी व विद्वान लिखने वाले के व्यक्तिगत मनोविज्ञान का अवलोकन करने के लिए मनोवैज्ञानिक आधार मान लेते हैं।

नवीन ग्राफोलोजी में ऐसा ही हाने लगा है। इसमें संपूर्ण लिखावट का उसके विश्लेषण का मूलभूत आधार माना जाते हैं। लिखावट के विभिन्न चिह्न मूल आधार तत्वों के समयानुसार मान लिए जाते हैं। ग्राफोलोजी की प्रारम्भिक अवस्था में लिखावट के अनेक चिह्न व्यक्तित्व के मूलभूत तत्वों के प्रमाण माने जाते थे। नवीन ग्राफोलोजी में यह परिस्थिति बदल चुकी है। और अब ऐसे अनेक चिह्नों का महत्ता गौण हो चुकी है।

ऐसी पुस्तकें अभी मिलती हैं जिनमें ग्राफोलोजी की प्राचीन पद्धति का विवरण प्राप्त होता है। यह लिखावट के विभिन्न चिह्नों का महत्ता प्रमाण करती है। ये पुस्तकें पादरी मिका की प्रणाली पर ही आधारित हैं। जहाँ इन पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान भी उसी तरह से गन्तव्योक्त है जहाँ कि मिका की ग्राफोलोजी की विश्लेषण प्रणाली थी।

नवीन प्रणाली ग्राफोलोजी मिका में बाल में किया गए अनुसंधानों पर आधारित ज्ञान के कारण अधिकांश में भिन्न है।

नवीन ग्राफोलोजी व्यक्तिगत चरित्र की खोज के लिए मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में एक सम्भार विषय माना जाना लगा है। राजकीय परीक्षाओं के रूप में भी यह एक विषय स्थान प्राप्त कर चुका है। यूरोप एवं अमेरिका के अधिष्ठित साहित्य में इसके पर्याप्त उल्लेख मिलते हैं। ग्राफोलोजी जहाँ हस्तलिपि विज्ञान के एक नवीन मुँह में डाला गया है वहाँ राजकीय मोर्चा तथा डा. बागनर के नाम अग्रगण्य हैं। डा. रत्नाकर पापाजि जिमांग के विस्तार है। जहाँ हस्तलिपि विज्ञान के विषय पर जिमांग-सम्बन्धी अनेक अनुसंधान किये हैं। इनका कहना है कि लिखने का प्रणाली तथा गति बचकर जिमांग से ही मिलता है हाथ तथा उसकी बचकर साधनमान है। जैसा भाषा में इनके अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं। जैसा कि हस्तलिपि विज्ञान का मध्यम विकास हुआ। पिछले महायुद्ध के पहले वहाँ के कम-कम नौ महाविद्यालयों में विषय पर शिक्षा दी गई थी। इनमें शिक्षा पाने वालों में अध्यापन वक्ता चिकित्सक तथा मनोवैज्ञानिक भी थे।

महाविद्यालय में अध्यापन का पद ग्रहण करने वाले पापाजि की शिक्षा

था। यह आदर उनको हैम्ब्रग विश्वविद्यालय से मिला था।

डा० राबर्ट सौडक चकोम्लोवाकिया के निवासी थे। अनेक भाषाओं का ज्ञान होने के कारण उनका कद प्रकार की लिखावट का अच्छा ज्ञान था तथा इनका तत्सम्बन्ध गहन अध्ययन इनकी प्रकाशित पुस्तकों में उपस्थित है। इनका कहना है कि लिखावट पर व्यक्तिगत चरित्र के अलावा अनेक कारण अपना प्रभाव डालते हैं। लिखावट पर इनका असर बहुत अधिक रहता है। जैसे कि लिखने का सामान तथा हवा गरीब बीमारी की हाज़म आराम के शुद्ध रूप या न रख सकने का कमजोरी प्राथमिक पाठशाला में किया हुआ अभ्यास की कमी आदि। डा० सौडक ने हस्तलिपि विज्ञान के प्रवाह में बौद्धिक अवरोध देकर इसका रूप का विवृत होने में बताया तथा इस स्पष्टता गहनता तथा व्यावहारिक क्षमता प्रदान की। यह निश्चय है कि दिमाग के अलावा भी अनेक कारण लिखावट का प्रभावित करते हैं।

उनका दूसरा अनुसंधान लिखावट का गति की नाप करना था। इनके अनुसार लिखावट में ऐसे अनेक चिह्न हैं जिनसे तीव्रगति व्यक्त होती है। लिखावट के एक चिह्न भी हैं जिनसे अवरोध व्यक्त होता है। ये प्रसार एवं अवरोध के दाना चिह्न किसी भी एक लिखावट में प्राप्त हो सकते हैं। जहाँ एक व्यक्ति कुछ क्षणों में चलता होता है और वही पक्ष कुछ अथवा क्षणों में समय का परिचय देता है।

डा० सौडक का मुख्यतः कहना यह है कि हस्तलिपि द्वारा चरित्रांकन करने से पहले यह निरीक्षण करना परम् आवश्यक है कि लिखावट स्वच्छता से लिखी गई है। यदि ऐसा है तो इसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सफ़लता से किया जा सकता है। उन्होंने इस सूत्र को आज के जमाने में भी विधिवत उतारा है।

मनोवैज्ञानिक भाषाशास्त्र में विषय में श्री टर्नर का है। यह वास्तव में आस्ट्रिया के निवासी हैं परन्तु कागन्तर में उत्तरी अमेरिका में जाकर बसे गए। उनकी पुस्तक हस्तलिपि से मनोवैज्ञानिक बोध बहुत ही सचक और प्रभावशाली है। यदि किसी पाठक का हस्तलिपि विज्ञान की सत्ता में भ्रम हो तो इस पुस्तक के अध्ययन से उसे पर्याप्त प्रमाण मिल सकते हैं। इनके हस्तलिपि-सम्बन्धी लेखों से इस विज्ञान का कलात्मक क्षमता प्राप्त हुई।

एसा पना चलता है कि श्री टर्नर ने अपने अध्ययन एवं अनुसंधान का क्षेत्र अस्पताला का बनाया था जहाँ रागी पड़े रहते थे। उपचार के कारण राग दूर होने से गरीबों में गति का संचार ज्ञान से लिखावट भी तत्नुसार परिवर्तित होती रहती है यह उन्होंने देखा और इसके कारणों पर अपने विचार निश्चित किए।

जर्मनी फ्रान्स स्विट्जरलैंड इटली आदि देशों में हस्तलिपि विज्ञान की प्रगति बहुत आगे बढ़ चुकी है तथा प्रायः प्रत्येक प्रकार के लिखावटों



पर गोघ ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। अंग्रेजी भाषा में जिन पुस्तकों का भाषान्तर हो चुका है व प्राप्त है परन्तु यह निश्चित है कि इस विषय का अधिकांश धनानिर्वाह्य अभी जर्मन और फ्रेंच भाषाओं के बाहर नहीं आया है। यद्यपि अन्य व्यक्तियों ने भी इस ओर प्रयत्न का है परन्तु वास्तविक विपणन अभी भी जर्मनी और फ्रांस में ही है।

## मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के उदाहरण

लिखावट का आधार मानकर व्यक्तिगत मनावैज्ञानिक विश्लेषण करने का अम्माम करने के लिए तथा हम प्रणाली का भलीभाँति समझने के लिए अनेक लिखावटों के उदाहरणों की आवश्यकता पड़ती है। जिनमें योग लिखने हैं उनकी ही अनेक अनेक लिखावटें बनती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी मौखिकता का उदाहरण अपना लिखावट में प्रकाशित करता है। अतः लिखावट के द्वारा व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का अम्माम करने के लिए प्रारम्भिक अवस्था में यह निम्नान्त आवश्यक है कि जहाँ तक सम्भव हो सके विभिन्न प्रकार की लिखावटों का सम्झन कर लिया जाय। इन विभिन्न प्रकार की लिखावटों का विश्लेषण करने में प्रत्येक का स्थायी आकार विनिर्दिष्ट होता है। प्रत्येक भाषा का लिखावट का एक स्थायी रूप एवं आकार होता है। इसमें किमा भाँ मौखिक लिखावट का मिश्रण करने से उभयमौखिकता के चिह्नों का पहचान होता है। इसमें किन हो सकेगा कि अनेक लिखावटें स्थायी आकार से किन किन भागों में मिलती हैं और उभयमौखिकता का व्यक्तिगत अर्थ क्या है। अनेक लिखावटें एक लिखावट का दूसरा लिखावट में भी मिलान किया जा सकता है और उभयमौखिकता के लक्षण एवं उनमें उपस्थित मनावैज्ञानिक स्वतन्त्रता का भाँ पना बताया जा सकता है। उदाहरण के लिए बहुत सवत हैं जिनमें लिखावट का स्थायी आकार एवं इन्हें का तीसरा भाग है एक अक्षर इन्हें माप से बड़े हैं तो उभयमौखिकता है। यदि किसी मौखिक लिखावट में अक्षर इन्हें माप से बड़े हैं तो उभयमौखिकता है। यदि किसी मौखिक लिखावट में अक्षर इन्हें माप से बड़े हैं तो उभयमौखिकता है। यदि किसी मौखिक लिखावट में अक्षर इन्हें माप से बड़े हैं तो उभयमौखिकता है।

लिखावट कागज पर बना एक चित्र है। यदि आप एक अच्छे मुल्लिखन पत्र का नमूना देखेंगे तो आप पाएँगे कि कागज पर लिखने वाले ने अपने लिखे हुए चित्र को कागज के उपलब्ध स्थान के बीच में इस तरह से जमाया है कि उसके चारों तरफ से हाँटिए बराबर हैं। दक्षिण उदाहरण सम्बन्धी १। इस चित्र में बाँ

MAYA

GEORGE TOWN  
ALLAHABAD

January 24 1950

Dear Sir,

I am grateful to you for your letter  
and the copy of your paper on Psycho-  
Graphology I shall read it with great  
interest

Yours truly  
Gurumatha

पिन १

जीर दाह आर व हागिए स्पष्ट है। ऊपर और नीचे भी समान स्थान छोटा गया है। हमक चित्र का दखन से आभास हो जाना है कि लिखनेवाले व्यक्ति ने लिखना प्रारम्भ करने से बहुत पहले अपने त्रिमास में एक नक्शा बना लिया होगा कि जमुक स्थान मर पास उपस्थ है और इतना मसाला इस त्रिमास स्थान में मुताका भरना है। यह त्रिमास प्रकार से होना चाहिए कि त्रिमास स्थान का सब मुताका तथा सर्वोचित मसपयोग हो जाए। अब यह समझना बगिन नहा है कि सावधानी पूर्व निश्चय तथा कायकुशलता से प्रकार के लिखनेवाले व्यक्ति के प्रमुख गणना हैं। आग लिखावट के चिह्न से हम प्रकार के व्यक्तित्व के दूसरे धनात्मक तथा कृपात्मक लक्षणों का पता चलाया जा सकता है।

दूसरे उदाहरण मध्या २, ३, और ४ में देखेंगे कि वाँए तथा अय हाँगिए पहले चित्र के विपरीत हैं।

चित्र २

चित्र ३

चित्र ४

उदाहरण २ में वायाँ हाँगिया कम होना जा रहा है। यह स्वाभाविक-मानसिक प्रवाह में अवरोध का लक्षण है। व्यक्ति अपना आचरण प्रारम्भ करने के साथ ही सावधानी में आये बन्धन रखता है। इसमें डर है कि वह कहा भगनी नहीं कर जाए और चाहता है कि वह सावधानी से अपने उपरान्त साधना में ही अपना गुजारा कर सकने में सफल रहे।

उदाहरण ३ इसमें विपरीत है। इसमें वायाँ हाँगिया घट रहा है। हम इस लिखावट का पहचानते हैं। यह वापू हैं। काफी दृढ़ता और तेजी से लिखते थे। यह समझ में नहीं आया कि इनका पवित्रता के अन्तिम गान क्या वही घाड़ी-सी बची हुई गगह में भर दिए जान थे। देखेंगे कि पवित्र के अन्तिम अक्षर सामित स्थान में ही लिख दिए गए हैं। जब कि लिखावट के अय लक्षण जैसे कि तात्पर्य और लिखनी पर भारी जवाब प्रशस्ति करते हैं आन्तरिक गति और आवग दाय हाँगिए की कमी सूचित करती है भविष्य की योजना में पूर्वनिर्धारण का कमी। यद्यपि इसमें सर्वश्रेष्ठ धनात्मक लक्षण जो कि प्राप्त हुआ है वह है हानि निश्चय का। जिस वाय का प्रारम्भ किया है उस पूर्ण गति से पूर्ण करना इसमें दूर करने की आवश्यकता नहीं है। यह आत्मनिर्णय तथा कायक्षमता का प्रेक्ष उदाहरण है।

उदाहरण ४ की लिखावट में वाइ बार का हाँगिया फटता हुआ है। यह तत्त्व लिखावट के सम्पूर्ण चित्र का प्रभावित करता है। जम लिखनी आगे बढ़ता है और लिखनेवाले व्यक्ति का ध्यान अपने विषय का एक धरन में सन्तान हो जाता है। वायाँ हाँगिया घोर बार चौड़ा हान गगता है और फटने लगता है।

यह लक्षण लिखावट में गति तथा उदारता का है। इसमें सावधानी का मात्रा कम और असावधानी की मात्रा अधिक है। यह व्यक्ति अपने आचरण में अधिकतर भावना प्रधान है। भविष्य में क्या होगा यह नहीं माचना। जो होगा वह सामने आएगा ऐसा व्यक्ति बहुधा अपनी गति का अय नाग करता है जिसका कि सन्तुष्टि किया जा सकता था। फिर भी ऐसे व्यक्ति अपना मानसिक उदारता

उनके ऋणात्मक लक्षण इनकी अस्थिरता में हैं। ये स्वभाव से ही अधिक माना में अस्थिर हैं। उच्चगी स्वभाव के हैं। आत्मनिश्चय सकल्प समान आचरण की अनुमति देता है। किसी एक विषय में किसी इस प्रकार की परिस्थिति में जिसमें निश्चय मर्यादा नियम दृढ़ता आदि गुणों की मुख्य आवश्यकता है वह व्यक्ति उपयोगी मिष्ट नहीं होता। ये कठिनाई का सामना नहीं कर सकते।

इस प्रकार की लिखावट में समानता एवं असमानता इनकी गति में भावुक आवृत्ति एवं नित्य नियम इनके सदगुणों में सकल्प एवं निश्चिन्ता की माना गया है और कितनी है इसमें विरोधता क्या है यह सब व्यक्तिगत लिखावट के अर्थ चिह्न से व्यक्त होता है। इसके लिए लिखावट का व्यक्तिगत निरीक्षण एवं मनावधानित निराकरण अधिक सूक्ष्म रूप से करना आवश्यक हो जाता है। इस परीक्षा के नियमों का उल्लेख हम आगे चर्चा करेंगे।

उदाहरण सख्या २ में हागिए वाइ आर सरीण है। बहुत-से लोग वाइ आर का हागिया छोटने ही नहीं हैं जबकि यदि लिखना प्रारम्भ करते समय थोड़ा सा स्थान छोड़ते भी होता यह स्थान धीरे धीरे नीचे की पंक्तियों में कम होता जाता है। यह मावधानी का लक्षण की अधिक माना का एक संकेत देता है। यह मानसिक नियमितता का लक्षण भी है। इसमें प्रारम्भिक सम्पत्ति का अनुभवों का तथा प्रशिक्षण का प्रभाव इनकी यावहागि सरीणता में दृष्टिगोचर होता है। इसमें कर्मात्मक सुन्दर भावुकता प्रत्येक गति कल्पनाजनक विचार एवं वापसी का अभाव रहता है ऐसे विचारों में उनका सम्पर्क नहीं है। ऐसे व्यक्ति यह सोच ही नहीं सकते कि वह किसी अन्य प्रकार से आचरण कर सकते हैं। यदि अनुमति देता भी जाए कि वे स्वच्छता में आगे बढ़ सकते हैं तो वे मानने लगेंगे कि यह कम हो सकता है। उनमें स्वरक्षा की भावना प्रधान है।

असम अपने विचार एक अपना भावना का दमन करने की प्रवृत्ति सक्रिय होती है। उस लोग अपना विचार की निडरता नहीं चाहते। पाग होत हुए भी दृढ़ता नहीं चाहते। अपने हाथ को रोक रहते हैं। बिना चर्चा किए यदि काम शुरू सकता है तो घर से बाहर निकलना नहीं चाहते। हिचकिचाहट आरम्भ विस्वाम की कमा डर अविश्वास आदि गुणों का मानवानी के रूप में प्रदर्शित करना चाहते हैं।

एसा व्यक्ति अपने यावहारिक आचरण में किसी भी प्रकार से आगे बढ़ने में पहला बार मानता है कि किंचित्ना है और आगे बढ़ने में उठान से दूर जाता है। यदि किसी व्यक्ति में जान बूझ जाए तो अच्छा है। इस प्रकार की आन्तरिक भावना उस व्यक्ति का व्यक्तिगत भूमिका में सन्तुष्ट होती है।

लिखावट के अर्थ गुणों में व्यक्तिगत आचरण के भी इसी प्रकार के सन्तुष्टि दिखाना आवश्यक है। व्यक्तिगत निरीक्षण के लिए। जमा कि बाएं ओर हागिए का

न होता बाइ आर का हागिया छोरा हाना अथवा बाइ आर का हागिया छाग  
हाना जाना ठपक गिय ठुए गगन व्यक्त करता है। कम साध-माध हो सकता है  
कि गिन हठ अथर छोटा हा पमिया के रोचक स्थान गान और बीच के स्थान भी  
यम प्रयाग किय गए हा। यह गिवाव भूतन मकाण प्रकार की होगा। जिनम  
गिन वारा अपनी स्वानात्रिक प्रवृत्तियों के कारण अपने आगे बढन वा गाय का  
रोचन गिन विषय है। इस प्रकार का मकीण व्यवहार बहु अपन अय नपन  
वानावरण म करता है। इस प्रकार के व्यक्तियों के साधन के गिन ममाग बढन कुछ  
मिथ्या परन्तु और किसी भी प्रकार का महायना प्राप्त हो सकता सम्भव नहा है।

समाज समन प्रकार के व्यक्ति हान हैं और समय-ममय पर नन सब  
प्रकार के गणा मे एक-दूसरे का मिगन हाता रहता है। समान वति वा लोग  
मिग बढे हैं। परन्तु जिन व्यवस्थापक का इन सब लोगों के काम लना हाता है  
बहु न गान की मनावृत्तियों का आभास पा कर इन यथाचित व्यवहार करत  
हुए अपने अभिप्रेत को प्राप्त करन में समथ हो सकता है।

उत्तर प्रवृत्ति के व्यक्तियों में भावुकता प्रधान हान सब भावना की मात्रा  
अधिक होती है। इनमें स्व-उत्तर व्यवहार करन म कल्पना हास्य विना भोजन  
मत्री की भावना वारम्परिक प्रेम-व्यवहार सामूहिक सम्प्राप्ति की मात्रा  
अधिक रता है और एम व्यक्तियों के साथ म मनारजन अधिक हो जाता है। इनका  
गिवावट म रचनात्मक और चत्वान लक्षण यगि गत हैं तो निश्चय ही ये व्यक्ति  
समय परन पर चाही दर के गिन अपनी सम्पूर्ण गक्तियों का एकाग्र करके अपन  
गगन के आगे अग्रम हो जात हैं। परन्तु गगन म काम करत रहता बढन समय के  
गिन अथवा एक जगह एक विचारधारा पर एव हा लक्ष्य पर जम रहना इस  
प्रकार के व्यक्तियों के गिन किमा प्रकार म भा सम्भव नहा गता। एम व्यक्तियों  
का वाचा घटा काम शेष चाहिए। इससे विपरीत मित-व्यथिता का अपनात वा  
व्यक्ति स्वभाव म हा अपना लगन की पक् रहत हैं और अधिक स्थिरता व्यक्त  
करत हैं। मित-व्यथिता मावधाना मायमना का मगना के अय लगन भी  
उनका गिवावट म पाय जाए ता उनका व्यक्तिव और अधिक स्पष्ट हो गता है।

इस प्रकार के व्यक्तियों मनावनानिक विच्छेपण म हम दखत हैं कि  
व्यक्तिगत प्रवृत्तिया म प्राथमिक सम्भारा म भूत विभिन्नता की प्रधानता रहता  
है। जिन गगन हैं उननी तरह के हैं। माटे तीर से उनका वर्गीकरण कर लाजिए  
सामाजिक राजकीय तथा व्यापारिक परिस्थितियों म सब प्रकार के व्यक्तियों का  
उपयोग हाता है और अधिक अच्छे मनुष्याग हो जान के गिन अनेक पलों के गिए  
भिन भिन प्रकार के व्यक्तिव वा व्यक्तियों का चुनाव किया जाता है।

व्यक्तिगत प्रवृत्तियों की छानबान में विना मावधाना का आवश्यकता  
हानी है। एम पना पर नियुक्ति के गिन जिनमें प्रमाणन मायता प्रबध मायता,

योजना की प्रवृत्ति नियम पाठने की शक्तता आदि अनेक सख्त योग्यताएँ  
परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए अनिवार्य होती हैं।

ऐसी प्रवृत्तियाँ जिनमें स्वाभाविक सम्पीडना मानसिक एवं भावक स्थिरता, सफल की दृष्टि मावधाना स्पष्टता जगन आदि पुष्ट लक्षणा की अधिपता रहती है सुयोग्य व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। एम योजना के समावेश से व्यक्ति महान बनता है जिससे विश्वास उत्पन्न होता है। प्रगामन में शक्ति का संचार होता है। एम व्यक्तियों से महात्मन प्रगामन सच तरह की कठिनाइयों का मुकाबला करता हुआ अपने गन्तव्य मार्ग से अपने निर्धारित मिट्टानों से व अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता।

योजना के विचार विमर्श की अवस्था में विभिन्न प्रकार के व्यक्ति अपने अनुभव के अनुसार एक अपनी आंतरिक शक्तियों के अनुसार अपनी गति प्रदर्शित कर सकते हैं। क्या उचित है क्या अनुचित है क्या आवश्यक है क्या होना चाहिए तथा क्या नहीं होना चाहिए आदि का विमर्श किया जा सकता है किसी एक योजना का निर्धारण करने के लिए। इस अवस्था में कल्पना की उड़ान को स्वतंत्रता है।

परंतु योजना को क्रियावित करने में परिस्थिति बाध जाती है। एक बार कार्यक्रम निर्धारित हो जाने के उपरान्त उस कार्यक्रम का कार्यावित कर

देखा जीया दा लिख गा

चित्र ५

Ramayan is the story of Ram  
and of Rams fight against-

Piare Mohan

चित्र ६

Jawaharlal Nehru

चित्र ७

५५ नवम्बर १९४७

Varanasi, India

चित्र ८







## पित्र २ अ

लिखान के लिए हट निश्चय एक लक्ष्य लगन एवं अनवरत उद्योग की आवश्यकता हानी है और काम को केवल एस व्यक्ति सम्पूर्ण सफल एवं सम्पन्न कर सकते हैं जिनकी सक्रियता जसा कि ऊपर कहा जा चका है स्वभाव सही स्थिर लक्ष्यपूर्ण एवं गतिगाली हो यह नितान्त आवश्यक है। उदाहरण के लिए देखिए लिखावट सख्या ५ और ६। लिखावट सख्या ७ ८ ९ और १०। ये मुप्रसिद्ध प्रबंधका की लिखावटें हैं। अगल पृष्ठा में सख्या १४ से १७ तक के उदाहरण सब गुढ़ एवं ऊँचे षण की लिखावटें हैं इसी प्रकार की हैं। उदाहरण के लिए अनेक मुख्यवस्थित लिखावटें प्रस्तुत की जा सकती हैं जसे कि सख्या ५ से १० तक की लिखावटें हैं।

उदाहरण सख्या ५ स्पष्ट स्थिर सम्पूर्ण हट जोर बड़े आकार की लिखावट है। इसमें आवश्यकता से अधिक कोई अनिश्चित रेखाएँ पाइयाँ मात्राएँ बिंदु आदि नहीं हैं। जितना लिखना आवश्यक है उतना लिखा गया है परन्तु पूरा आत्म विश्वास से निश्चय से। ऐसा व्यक्ति सस्कार से ही नतिक है और अपन आचरण से उसकी गति एवं क्षमता से पूजनया परिचित है। जो वह चाहता है कहता है और करता भी है। इसमें सन्देह नहीं होना चाहिए। इस लिखावट की एक अन्य विशेषता इसका आकार का षण होना है। यह उसाह स्फूर्ति क्रियाशीलता तथा उत्तरता का द्योतक है।

उदाहरण सख्या ६ भी ऐसी ही एक स्पष्ट जोर स्थिर लिखावट है। इसमें पाँचवें उदाहरण से प्रबंधकारक साम्यता अधिष्ठ है। अक्षरों का आकार मध्यम है जसा कि आग्य लिखावटों का होता है। गले व बीच का स्थान भी आवश्यकता अनुसार है अधिक षण नहीं है। अक्षरों व ऊर्ध्वगामी तथा नीचे जान वाले भाग भी मम हैं। न अधिष्ठ व हैं और न अधिष्ठ छोटे। इस लिखावट का मवश्रद्ध आग्य इसका मम स्थान है। यह एक स्वच्छ लिखावट होते हुए भी लिखावट के नियमों का सख्त में पालन करता है। यह स्थिर वाचक व्यक्ति की अपार आंतरिक गति तथा उसका मयाजित व्यवहार प्रदर्शित करती है। ऊपर से नीचे आने वाला रत्नाम्रा म व है। स्थाना में प्रवाह है परन्तु मुमामित जोर मुख्यवस्थित। लिखावट व छात्र चिह्न तम कि बिंदु आदि भी ययाम्यान बट हुए हैं। यह आत्म व स्वावम्भ स्थिर क्रियाशीलता धन हनता मुयाजित सामाजिकता का एक वन हा न्ययागा तथा अनुकरणोप उदाहरण है। एसा स्पष्ट जोर मुख्यवस्थित

लिखावटें स्वन उच्च आत्म का आभास देनी हैं।

उत्ताहरण ७ का लिखावट म प्रायः हम सभी परिचित हैं। इस स्पष्टता और शक्ति में मायापाग परिपूणता है। वास्तविक प्रदान की भावना है। जसा मैं हूँ वसा ही लोग मुझे देखें। लिखावट का काद भा अन्तर अगुद्ध और अपूण नहीं है। प्रत्येक रेखा तथा अक्ष स्पष्ट और पूण है।

हर महान व्यक्ति म कुछ विशेष गुण होते हैं जिनके कारण ही वह महान बनता है। महानता के ये गुण विनाप छान्नी छान्नी घटनाओं म प्रत्यक्ष होते हैं। इसका उत्ताहरण हम माननीय पहिन जवाहरलाल नेहरू के जीवन चरित्र स मिलता है। इसका उत्ताहरण प्रस्तुत है

‘ वह हिन्दुओं के इस विश्वास को पूर्णतौर स समझे हुए हैं कि यह कम भूमि है कम ही के लिए जन्म हुआ है भोग के लिए नहीं। कभी-कभी यहां तक देखने में आया है कि जब उनके आनन्द भवन म कांग्रेस कमेटी के जलस हुए और उन्हें यह मालूम हुआ कि इसमें उनकी कोई खास ज़रूरत नहा है तो वह मन्वरों की साधारण सेवा म ही लग गए। काम करते रहने का प्रबल विषामा उनके हृदय म है। एक मिनट भी बेकार बटना इनके लिए असह्य है और एक क्षण भी आलस्य म नष्ट कर देता महापाप है। दिन का छोटे स छोटा काम भी आप इन सावधानी गौर और गम्भीरता के साथ करते हैं माना वह किसी राष्ट्र के भाग्य का फसला करते हों। अगर आप एक छोटा सा पत्र भी लिखते हैं तो भी यह देखते हैं कि उसका अक्षर प्रक्षर ठीक है, और कोई पाई या बिन्दु छूट तो नहीं गया। अपना मिद्दात है कि जा अपने जीवन की और रोजाना की छोटी छोटी बातों म और कस्त-य-पात्रन म सावधान उद्यमशील और उत्साही हैं वही मनुष्य कहलाने योग्य है। जा लाग यह समझत हैं कि छान्नी छोटे कामों म इतनी छान्नी बोन या सावधानी करने की क्या ज़रूरत है जब कोई बड़ा और उत्तरदायित्व पूण काम आया तो सावधानी कर ली जाएगी व बड़ा गलती करत हैं। जो लोग छोटी बातों म असावधानी करते हैं उनके सामने बड़ी बातें आती ही नहीं और अगर आती भी हैं तो उनमें उह सफ़रता नहीं मिलती। प० जवाहरलालजी को आप छोटे-से छोटे कामों म भी उनका ही सावधान और उत्साही पाएँ जितना बड़ कामों में।

(मायुरी, कार्तिक ३०६ तु० स० वय ८ खण्ड १, सख्या ७ में)

पंडितजी के जीवन-यात्रा म उनके विषय म जा कुछ भी धारणा रही है और आज उनके पीछे भा लोग की जो कुछ धारणाएँ बन गई हो पंडितजी वास्तव में ऐसे ही हैं जिसका उत्ताहरण उपर लिया गया है और जिनके मुन सर्वाधिक प्रभावित किया है। उनकी लिखावट तथा जीवनी म सन्तुष्ट के अभाव का प्रान ही दृष्टिगोचर नहा होता।

पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र को जसा कि हम उनसे जानते हैं उदाहरण ६ म पाते हैं। बहुत ही स्पष्ट सादा प्रत्यक्ष बहुत ही अच्छी तरह सन्तुष्टि स्थिर और धारावाही लिखावट। ऐसी शुद्धता केवल उच्च मानसिक स्तर पर ही साहस तथा कमठता से ही प्राप्त होती है। उनकी प्रतिभा चतुर्मुखी है। उनकी हम विविध क्षेत्रों में पाते हैं। कवि राजनीतिक प्रशासक आदि। उनकी मानसिक गतिविधि एक सुलझ हुए विचारक की तरह सांस्कृतिक शुद्धता मानवीय सहानुभूति स्फूर्ति आत्मबल धन उनकी ऐसी ही व सम एव सन्तुष्टि दबाव और उसकी सीमित स्थिर प्रगति की अनेकानेक गतिविधियों से प्रसारित हैं।

मिस्त्री के सामने अनन्त ज्वार भाट जाते रहते हैं परन्तु उनकी गम्भीर शांत हसमुख प्रवृत्ति निरंतर सघन करते रहने में उनका साथ देती रही है।

श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन की लिखावट में भी यही गुण विद्यमान हैं।

सावधानी गम्भीरता योजना की शांत प्रवृत्ति प्रशासन तथा प्रबंध योग्यता का ध्यान आते ही सबप्रथम हमारे सामने सरदार पटेल का स्मृतिचित्र जाग्रत होता है। उनकी हम कुछ भूल-सा गए हैं। उदाहरण ८ में इनकी ओर मुलाहति कीजिए कितन घाट में और छोटे अक्षर हैं इनके जिनकी वाक्या बहुत ही थोड़ी सी भाषा में हो सकती है। परन्तु इनको हम लोह-पुरुष कहते थे और जब तक मनुष्य का इतिहास हमारे सामने आता रहेगा सदा ही हम उनकी सानी तलाश करते रहेंगे। अक्षर काम में छोटे स्पष्ट और स्थिर हैं। बहुत सोचा परन्तु थोड़ा कहा। जो कहा वह पर्याप्त है और वाक्यरूप में परिणत होकर ही रहेगा। इनके अनुसार अपने विचार भावुकता तक सांस्कृतिक शुद्धता लक्ष्य एव त्रियांगीलता का सुझाव रखना ही महान लक्ष्य-साधन की विधि है। यदि यह गढ़ और सत्य है तो अपनी योजना का सफरना में कोई गवा का कारण हा नहीं है। गुजराती और अप्रजी दोनों ही भाषाओं की लिपि में सरदार पटेल के गुण समान हैं।

सुभाषचन्द्र बोस की लिखावट-शैली सीधी वगुण सच्चाई और आत्म निश्चरता की है। यह उनका लिखावट में स्पष्ट है। बहुत ही भली भांति नियामित सूक्ष्म और गतिशील अक्षर उदाहरण सख्या १ में प्रकाशित हैं। यह लिखावट सब बोलती है साफ बताती है और आंतरिक गति के वेग से बोलती है। गतिशील लिखनी में स्पष्टता अक्षरों का पूर्णता सांस्कृतिक शुद्धता त्रियांगीलता का यह एक स्पष्टतम उदाहरण है। छोटे आकार की लिखावट अपनी जीवन गति का उपयोग बहुत ही लक्ष्यपूर्ण दक्षिण की वृत्ति प्रकट करता है।

चित्र १० में प्रसिद्ध विज्ञान राहुल साहू-यायन के हस्ताक्षर हैं। लिखावट वगुण है अक्षर स्पष्ट हैं। लिखावट लक्ष्य की तीव्रता प्राप्त करने की उत्कट इच्छा बताता है। साथ ही स्पष्ट और पूर्ण अक्षर हमें बताने हैं कि लक्ष्य का मामल लक्ष्य स्पष्ट है।

## व्यक्तित्व का विश्लेषण

ऊपर दिए हुए उदाहरणों में हमने हागिए से एक हान वाला लक्षण का वर्णन किया है। परन्तु आपन अनुभव किया होगा कि इन हागिया में व्यक्त होने वाले लक्षणों का कतिपय लिखावटों के अर्थ दूसरे लक्षणों का समर्थन भी दिया गया है। किसी भी बहानात्मक प्रयोग में किसी अर्थ एक चिह्न के ऊपर पूरा भरोसा करना प्रयोग की सफलता का ध्यानक नहीं हो सकता। उसका समर्थन किसी दूसरी तरफ से भी मिलना आवश्यक होता है। अब यह आवश्यक हो जाता है कि हम लिखावट में पाए जाने वाले अर्थ लक्षणों का ध्यान में ध्यान दें।

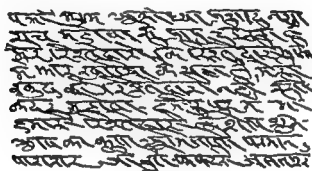
सम्पूर्ण लिखावट के चित्र को परामर्श का आधार मानकर हम व्यक्ति होता है कि लिखावट में हागिया एक महत्वपूर्ण लक्षण है। यह लिखने वाले की सजाजक क्रिया एवं वृत्ति का आरंभ सचेत करता है। परन्तु बहानात्मक नियम के अनुसार बदल इतने से ही लिखने वाले व्यक्ति की सजाजक एवं असजाजक कल्पना तथा क्रिया की अभिव्यक्ति माय नहीं हो सकती। अब इसका लिए हम लिखावट में अर्थ लक्षणों की खोज करते हैं। इन चिह्नों से एवं उनसे सांकेतिक व्यक्तित्व लक्षणों में हम अपने पूर्व प्राप्त लक्षणों की पुष्टि मिश्रता है।

वास्तव में हागिया रित्त स्थान का सूचक है और रित्त स्थान लिखावट के बीच में और भी हो सकते हैं। स्थान का विषय सोचते समय लिखने वाला अपने उपलब्ध स्थान का प्रयोग किस प्रकार करता है। सावधानीपूर्वक अथवा लापरवाही में। मितव्ययिता से अथवा अपव्यय से। सुस्थिरता से अथवा भ्रष्टता से? इस प्रकार का चरित्रगत विचारधारा अथवा वायनालना के लक्षण लिखावट के उन सब लक्षणों में मिलते हैं जिनका स्थान से सीधा सम्बन्ध है। अब कि हागिए अगला चरण पंक्तियों के बीच के छूट हुए स्थान और अगला के ऊपर और नीचे की मात्राओं के आकार से जिसमें बनाए हुए मात्राओं के चिह्न लिखावट की व्यवस्था नष्ट कर देते हैं। उदाहरण के लिए कह सकते हैं —

(१) नीचे की मात्राएँ जस ऊ की मात्रा इतनी लम्बी हो कि नीचे की लिखावट की पंक्ति की ऊपर की मात्राओं से ऐ ओ आदि मिल जाएँ।

(२) अथवा नीचे की पंक्ति लिखते समय ऊपर की मात्राएँ जस ई, ए, ओ आदि अक्षरों की मात्राएँ ऊपर की पंक्ति की नीचे की मात्राएँ जस कि ऊ की मात्राओं से उलझ जाएँ।

इस तरह की लिखावट जिसमें मात्राएँ एक-दूसरे से स्पष्टतः अलग-अलग नहीं हैं निश्चय ही लिखने वाले की सुलची हुई मानमिक व्यवस्था सूचित नहीं करती। देखिए लिखावट चित्र सख्या ११।



चित्र ११

एक लिखावट में चौड़े हागिय के लम्बाई का समायन अक्षर सारण एवं पंक्तियों के बीच में अधिक छूटे हुए रिक्त स्थानों से मिलता है। दूसरा समायन हमें अक्षरों के आकार से भी मिलता है। बड़े अक्षरों का समान (स्थायी आकार) में अधिक स्थान भर रहता है चौड़े हागिय तथा अक्षरों सारण एवं पंक्तियों के बीच में अधिक रिक्त स्थान छोड़ने के लम्बाई का समायन करत हैं।

छोटे सक्तीण सक्तीण-हात-हुए हागिय का समायन सक्तीण लिखावट और छोटे छोट अक्षरों में लिखी हुई लिखावट से स्पष्ट होता है।

एक लम्बाई का एक स्थान पर पाया जाना स्वाभाविक है। जो व्यक्ति स्वभाव में ही मितव्ययी है वह अपने प्रत्येक व्यवहार में समान आचरण करेगा। परन्तु जब लिखावट के चिह्नों के समूह में असमानता लिखी जाती है तो परिस्थिति विचारणाय हो जाता है। और किमा स्थिर निष्पत्ति पर पहुँचने के लिए लिखावट के अनन्त लम्बाई पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। जस कि चौड़े हागिय का लिखावट में छोटे आकार के अक्षरों का होना तथा सक्तीण स्थानों का पाया जाना।

इसके विपरीत लिखावट में किसी सजीव हाथिए के साथ फनी हुई लिखावट का पाया जाना, बड़े आकार के अक्षरों का पाया जाना तथा रिक्त स्थानों का अधिक प्रयोग किया जाना ही संभव है। इस प्रकार की परिस्थितियों में लिखने वाले के स्वाभाविक एवं अस्वाभाविक व्यक्तिगत गणना में द्वन्द्व का संभव मिला है। यह निश्चय होना कठिन प्रतीत होता है कि लिखने वाले व्यक्ति मुख्यतः किस प्रकार का बर्तन अपना रहे हैं।

लिखावट में मुख्यतः परम उपयोगी एवं स्वस्थ चिह्न है। यह लिखने वाले व्यक्ति की बुद्धि, आत्मबल एवं वायनालना के पुष्ट गणना का व्यक्त करता है।

इस प्रकार का मुख्यवर्णित लिखावट में हाथिए अक्षरों के आकार और, हाथ पकड़ने के बीच के छूट हुए रिक्त स्थानों, मात्राओं की गूँड़ बनावट तथा उनके आकार आदि लिखावट के समस्त चिह्न उपयुक्त रूप से बन रहे रहते हैं। इस प्रकार की मुख्यवर्णित लिखावट अपने स्थायी रूप का मयाचित अनुगमन करता है। इसमें लिखने वाले व्यक्ति की मानसिक गारोरेक मुख्यवर्णित एवं स्थायित्व का विशेषीकृत तथा उनका आपस में एक-दूसरे से सतृप्त स्पष्ट प्रमाण होता है। इसके अच्छे उदाहरण सख्या ५ में १० तक के उदाहरणों में मिले जा चुके हैं। हस्तलिपि विधान के मूल तत्त्व ग्रहण करने के लिए इन लिखावटों को ध्यानपूर्वक पुनः देखना आवश्यक है।

इस परिस्थिति का युवावस्था में तथा बाल्यावस्था में समान रूप से महत्व है। युवावस्था में ऐसा होना स्वाभाविक हो सकता है। इस अवस्था में मानसिक वृत्तियाँ परिपक्व हो सकती हैं। गारोरेक गक्तियाँ संतुलित हो चुकी होती हैं और उनका अनुलिप्त संचालन किया जा सकता है। बाल्यकाल में मानसिक एवं गारोरेक सामान्यता के कारण स्थिरता स्पष्टता, पुष्टता आदि वृत्तियों का संचार मयाचित माया में नहीं हो पाता है। अब यह स्वाभाविक है कि इस अवस्था में लिखावट में अस्वस्थता, टिप्पणीयता हो जो कि बाल्यकाल के स्वभाव की दानक है। यह मानसिक अपरिपक्वता है।

अब इस बात का प्रमाण दिया जाना चाहिए और जहाँ हम विषय की स्पष्ट मायना है, वहाँ हमें दिया भी जाता है कि प्रारम्भ से ही लिखावट के प्रयोग में ही स्थिर मुख्यवर्णित गूँड़ एवं संपूर्ण लिखावट का अभ्यास कराया जाता है। इस अभ्यास और प्रशिक्षण से निश्चय ही लिखने वाले को लिखने वाला अच्छा लिखावट ही नहीं मिलेगा साथ-ही-साथ अच्छे और बुरे का ज्ञान भी प्राप्त कर लेता है। क्या अच्छा है, क्या बुरा अच्छा नहीं है इसका ज्ञान भी कर लेता है। जीवनकाल में इस प्रकार का अनेक बारें जिनका कि हम बहुत ही छोटी समय पर छोड़ देते हैं ध्यान देने योग्य होता है। उनका संरक्षण करना भाग्य

चलकर युवावस्था में अधिकाधिक हानिकारक सिद्ध हो जाता है। छोटी छोटी बातों को ध्यान में रख मचना भी जीवनकाल की सफलता का परम अभ्यास है। इस तथ्य का आभास हम तब होता है जब हम युवावस्था प्राप्त हो जाने पर भी कतिपय पश्चिमियों की तरह अव्यवस्थित अस्थिर आचरण करते देखते हैं। उस समय भेद है कि समय निकट चुकन के कारण उनका कितना भी प्रचार से अपना खोया हुआ समय अब मुअवसर फिर से प्राप्त नहीं हो सकता।

छोटे आकार के अक्षर निश्चय ही थोड़ा और सङ्कुचित स्थान लेते हैं। हम लिखावट में और भी एक लक्षण है। वह लिखावट का बाई ओर का झुकना है। इसकी विवेचना हम आगे के परिच्छेद में करेंगे।

चञ्चल स्वभाव की पहचान लिखावट में गैरानुसंगिकता से होती है। जब लिखावट में कोई निश्चित व्यवस्था नहीं दिखाई देती पश्चिमियों ऊपर नीचे जाती हैं अक्षर अघटते और बिखरे हुए दिखाई देते हैं ता उसको पढ़ने वाले सहज ही समझ लेते हैं कि लिखने वाले व्यक्ति का मन स्थिर नहीं है। वह अपना ध्यान एकाग्र नहीं कर सकता। उसमें आत्मबल का अभाव है। अथवा वह अपने आत्मबल का प्रयोग कर सकने में असमर्थ है। देखिए चित्र संख्या ४ में दिया हुआ उदाहरण।

एक तरह की गैर-संगतता के कारण लिखावट में अक्षरों का झुकना होता है जो कि गैर-संगतता का एक लक्षण है।  
 शीघ्र ही - आगे - उम्मीद।

चित्र १२

just etc

fast friend etc sends

less with me etc is

चित्र १३

लिखावट संख्याएँ १२ और १३ विभिन्न होने हुए भी समान लगती हैं। एक व्यक्ति का मन हृद्य तथा भावना प्रधान होते हैं। उनके लिए भाव तरंग में बह जाना स्वाभाविक है। महत्त्व ही किन्ना एक विचार का धारा में उनका उमाह बह जाता है। परन्तु नियमित व्यवहार का आभास अब पदान्तर अभ्यास में जान में आता है। उमाह टंग पड़ जाता है। वह फिर कोई नई यादना बनाने में लग जाता है। एक व्यक्ति में मानसिक उपाय-मुखाय पत्रायन उपाय निराशा

द्वन्द्व, विचारधारा तथा आचार विचार में समानता का अभाव रहना है। य किसी एक वाय को मन लगाकर नहीं कर सकते। किसी भी एक विचारधारा का, विभा भी एक आदर्श का दृढ़तापूर्वक पक्के नहीं रह सकते। इस वृत्ति की समुत्पत्ति मनुष्य के व्यावहारिक जीवन में है। सामाजिक परिस्थिति ही अथवा व्यापारिक, राजनीतिक वातावरण ही अथवा औद्योगिक घर में अपनी स्त्री एवं बच्चों से व्यवहार ही अथवा इष्ट मित्रों से अपने नियम का पक्का होने की क्षमता अनिवार्य है। अपनी बात को जो विभा सके, उसका आदर सब जगह होता है। ऐसा व्यक्ति अपने लिए प्रत्येक वातावरण में विश्वासपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेता है। लोग कहते हैं कि अमुक व्यक्ति अपना मान का धनी है। जानते हैं कि वह अपना वचन पूरा करेगा कियल्गा नहीं। वचन निश्चलन का बहाना नही बनाएगा। किसी भी प्रकार के प्रलोभन उसको अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने में डिगा नहीं सकेंगे। वह पथभ्रष्ट नहीं होगा। उसका व्यक्तिगत सम्पन्न चाहे और कुछ भी हो परन्तु वह कम-से-कम अपनी बात का पक्का है। ऐसे व्यक्ति सामाजिक औद्योगिक राजनीतिक तथा किसी भी प्रकार के प्रशासन में ऊँचा स्थान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार से उनके व्यक्तित्व का भरोसा सबसाधारण जनता में बना रहता है। स्थिर स्वभाव वाले सुव्यवस्थित मानसिक योजना वाले व्यक्ति अपना प्रमुख एक आन्तरिक सम्भारता के कारण किसी भी परिस्थिति में हतात्माह नही होते। उनका आत्मबल मजबूत ही उनमें गति का संचार करता रहता है। इस प्रकार की गंभीर सुव्यवस्थित लिखावट का स्पष्ट उदाहरण हमारे आदरणीय राष्ट्रीय सरदार पटेल की लिखावट में सदृश ही प्रस्तुत रहा है। लिखावट संख्या ८ उनकी लिखावट का उदाहरण है। इस स्थिरता के सकेत हमको अब स्थिर एवं पुष्ट लिखावटों में भी मिलते हैं जस कि लिखावट संख्याएँ १४ एवं १५। ये व्यक्ति अपने व्यावहारिक क्षेत्र में सुव्यवस्थित चरित्र की महत्ता प्रमाणित करते हैं। उनका आन्तरिक गति देखते हुए ऐसा होना अनिवार्य है। चित्र संख्या ६ की लिखावट में भी यह उतनी ही गति से उपलब्ध है।

अव्यवस्थित एवं दुर्गम आरम्भकाल वाले व्यक्तियों की जब कभी अपनी असफलता का वास्तविक आभास होता है वे ऐसे हतात्माह हो जाते हैं जिससे उनमें जग सकना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है। इनमें एक विशेषता है कि ये पुरानी बातें बहुत जल्दी भूल जाते हैं। और किसी नवान कल्पना के जाग्रत हो जाने पर फिर से नवीन उत्साह के साथ खड़े हो जाते हैं। फिर एक नई राह आई और वह चले।

अव्यवस्थित लिखावट जब छोट आकार की सजीव ग्यान में और गिचपिच होती है तो वह व्यक्तित्व के बग़्हीन अस्वस्थ सम्पन्न व्याप्त करती है। दत्तिए लिखावटें सं० ११ १२ १३। इन लिखावटों का दर्शने से पता चलता है



असम्भव था। नित्य ही उपचार चला रहता था। ऐसा मानूँ नहीं होता था कि यह अधिक कष्ट सहन कर सकते हैं अथवा कोई भी काय नियमबद्ध तथा मयाक्रम कर सकता है। चला गारारिक गिथिलना में सहज ही गिमाग और स्नायु कमजोर पड़ जाते हैं। परन्तु इनकी लिखावट को देखिए कितनी स्थिर हैं इनकी रेखाएँ। अक्षर मोतिया की तरह पिरोय हुए हैं। कारण ? उनकी आन्तरिक शक्ति बहुत ही बलवान थी जिसके संचार से वह अपनी महान गारारिक व्याधि का प्रभाव अपने मानस पर नष्ट होने देते थे। उनकी गान्त एव सदायवहार स्थिर सहन गीयता की शक्ति उनके स्थिर एव सदाचरण की भूमिका में सत्त्व श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करती रही है। इस गान्त-सरल सहनगीयता तथा आत्मिक दृढ़ता के उद्भव से जो दाप प्रकलित हुए हैं वे सतिष्ठ हान हुए भा भारताय सास्कृतिक एव साहित्यिक क्षितिज को असोमित काल तक स्थायी रूप से सुप्रकाशित करते रहें।

यह लिखावट समगति चमक आती है अतः उभयमुखी प्रवृत्ति व्यक्त करती है।

ऊपर गिथ गण परिचय से हस्तलिपि विज्ञान का एक महत्वपूर्ण मूल तथ्य सत्य ही सिद्ध होता है। जसा कि प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है कि हस्तलिपि का सीधा सम्बन्ध लिखनेवाले की मानसिक अवस्था से है। हस्तलिपियों का निरन्तर परीक्षण करते रहने से अनुभव होता है कि स्वस्थ व्यक्ति जिसका शिल्प और गिमाग मजबूत है हाथ जमाकर लिखता है। जिस तरह उसे अपने गारारिक अंग पर तथा इच्छा पर अधिकार है उसी तरह उसको अपनी रेखनी पर भी अधिकार है। बद्धावस्था से अथवा किसी अन्य प्रकार से गरीर में कमजोरी आने से उसका गरीर गिथि हा जाना स्वाभाविक है। हाथ काँपने लगता है। लिखने में भा हाथ काँपने के कारण लिखावट बिगड़ जाती है। यकिनिया की स्वरथ तथा ब्रामारी की हात्ता में गिथी गई लिखावट का तुलनात्मक मिलान से और बिबचनात्मक जाँच से ऐसा सिद्ध हो चुका है। और यह मूल तथ्य फिर भी परीक्षण तथा अनुभव के द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।

परन्तु श्री गियारामगणजी गुप्त की गारारिक अवस्था तथा उनकी लिखावट में कोई ऐसा समानता नहीं है क्योंकि उनका शक्ति उनका मानसिक अवस्था पूरनया स्वस्थ था। यह उनके जन्म दशावस्था बाधे व्यक्ति में कब-कबनाय दृढ़ आन्तरिक शक्ति का गारा हा प्राप्त हो सकती है। यह तरह से हस्त लिपि विज्ञान का शक्ति यह लिखावट अन्तीय उदाहरण है। दृढ़ निश्चय कष्ट सहिलता नियम-शान्त का क्षमता चचनात्मक कल्पना कायगान्त तथा स्वच्छता का एक सत्त्व उदाहरण विरल है।

डा० बदायनसास चर्मा की लिखावट का उदाहरण चित्र १६ में दिया

गया है। यह एक दूसरे श्रेष्ठ प्रतिभावान व्यक्ति का जाग्रत प्रतिनिध्व है।  
इसका मौलिकता उदाहरण सन्ध्या ५ ६ व विपरीत है, परन्तु अनुठा है।

### चित्र १६

इस लिखावट का महत्वपूर्ण लक्षण लेखक की धाराप्रवाह गतिशीलता है।  
लेखनी अपना यात्रा प्रारम्भ करते ही मुगमता में परन्तु तीव्रगति में बहती है।  
अक्षर मिल-जुट हैं। साथ ही गिरा रेखाएँ भी बननी चली जाती हैं। मात्राएँ,  
विसर्ग आदि भी आगे का चलने हुए मात्रा में हान हैं। ये सब लेखनी की तीव्रगति  
का सूचक लक्षण हैं। अतः वहिमुखी प्रवृत्ति का वय में आन है।

इस प्रकार का लिखावट मुख्यतः आन्तरिक उत्कट प्रेरणा अनवरत लगे  
अपने विचारा को काय-रूप में परिणत करने का उत्तम कल्पना उमका साकार  
कर दिखाना निर्भीकता आदि रचनात्मक आत्म का लक्षण प्रकट करती है। ऐसी  
प्रवृत्ति गति का समझ को भी ऐसी समस्या उत्पन्न नहीं हो सकती जिसका मुक्त-  
ज्ञान के लिए उस कठिनाई का अनुभव हो। ऐसी कोई भी अडचन नहीं है जिसमें वह  
पार करने का साहस न कर सके। ऐसी कोई उत्पन्न नहीं है जिसे तुरन्त और  
मफ्यतापूर्वक मुक्तमान की उसमें समय न हो। जिस समय समस्या उत्पन्न होगी है  
उसका समाधान भी साथ-हा-साथ स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत हो जाता है।

वास्तव में इस प्रकार के समय व्यक्ति कठिनाइयों का सामना करने में ही  
आनन्द प्राप्त करते हैं। नये-नये रचनात्मक कार्यों का उठाना और उनको मफल  
कर दिखाना ओज उदाग और परिश्रम में समाज में परस्पर व्यवहार में अन्य  
व्यक्तियों का संचालन करना नेतृत्व करना परिस्थितियों से सघष करना,  
उन पर विजय पान के लिए यह सब ऐसे पराक्रमी व्यक्तित्व के लिए महज  
व्यवहार है। इस गतिशील लिखावट में तीव्रगति होने हुए भी स्थायी स्तम्भ

चाहता बहुत कुछ है परन्तु अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्ति का सन्तुलन तथा मुख्यवर्धित उपयोग न कर सकने का कारण अपने लक्ष्य को ध्येय एवं स्थिरता से पकड़े नहीं रह सकता मानसिक दृढ़ता कष्ट-सहिष्णुता इनके व्यक्तित्व का प्रभावपूर्ण तत्त्व नहीं है।

सामाजिक व्यवहार में यह लक्षण बहुत ही सरस हैं। उनकी रंगीनियाँ अपने सहायगियों को सदा ही विनोदमय एवं आकर्षित रखती हैं। इनकी मिलन-सरसता उत्तम है। बात इतनी है केवल कि यह अपनी किसी नवीन कल्पना के सागर में उद्यम पुष्प न हो रही हो। इनकी चित्तवृत्ति किस समय सगमप्रिय अवस्था में है यह वास्तव में विचारणीय विषय है। इस त्रिखावट में जो वनावटोपन दिखाई देता है वह वास्तव में इनकी स्वाभाविकता है। जो प्रयाम दिखाई देता है वह वास्तविक है। इतना तीव्र भावुकता प्रधान व्यक्तित्व सहज ही दूसरे लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है।

इस तरह से त्रिखावट के भौतिक चिह्न सामान्य अथवा जानि-सम्बन्धी प्रतिरूप तथा विविष्ट प्रतिरूप—उनकी पहचान उनकी स्थिरता की परत उनकी भाव उनका योगायोग अनेक प्रकार की मौलिक त्रिखावट का सूक्ष्म पयवेक्षण एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने से ही प्राप्त हो सकता है। इसका अभ्यास आवश्यक है। त्रिखावट के प्रतिरूप स्पष्ट पहचान में आने से अनेक यत्नित लक्षणों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी होने लगता है। लिखनेवाले का व्यक्तित्व स्पष्ट होने लगता है। अभिरुचि और अभ्यास किसी भी वैज्ञानिक क्रिया को मानवीय मनीषी और विश्वासजनक रूप देने के लिए आवश्यक हैं।

व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक लक्षण—मनुष्य की मूल प्रवृत्तियाँ उसके सत्कार सावहारिक परिस्थितियाँ—साहित्यिक सामाजिक राजनीतिक अथवा आर्थिक—अनेक हैं। वह भाति भाति से अपनी सम्पूर्ण युक्तियाँ से जितना कि उसमें लिए पयाप्त है अपनी व्यक्तिगत सुगमता के लिए आचरण करता है। उसमें उम सफ़रता मिलती है और कभी नहीं मिलती। बहुत ही सुलभ हुए व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके देखा। परन्तु विरोधता यह पाई कि प्रत्येक व्यक्ति में अनेक स्वाभाविक रूपाका समावेश है। ऐसा विरल ही कोई व्यक्ति होगा जिस किन्हीं एक विषय रूपाका में सकेन्द्र किया जा सके। प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका में अनेक रूपाका का योग पाया जाता है और यह योग अपना एक अनूठापन उत्पन्न करता है। प्रत्येक व्यक्तित्व का उत्तराकरण में इन रूपाकों के अनूठे योग में जहाँ क्रियाशाली शक्ति गुण निहित हैं वहाँ हमने रचनात्मक अभिरुचि का दान होता है। जहाँ निष्क्रिय गुण मिलते हैं वहाँ रचनात्मक उद्योग के चिह्न प्राप्त नहीं होते। जब कि व्यक्तित्व में बहिष्कृती प्रतिभा प्रधान हो जाए यदि उसमें स्थिरता भी है तो ऐसा व्यक्तित्व अपने वैशिष्ट्य प्रतिभा के गुण का सदुपयोग कर सकेगा।

उपरोक्त भावमय कल्पना मूल आत्मा, प्रकाशित स्फूर्ति उभय नृत्य को मुक्तिपूर्ण, सुप्रवाहित और सुख दै। उनके उद्यम का लाभायक बना दै। यदि यही बहिर्मुखी व्यक्ति का लक्षण अस्थिर चलायमान व्यक्ति ॥ पाया जाएगा तो वह उनका मनामाया म मदव उभयल-पुण्य बनाए रखगा। एका व्यक्ति कभी इधर कभी उधर भ्रमता रहगा और उस तरह म बहिर्मुखी व्यक्ति का लक्षण आस्थिर स्वभाव क साथ सद्गुण ही जाना है वह अस्थिर स्वभाव क साथ दुर्गुण अथवा स्वभाव का कमजारी कहलाएगा।

इस तरह स मित्र-मित्रता और उभय विपरीत उभारता भी व्यक्ति का प्रमुख लक्षण हा सकन है। य दूसरे लक्षणों क भाग में क्रियाशाल और निष्पक्ष गुणा का प्रमाणित करत है। जिस व्यक्ति का ध्यान केंद्रित रहता है वह अपनी गतिपथों का मंचय करता है। यदि उभय नतिवृत्ता का साममस्य है तो वह कृपण न हाकर आवश्यक्ता पहन पर अपना सचित्त गतिवृत्ता का व्यय करने मे उदारता प्रमाणित कर सकता है। उदाहरण-हृत्प व्यक्ति यदि आवश्यक् और अनावश्यक् परिस्थितियों का तुलनात्मक पहचान करन म असमर्थ होता है तो वह अपना सचित्त गतिवृत्ता का कथा व्यय करके उनका गीम ही मष्ट कर डालता है।

मानव-स्वभाव म रुचि द्धान, गुण अवगुण आदि का विश्लेषण करन म सम्पूर्ण लक्षणों का पक्ष-पक्ष आवश्यक् होता है। लक्षणों क विभागी भाग को अच्छा या बुरा कहा जा सकता। आ स्वभाविक लक्षण एक व्यक्ति म अच्छा हा सकता है कभी दूसरे व्यक्ति म बुरा हा सकता है। अत व्यक्ति का रूप चित्रण क लिए उसके सम्पूर्ण व्यक्ति का अध्ययन आवश्यक् है। गग कहन है कि अमुक लिखावट अच्छा है अथवा अमुक लिखावट अच्छा नहा है। यह माधारणतया लिखावट की सुन्दर बनावट समझकर हा कहा जाता है। लिखावट अच्छी है अथवा अच्छी नहा है, वास्तव म इसका पता उभय भौतिक चिह्नों का रचना से लगता है। कुछ लिखावटें पढ़ने ॥ बहुत अच्छी लगता हैं। उनमें सामान्य सफाई और सम्पूर्णता पा जाती है परन्तु हृत्पि विधान की दृष्टि से वे निर्जीव हाती हैं। य सुन्दर क उद्देश्य से सावधानी से बनाई नुई हाता है स्वभाविक गति म नहीं। इन लिखावटों म कल्पना, प्रेरणा उभय अवलक्षण, जाकि व्यक्ति का प्रधान संचालक तत्त्व है, प्रमाणित नहा हात। अत लिखावटें आ रचना म उभय सुन्दर नहा हैं मूल निराशा से व्यक्ति का अनेक जीवनोपयोग लक्षण प्रकाशित करता है। य स्वभाविक लिखावटें हैं, जसा कि लिखन का व्यक्ति सजाव है सजग है और स्वतंत्र आचरण करता है। लिखावट के विभिन्न उदाहरण देखत रहन स इन लिखावटों का पहचान जानो है।

तथापि हृत्पि विधान का उपयोग करत हुए यह आवश्यक् होता है कि लिखावट की विधि विज्ञा की पहचानका का जाए उनका मनावनानिक लक्षणों

का तार्किक विवेचन किया जाए और उन विविध लक्षणों का समन्वय करते हुए व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक जन्म किया जाए। इस पराशा में हस्तशिल्प विज्ञान का आधारभूत तत्त्व उपयोगी सचन रहे हैं। इन सचनो से मनावैज्ञानिक मनुष्य तथा समाज से मानव स्वभाव का चित्रण सुगम हो जाता है।

लिखावट से मनावैज्ञानिक सचन—प्रत्येक व्यक्ति का अपनी लिखावट मौखिक होती है। भावना गर्भित मानसिक अवस्था का अनुसार अपनी सक्रिय एवं निष्क्रिय आचरण करती है जिससे समय-समय पर यह लिखावट बदलती हुई प्रतीत होती है। हम इस बदलती हुई लिखावट को पहचान सकते हैं। इसका कारण यह है कि प्रत्येक लिखावट में कुछ स्थायी चिह्न होते हैं। हस्तशिल्प विज्ञान में पहला नियम लिखावट के पूरे चित्र का निरीक्षण करना है जिसमें उपलब्ध स्थानों का सावधानी से विश्लेषण हुआ उपयोग अथवा अभावधाना दिखाई देती है। हमसे लिखन का दृष्टान्त प्रोत्साहित सोम्यता एवं सांस्कृतिक संस्कार आदि भी लिखावट में हैं। दूसरा नियम लिखावट के स्थायी चिह्नों की पहचान तथा उनका निरीक्षण है। ये चिह्न दो प्रकार (प्रतिरूप) में बांट लिए जा सकते हैं। एक सामान्य अथवा जाति सम्बन्धी प्रतिरूप जो लिखावट का स्पष्ट होना मानने और भेद लिखावट हाना तेज गति से लिखा हुआ लिखावट आधारतल परिन्यास और गिरोरेखाएँ हाना न होना आदि। दूसरे विविध प्रतिरूप जो लिखावट का निरुद्धारण लिखावट का छोटा या बड़ा आकार लिखावट में मात्रा या 'नूय' विमर्ग पाई आदि में सामान्य अथवा असामान्य आकार और उनका विविध बनावटें आदि हाना अथवा न होना।

सामान्य जाति सम्बन्धी प्रतिरूप और विविध प्रतिरूप मिलने भी हो सकते हैं। यह प्रत्येक लिखावट की बनावट पर निर्भर है।

लिखावट के इन प्रतिरूपों से व्यक्तित्व के विविध लक्षणों का मनावैज्ञानिक रूप मिलता है जो स्पष्ट अथवा अस्पष्ट स्पष्टता प्रदर्शित करते हैं। परन्तु व्यक्तित्व में स्पष्टता का साथ-साथ और भी बहुत-सा गुण हो सकते हैं जो कि किमा भा व्यक्ति का बौद्धिक भावना आत्मज्ञ और जनन विषय क्षणों से प्रभावित रहेंगे। इनकी पहचान के लिए लिखावट के अनेक चिह्नों की परख और उनका समीक्षा करना आवश्यक होगा। जगत् में चौथे अथवा सवाण शिल्प लिखावट के बीच में छोटे हुए रिक्त स्थान मन्त्रों लिखावट जगत् के बड़े आकार अपनी का अधिक दबाव कागज पर अधिक स्थान का प्रयोग आग की ओर झुकना हुई लिखावट गिरावट याचना अथवा छाड़ जाना अथवा एक-दूसरे से मिलन जाना अथवा उनके प्रत्येक अंग का अलग-अलग लिखा जाना आदि। इस प्रकार से लिखावट का ज्ञान के चिह्नों का मनावैज्ञानिक विश्लेषण तथा उनका मापदण्ड बनाना संस्कृत प्रवर्तनों मनावैज्ञानिक मानसिक मौखिकता आदि विविध

व्यक्तिगत लक्षण प्रस्तुत करता है। इसमें लिखने वाले व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक स्वाभाविक तथा मौखिक व्यक्तित्व प्राप्त होता है। इस तथ्य का विविध उदाहरण पिछले अध्याय में प्रस्तुत लिखावटों से प्राप्त मनोवैज्ञानिक चित्रावन द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका है।

विषय का पर्याप्त ज्ञान अनुभव एवं अभ्यास द्वारा लिखावटों के सामान्य चिह्न पहचान जात है। उनका जाति-सम्बन्धी प्रतिरूप विविध प्रतिरूप, उनकी स्थिरता का परस्पर लगना का गति की नाप अक्षरों के आकार सम्पूर्ण लिखावट को व्यवस्था आदि योगात्मक प्राप्त होने हैं। इसका अभ्यास आवश्यक है। व्यक्तित्व की एक माटी पर तुल्य विस्तृत रूपरेखा किया भी लिखावट के विधिवन् अध्ययन से प्राप्त हो जाती है। "सब समझ में आ जाता है कि लिखने वाले व्यक्ति के स्वभाव अथवा चरित्र के स्थायी स्तम्भ कौन-से हैं। स्वाभाविक वृत्तियाँ स्पष्ट हो जाती हैं। अधिक छानबीन से व्यक्तित्व की गहनता में भी पता जा सकता है। हस्तलिपि विज्ञान की वैज्ञानिक प्रिया सहज तथा विधिवन् है। पर्याप्त अभिरुचि लगन, अध्ययन से इसका अभ्यास किया जा सकता है तथा इसके द्वारा किसी भी व्यक्ति के मौखिक मनोवैज्ञानिक अवन करने में सफलता प्राप्त हो सकती है। हस्तलिपि के मूल तत्त्वा तथा तत्सम्बन्धी व्यक्तिगत चरित्र के लक्षणा का वर्णन आगे करेंगे।

## अक्षर कैसे लिखे जाएँ

इस विषय पर मराठी साहित्य से एक बहुत ही उपयुक्त किंवदन्ती प्राप्त होती है। इस कथन का सीधा सम्बन्ध अक्षरा की बनावट अथवा लिखावट से है ऐसा कहा गया है।

काटोळे सरळ मोकोळे  
मुक्तमाळा जैशा।  
पहिले अक्षर जे काटिले  
ग्रंथ संपेतो पहान गेले ॥

चित्र १८

मराठी भाषा में कह सकते हैं कि अक्षर गोलकार हो सुगोल बने हा सरलता से बनाये गए हा तथा अंग-अंग बन हा मोतिया की माला के समान इनका आकार एक समान हो मुड़ी- तथा सरल जैसा कि ग्रंथ लिखना प्रारम्भ करने में अक्षर बने हैं वैसे हा अक्षर समान रूप से ग्रंथ के अन्त-पर्यन्त बनने लगे जाए।

किंवदन्तियाँ सबमाय तथ्य प्रर्णित करती हैं। ये एक तथ्य इनी हैं जो बहान हा कवि एक व्यावहारिक अनुभव में प्राप्त हाते हैं। एक तथ्य का महत्व किसी भाषा का एक परिस्थिति में समान रहता है। यह किंवदन्ती भाषा की प्रकार एक सबमाय तथ्य प्रर्णित करती है। इस तथ्य का महत्व लिखन की प्रत्यक्ष परिस्थिति में समान रूप में हा पाया जाण्वा। लिखन वाग्य स्थिति का भी हो लिखन का लिपि कमा मा हा तथा कुछ भाषा लिखन हा लिखन की शक्ती अक्षरा की बनावट मन्त्र एक रहती। अक्षर मन्त्र हा एकस बने सुगोल बने सरलता से लिखे जा तथा मोतिया का माला के समान एक के बाद दूसरा स्पष्ट रूप से अंग

अलग बनते हुए चले जाएँ यह नितान्त आवश्यक है।

किंवदन्ती, अपने स्पष्ट तथ्य के कारण आवश्यक मुझाव उपलब्ध करनी है। ये मुझाव इतने सहज रूप से तथा इतनी सरल भाषा में लिए जाते हैं कि सदा ही स्मरण रहें और उसकी याद दिलाते रहें। कोई भी व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में इनकी यथायथा समझन में आना न कर सके उसके अनुसार आचरण भी कर सके। सत्य तो यह है कि व्यावहारिक जीवन के लिए ये थोड़े से चुन हुए सुन्दर, सरल उपयुक्त गान महापुरुषों के द्वारा रचित हुए महान् निदेश हैं। इनका अनुसरण करने से आत्म ज्ञान आत्म-बल स्वावलम्ब तथा सृजनकारी क्रियाशीलता प्राप्त होती है जिससे हमारे जीवन में से रूढ़िहीनता की भावना कम होती है और हम अपना जीवन व्यवहार आचरण अधिक उन्नत करने के लिए एक आदर्श प्राप्त हो जाता है। अधिक कुशलता एवं सफलता प्राप्त कर लेने के लिए इसका आभास स्वतः होने लगता है।

बंगला साहित्य में भी इस विषय पर गहन विचार प्राप्त होते हैं। हमारे आभारणीय गुरु श्री प्रफुल्लकुमार चटर्जी प्रायः एक बंगला कथन दोहराया करते हैं— वह है बाली कलम में लेखे तीन जन।

## चित्र १६

स्याही रखनी तथा मन इन तीन के मन्त्रुग्ण से मुलेख बनता है। केवल स्याही और रखनी ही लिखावट के लिए पर्याप्त नहीं हैं। अच्छी लिखावट के लिए यह परम आवश्यक है कि स्याही और रखनी के साथ ही हमारे मन का सहयोग भी हो। जब हमारा मन लिखन में भाग नहीं देता तो निश्चय ही लिखना कठिन हो जाता है। जब किसी परिस्थिति में बिना मन के सहयोग के लिखा जाता है तो केवल एक अस्वस्थ लिखावट का चित्र उपस्थित होता है। देखिए लिखावट सख्या २० का चित्र। इस लिखावट के अक्षर अनेक स्थानों पर अधुद्ध हैं बटे पटे हैं तथा अव्यवस्थित हैं। रखनी में सहज गति आना असम्भव है। अच्छा मुलख तथा अच्छी

अक्षर कैसे लिखे जाएँ



स्थिर सुखवस्थित तथा प्रभावशाली लिखावट जिसने के लिए आवश्यक है कि लिखित समय हमारा मन गात हो स्थिर हो स्वस्थ हो और लिखावट में स्वाभाविक गति के लिए हमारे मन के विचार भी मुक्त हुए हों।

अच्छी सुखवस्थित लिखावट के उदाहरण लिखावट संख्या १८ और १९ हैं। लिखावट संख्या १८ मध्यम आकार के सुडोल अंतर की बनी है, रिकन स्थान सम है पंक्तियाँ सीधी हैं मात्राएँ भी उचित एवं समाचार की हैं।

सम्पूर्ण लिखावट एक सुसंयमित चित्र के समान प्रभावशाली एवं आरपक है। यह लिखावट लिखने वाले व्यक्ति में सहज सावधानी यथायथ रचनात्मक क्रियाशीलता स्पष्टता मानसिक एवं भावात्मक सन्तुलन विवेक आत्मायता के सद्गुण व्यक्त करती है। यह व्यक्ति अपने व्यावहारिक आचरण में गम्भीरता लगन स्वावलम्ब गात एवं स्थिर प्रवृत्ति उद्योग और अच्छे सांस्थितिक संस्कार प्रदर्शित करता है। इसकी मधुर मानवीय मुशीलता में हीनता की भावना नहीं है। इसकी सादरा में अशर्म प्रशंगन का निजी प्रशंसा का जाहश्वर भी नहीं है। यह लिखावट लिखने वाले व्यक्ति के सुन्दर अन्तर्मन का वास्तविक हृदयप्राप्ति प्रतिबिम्ब है जसा गुद्ध मन अंदर है वसा ही उसका व्यावहारिक आचरण है।

श्री प्रफुल्लित कुमार चटर्जी की लिखावट बड़े आकार की है। इस लिखावट में स्वाभाविक मानवीयता आत्मीयता प्रदर्शित सुन्दर कलात्मक तथा उदारता स्पष्ट है। नियम-यात्रा आत्म-संयम आत्मविश्वास अनुशासन आत्म प्रेम के सद्गुण प्रसारित हैं यह व्यक्तिबुद्धिवश भाववश तथा आत्मश्रम में समानतः महान् गुणयोजित एवं विरमिन् है क्रियाशीलता बहुमुखा होते हुए भी मुख्यस्थित है तथा विवेक के आवरण से नियमित है। एक साथ ही अनेक कार्यों का सफलता से पूरा करते रहने की क्षमता आपस स्वाभाविक है। कोमल, भावक श्यावान् आत्मीयता के अनेक गुण इस लिखावट में मिलते हैं जिनका हृदय सहज ही पिघल उठता है तथा जिसे भी व्यक्ति का सहायता करने के लिए यह तत्पर है। साथ ही इस लिखावट में मर्यादा के अनेक गुण मिलते हैं। नियम-यात्रा तथा अपने ज्ञान का ऊँचा उठाए रखने में ये पूर्णतया समर्थ हैं। समार की कार्य भी माया इनका प्रभावित नहीं कर सकना यदि उमम विवेक ननिकता तथा उच्च मानव ज्ञान का जिहा प्रसार में भी कार्य कभी है। यह लिखावट की स्पष्टता यह लिखावट का धनवश तथा गति सगहनाय है। यह गारारिक अवस्था में ऊपर है। मत्तर वष में अधिक जानु हान पर भी आपकी लगना में दृढ़ता है। जात्रक समय बहुत कम आनु में ही लिखने वाले व्यक्ति का हाथ नागनत्र तथा लगना कापन लगन है। यह अन्तरिक निवृत्ता के स्पष्ट लक्षण है।

ऊपर लिख गए यंत्रों का उदाहरण एक व्यक्ति के प्रदर्शित करने हैं जो जीवन का प्रत्येक क्षण का गात भाव में प्रहृय कर मान्य हैं। इनका मन विचरित नहीं।

होना आन्तरिक द्वन्द्व उनका प्रभावित नहीं करता। यों अपना आत्म भाग जानने है तथा उसका अनुसरण करता रहने की आन्तरिक शक्ति रहती है। उनका आचरण सदा ही निष्ठा एवं शायसंगत रहता है। मानसिकता जाग्रत है भावनात्मक मजबूत है, आत्मबोध प्रगति एवं शक्ति प्रगति करता है। उनका प्रभाव ऐसी किसी भी श्रिया में सलग्न है जिसमें निम्न श्री अध्यवसाय परिधम श्रम तथा उत्तम सामाजिक सहयोग की आवश्यकताएं हैं परन्तु नैतिक आत्म सर्वोच्च हो। इस व्यक्ति समाज में आत्म व्यक्तित्व के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तथा अन्य अनकानक व्यक्तियों का सुमर्यात सुनियोजित सुसाधुनिष्ठ मार्गदर्शन करते हैं।

उनका शिवाचरण में व्यक्तिगत विभिन्नता है। पत्नी लिखावट अन्तर्मुखा और दूसरी लिखावट बहिर्मुखा प्रकट करती है।

शिवाचरण सख्या २० के अन्तर् उदाहरण हम मिलते हैं। अधिकांश लिखावटें हम प्रकार के निर्विचित्र निर्वच द्वन्द्वमुक्त व्यक्तित्व हमारे सामने लाती हैं। रहती हैं। व्यक्तियों में बौद्धिक एवं भावनात्मक सम्पन्न श्रेष्ठ शक्ति विनम्रता भाव प्रगति हो परन्तु यदि यह सुमर्यात तथा सुनियमित नहीं हो तो मायक नहीं है। यह किसी एक विचारधारा का श्रम में अनुसरण करने में अममय है। मानसिक उद्वेग-पुनः मची हो रहती है और इस कारण अपने चित्त का स्थिर कर सकना असम्भव हो जाता है। एक व्यक्ति की विचारधारा में नवीनता भरी हो वह परिवर्तित होनी चाहती है तथा उसके विचार बदलने लगते हैं। उनमें हठता का आभास नहीं मिलता। अपने जीवन-काल में हम अनेकानेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं। कोई व्यक्ति हम उच्च स्थान पर होता है तब हम सहज ही प्रभावित हो जाते हैं, परन्तु जब हम उनके जीवन की व्यवस्था को कुछ निकट आकर देखते हैं तो हमारे आश्चर्य का सीमा नहीं रहती। इनके आचरण में किसी भी प्रकार के नियम तथा विवेक का छाया दिखाई नहीं देता। उनमें तत्काल विचार उत्पन्न नहीं होता। इनके विपरीत अनेक साधारण मनुष्यों में असाधारण आत्मिक शक्ति के उदाहरण प्राप्त होते हैं जो साधारण जीवन-यापन करते हुए भी ऊँचे व्यक्तित्व का प्रमाण करते हैं। इनका व्यक्तित्व अनेक आदर्शों पर आधारित है उनका चरित्र आदरणीय है। इस प्रकार का अध्ययन लिखावट के उदाहरणों में सहज ही हो जाता है।

अपर शिवाचरण तथा उदाहरणों सहमन देता कि लिखावट लिखना एक निश्चित मार्ग का काम है। लिखने की चेतना स्पष्ट होना चाहिए कि लिखित बात व्यक्ति लिखित समय मनचाहा होय चलाता जाए। लिखने वाले व्यक्ति का एक निश्चित पाठ्यार्थ बनाने की पद्धति है। इस कार्य में उस जा मानसिक, शारीरिक और मनावधानिक बाधाएं आती हैं तब लिखने के कार्य में बाधा होता है, शान्त भाव से सहन करनी पड़ती है और उनका धार करते हुए स्पष्ट, शुद्ध और

स्थिर लिखावट लिखनी पड़ती है। यह क्रिया लिखने का काय प्रारम्भ करने से उसके अन्त तक चलती रहनी है। इससे पता चलता है कि लिखने की क्रिया एक निश्चित काय है और इससे पता चलता है कि लेखक इस काय को किस प्रकार सम्पन्न करता है। इससे यह भी पता चलगा कि उसकी नविक शिक्षा का स्तर कसा है उसकी स्मरण शक्ति अक्षरा के आकार के ज्ञान के विषय में कसी है उसकी चतुरता स्फूर्ति जीवन शक्ति समय शक्ति वचि ज्ञान आदि लक्षणा का स्तर कसा है।

लिखावट का आगम अक्षरों की पुनर्रचना से भी है। लिखावट के अक्षरों का आकार एक मान पूर्वनिर्धारित है। लिखने वाला व्यक्ति इन पूर्वनिर्धारित आकारों को कुछ परिवर्तन के साथ बनाता है। ये परिवर्तन दो प्रकार के हैं और स्वयं अन्तर्गत द्वारा प्रकट होते हैं। अक्षरों की कुछ रेखाओं तथा अन्य चिह्नों को छोड़ जाना जिनको वह व्यक्ति आवश्यक नहीं समझता अथवा जो उसके लिए लिखने की क्रिया में बाधक हैं बाधक है। और दूसरे अक्षरों की कुछ रेखाओं तथा अन्य चिह्नों को अनिश्चित जोड़ देना अथवा उनकी आकृति अपनी रसज्ञान के अनुसार बदल देना जिसे वह आवश्यक समझता है अथवा जो उसके लिए लिखने में सहज हैं।

इस दृष्टिकोण से हस्तलिपि लिखने वाले व्यक्ति के अन्तर्गत की स्वाभाविक रसज्ञान प्रकट होती है। इससे व्यक्त होता है कि वह किस आचरण को पसन्द करता है और किस व्यवहार को पसन्द नहीं करता।

कुछ अक्षरों की ऐसी आकृतियाँ को अपनाना है जो अन्य व्यक्ति लिखते हैं और वह व्यक्ति यह व्यक्त करता है कि उनके आचरण वह अपनाना है।

अक्षरों के आकार परिवर्तित करने में लेखनी को इस प्रकार से निजी वचि से बचना काफी मात्रा में सम्भव है। उदाहरण के लिए यह कह सकते हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी चित्रकार से प्रभावित होता है तो वह अपने अक्षरों भी चित्रकारी के समान बनाने में तथा उनकी रचना चित्रकारी करने में अपनी शक्ति का प्रयोग करेगा। इन चित्रों में उसके अन्तर्गत की छाया निहित होगी।

यदि किसी कारणवश लिखने वाला व्यक्ति के चित्त से काय उचित रूप से करने का लक्ष्य मिट जाए तो लिखावट में एकाग्रता समय स्थिरता बढ़ना गिण्टता का अन्त हो जाएगा और लिखावट ऐसा बनगी जिसका लिखावट कह सकना ही नहीं होगा। वस्तु-मा लिखावटें जो कि वास्तव में उज्जा दुर्दुर्मी रखाए हैं प्रचलित दृष्टिगोचर होना हैं।

वैज्ञानिक विचारकों ने इस विषय पर कुछ प्रयोग भी किए हैं।

जब कि किसी समय आग शक्ति चित्त में एकाग्र होकर अपने विचारों को

सुझाने हुए लिखने के लिए बठने हैं तो आपकी लिखावट शुद्ध स्पष्ट और सौम्य बनती है।

विभी दूमरे अवसर पर जब आपकी मानसिक परिस्थिति में उद्विग्नता होती है भावा में द्रष्टृ हाता है लिखने बठने हैं तो आपकी लिखावट उनकी शुद्ध स्पष्ट और सौम्य नहीं बनती।

अथवा जब आप अपनी सहज लिखावट विभी अथ कारण से बदलती हुई पाते हैं तो आपको नुरन्त आगाह हो जाना आवश्यक है।

लिखावट की परिस्थिति एक के अन्तमन की छाया है जोकि सामयिक आचरण से प्रभावित एवं बदलती रहती है। अतः अपनी लिखावट को स्थिर करने के लिए मन को भी शान्त करना आवश्यक होता है। ये दोनों काम एक साथ होते हैं। एक सहज प्रयोग हमके लिए है कि रोमन लिपि में बड़े (कपिटल) अक्षरों में तथा देवनागरी लिपि में बड़े आकार के अक्षरों में लिखना प्रारम्भ कीजिए। यह किया जल्दी में नहीं होना चाहिए। जहाँ तक हो सके अक्षर स्पष्ट पूरे, शुद्ध और अलग-अलग लिखे जाने चाहिए। इस तरह से सावधाना से लिखन से थोड़ी ही देर में चित्त शान्त हो जाएगा विचार शुद्ध जाये और लिखावट की आकृति एवं आकार अपने निजी वास्तविक रूप में आ जायेंगे।

स प्रयोग का आगम्य मानसिक गति पर अवरोध लगाता है तथा अव्यक्त स्थायुतम को स्थिर करना है जिसमें मन हाथ और लेखनी सामान्य रूप से काम कर सकें।

जो बालक लिखना सीख गए हैं और निरर्थक ही लिखते रहते हैं फिर भी उनकी लिखावटें अशुद्ध अस्पष्ट अस्थिर तथा भद्दा दिखाई देता है व हमारे आकर्षण के विषेय वे नहीं होने चाहिए। इन बालकों के चरित्र निर्माण में कोई ऐसी निबलता रह गई है जिससे उनके मावहारिक स्वभाव में सन्तुलन नहीं आया है। अभी इन बालकों को जीवन के प्रारम्भिक मत्त्वों का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका है। अभी ये बालक यह नहीं निश्चित कर पाए हैं कि आचरण क्या शुद्ध होना चाहिए। आचरण में मीम्यता अपूर्णता एवं सामंजस्य होना चाहिए ऐसा ये बालक जानते ही नहीं हैं। अथवा यह कहा जाए कि वे जानते हुए भी उचित शली अपनाने में असमर्थ हैं। हो सकता है कि हमके कोई शारीरिक मानसिक तथा भावनात्मक कारण हो। अथवा यह कहा जाए कि ये बालक उचित एवं अनुचित परिस्थिति से परिचित होते हुए भी उचित आचरण की अवहेलना करते हैं। इसका कारण उनकी लापरवाही, मिथ्याभिमान उद्विग्नता तथा समाज के साधारण एवं आवश्यक नियमों से असहयोग आदि विभिन्न लक्षण हो सकते हैं।

अमुक बालक विममानसिक शारीरिक तथा भावात्मक कारण से अशुद्ध

अस्पष्ट अस्थिर तथा भ्रष्ट लिखता है इसका पता उसकी लिखावट के विस्तृत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से चलेगा।

**गारीरिक निबलता**—गारीरिक निबलता जिसका प्रभाव लिखावट पर पड़ता है हस्तलिपि विज्ञान के विश्लेषण से पता नहीं होती। सक्त प्राप्त होता है। अतः यह आवश्यक होता है कि ऐसा लिखनवाला बाउको की स्वास्थ्य परीक्षा की जाए। हो सकता है कि ऐसा बालक की उगलिया कमजोर हो। शक्ति हो। डेढा हो। उनकी कलाई में कोई कमजोरी हो। स्नायुतन दृढ़ न हो तथा उमर कम हो। दृष्टि स्वस्थ न हो। रीढ़ की हड्डी में कोई निबलता हो। इन बातों का पता डाक्टरों जांच से ही कर सकना है।

निकट सम्बन्ध होने से लिखावट द्वारा संकेत मिलने से अध्यापक इस प्रकार की परिस्थिति का पता चला सकता है। इस प्रकार के सक्त की गहरा छानबीन पाठशाला में स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा की जा सकती है। सही निदान हो जाने से बालक को उचित उपचार का प्रबंध किया जा सकता है। कठिनाई का पता चल जाना ही बड़ी बात है। फिर तो बालक के माता पिता अभिभावक आदि भी सावधानी से बालक के स्वास्थ्य की चिन्ता कर सकते हैं।

यदि ऐसा ध्यान नहीं लिया जाएगा तो बाउको अपनी गारीरिक निबलता से ग्रसित रहते हुए किसी-न किसी तरह अपना काम चलाते रहने का प्रयास करता रहेगा और आगे चलकर अपने स्वास्थ्य की परिस्थिति और भी कठिन सम्भव अधिक जटिल बना लगे। जो कि बाद में अनेक से अनेक उपचार से भी ठीक नहीं की जा सकती।

फिर भी यह देखा गया है कि अभ्यास से तथा उचित निर्देशन से गारीरिक कमजोरी वाले व्यक्ति भी अपनी कमजोरी पर अधिकार पा लेते हैं। ऐसे व्यक्ति जिनकी उगलियाँ किसी अनहानी घटना से टेढ़ी हो गई हैं। गुड़ एवं स्पष्ट लिखावट लिखते हैं, क्योंकि उनके चरित्र में आत्मज्ञ की मात्रा बड़ा अधिक है। जब एक व्यक्ति को छा करता है और उसको प्राप्त करने का प्रयास भी करता है तो उसकी प्रवृत्ति को छा गति है। उसका सफलता का कारण इसी है।

लोग अपना जिम्मा भा छाने-स छाते बात को बढ़ाकर अपना उत्तरदायित्व न निभाने का बहाना निकाल लेते हैं। यह वक्ता उनके व्यक्तिगत चरित्र की कमजोरी है। मैं ऐसा क्या कर सकता हूँ? ऐसा क्या हो सकता है? हममें अच्छा मैं जिम्मा प्रसार में नहीं बना सकता आदि अनेक प्रकार के उत्तर जो कि लोगों से मिलते हैं। नकारात्मक को छा गति का प्रभाव होता है। यह ऐसा लग है जो अपनी निबल को छा गति का छिपाने का लिए चांगरी कामचोरी उद्योग अमर्याद निष्पामाग्य आदि के अनेक आवरणों का प्रयोग करते हैं। जानते हुए भी अपने स्वभाव में अधिक अच्छाई पाने नहीं करना चाहते। यह प्रवृत्ति बाउकोपन

से ही उपयुक्त अभ्यास एवं निर्देशन व प्रभाव व कारण बनता है। यदि बाल्यावस्था में उनका निर्वृत्ताओं की मही जाँच हा जाए तथा उनका उचित उपचार हा जाए तो बहुत सम्भव है कि उनका युवावस्था का आचरण अधिक शुद्ध, गिर स्पष्ट तथा आकर्षक हा जाएगा।

बाल्यावस्था के लिए दिय गये विचार एवं प्रयास युवा नव गिनितता के लिए भी उपयुक्त है।

**भावुक विषमता**—लिखावट में अशुद्ध अस्पष्ट अस्थिर तथा महा वनावट का दूसरा कारण व्यक्ति की भावुकता का प्रभाव है। ऐसा दखा गया है कि लिंग के स्वभाव में भावुकता का चढ़ाव त्तर इतना अधिक होता है कि उसका बिना प्रकार से निगल कर सकना असम्भव होता है। इन व्यक्तियों में से कुछ ऐसे हान हैं जोकि अपने आचरण में अपनी पूरा व्यक्ति का प्रयोग करते हैं। जैसे कि ऊँचे स्वर से बोलना साधारण बातचीत में भागता मान्य हा कि बाल्य का चिन्ता रद्द है अथवा जल्दी-जल्दी बातना, दूसरे व्यक्ति की समझ में कुछ आए या न आए कहने का भी अपनी बात पूरा तरह से कह सक या न कह सके। ऐसे व्यक्ति समझते हैं कि जो कुछ भी जसा भी ब बाल रह हैं सुनने वाले न अवगत हा ग्रहण कर लिया है। इनमें दूसरे व्यक्तियों के विचार सुनने का ध्य नहीं होता। समाज में ऐसे व्यक्ति प्रायः मिलते हैं। ये व्यक्ति अपनी कहना जानते हैं सुनना नहीं जानते। इनकी लिखावट में कलम के दबाव का सतार-चढ़ाव रखाया का लम्बी दूरी, तथा छोटी दूरी बहुत-से रंग का प्रयोग आदि प्रमुख होता है। लिखावट अस्पष्ट अस्थिर होती है जिसका शुद्ध रूप से पढ़ पाना कठिन होता है।

दूसरे भावुक व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका उत्साह शीघ्र ही ठंडा पड़ जाता है। किसी अर्थ परिस्थिति में इनकी भावुकता का प्रभाव भा कम हा जाता है।

इस प्रकार की भावनात्मक प्रवृत्ति में गति है अथवा गति की विहीनता है भागते हुए अगल एवं अथक अगल इन स्थितियों की सहज पहचान है।

भावुकता की चंचलता की स्थिर करने के लिए स्थिर मुद्रा का अभ्यास उपयोगी है। बिना भा परिस्थिति के कारण जो व्यक्ति आवग में जा जाते हैं और मानसिक सतुलन खो बैठते हैं उनका लिए मुद्रा का प्रयोग बहुत ही हितकर है। ऐसी परिस्थिति में पुन मानसिक सतुलन प्राप्त कर लेने के लिए, धीरे धीरे और बड़े आकार के अगल स्थिति प्रारम्भ करना चाहिए। कम तरह से दो बार पंक्तियाँ लिखने में ध्यान एकाग्र हो जाता है।

**मानसिक उथल-पुथल**—तीसरी परिस्थिति मानसिक अस्थिरता है। जिस समय किसी प्रकार की उत्पन्न निमाण में होती है उस समय प्रयत्न करने पर भा किसी काम में मन नहीं लगता। प्रयत्न करने पर भा इसमें सफलता नहीं मिलता। किसी भी प्रकार की सयोजक उपज निमाण से नहीं होती। ऐसी हालत

मे भी लिखावट अस्थिर रहती है तथा अस्थिर लिखावट से जिसमे कि अक्षरों के आकार तथा उनके झकाव अनेक प्रकार के होते हैं मानसिक अस्थिरता प्रदर्शित होती है। वास्तव में यह मानसिक शिथिलता का उदाहरण है। अपनी नसर्गिक गति का ऐसा प्रदर्शन होने देना एक बड़ी निबलता है। समझदार लोग अपने नित्य के सहज व्यवहार में इस प्रकार का असंगत आचरण प्रदर्शित नहीं होने देते क्योंकि वे जानते हैं कि इस प्रकार के आचरण से वे केवल अपनी कमजोरियों को दूसरे व्यक्तियों के सामने प्रदर्शित कर देंगे। वे जानते हैं कि ऐसे आचरण से उनके चरित्र में व्यक्तित्व में कमी होने लगेगी। अस्त ऐसी मानसिक अवस्था के अवसर पर बुद्धिमान व्यक्ति घबराहट का उपयोग करके अपना सतुलन प्राप्त कर लेते हैं तथा पुनः अपने निदिष्ट कार्य में अग्रसर हो जाते हैं।

हस्तलिपि का विषय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का कथन महत्वपूर्ण है। यह बहुत ही यत्तिगत सरल एवं स्पष्ट होने हुए भी सारगर्भित है।

मेरी समझ में यह आया कि बुरी लिखावट अधूरी शिक्षा का चिह्न है। बाद में मैंने अपनी लिखावट सुधारने का प्रयत्न किया परन्तु (इस अभ्यास का) सुअवसर बहुत पीछे निकल चुका था। मैं अपनी युवावस्था की इस भूल को कभी सुधार नहीं सका। हर युवक तथा नवयुवती को मेरा उदाहरण लेकर सतर्क हो जाना चाहिए और समझ लेना चाहिए कि अच्छी लिखावट शिक्षा का आवश्यक अंग है।

इस लेख से यह स्वतः सिद्ध है कि 'यावहारिक' जीवन में सफ़लता प्राप्त करने के लिए लिखावट जस साधारण आचरण में भी सतर्कता अपनाना विशेष महत्व रखता है। लिखना एक निश्चित क्रिया है जिसमें किसी भी मानवीय क्रिया के प्रायः पूर्ण तत्त्व निहित हैं और इस कार्य को सफ़लतापूर्वक करना आवश्यक है। इसमें उपयोग होने वाली सम्पूर्ण गतिरियाँ सही होनी चाहिए और उनका सही प्रयोग होना चाहिए।

## लिखावट का मनोविज्ञान

अभी तक हमने यह देखने का प्रयास किया है कि हस्तलिपि क्या है? लेखनी स्वच्छ गति से आचरण करता है, लिखावट सुव्यवस्थित है स्थिर है, परिपक्व है, सौन्दर्यपूर्ण है अथवा उपमित है आदि। लिखावट में प्रयोग हान वाला ऐसे अनेक सक्रिय संचल अथवा निष्क्रिय निश्चय लक्षणा का विवेचन किया जा चुका है। हमने यह भी देख लिया है कि मनाविज्ञान के आधार पर लिखावट का व्यक्तित्व से सीधा सम्बन्ध है तथापि सम्पूर्ण व्यक्तिगत गतिविधा का प्रवृत्तियों का भाव मात्रा का तथा अथ विविध स्वाभाविक गुणा का भी लिखावट से सीधा सम्बन्ध है। जब हम किसी भी लिखावट के मौलिक उदाहरण पर दृष्टिमान करते हैं तो हमारे मन में तुरन्त एक प्रश्न उठता है कि यह व्यक्ति ऐसी लिखावट लिखता है ता क्या लिखता है। इस व्यक्ति ने इस प्रकार की लिखावट अपनाई है ता क्या? इस मौलिकता से इसका क्या सम्बन्ध है? क्या विपरीत है इस गली में जिनमें हमने लिखने वाले का इतना आकर्षण किया है? इन प्रश्नों की तह में जान से हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके चरित्र के अवलोकन का अवसर प्राप्त होता है। प्रत्येक लिखावट विभिन्न है।

यह व्यक्ति-परिचय वास्तविक सत्य और निष्पक्ष होता है, क्योंकि इस चरित्र प्रणाली में किसी भी प्रकार की छिपावट नहीं होती। धोखा हान की भी सम्भावना नहीं है। वास्तव में यह प्रणाली सम्मुख व्यक्तिगत परिचय से अधिक महत्वपूर्ण है। लोग बातें बनाना जानते हैं, अपनी भावना को छिपाना भी जानते हैं। यद्वा चतुर व्यक्ति अपने विषय में जसा व्यवहार करना चाहते हैं वसा ही बना भा देते हैं।

उनका वास्तविकता का समझना सहज नहीं होता। मन में कुछ और है, कहत कुछ और है। ऐसे व्यक्ति प्रायः मिश्रित हैं। परन्तु लिखावट में ऐसा काद बात नहीं। लिखावट अपने वास्तविक रूप में ही प्रस्तुत होती है। फिर लिखावट की



चित्तनी ही बार हस्तत्रिपि विनान व मूलतत्त्वा व आधार पर परीक्षा की जा सकती है। और इसमें जो निष्पन्न निकलगा वह बानानिक प्रमाणयुक्त होगा न कि केवल 'यत्किंमत समन व आधार पर आधारित एवं प्रत्यक्ष परीक्षा में वही एक विष्पण प्राप्त होगा एक समान निष्पन्न प्राप्त होना रहेगा।

दूसरी बात यह है कि 'यत्किंमत प्रभाव भी अनन्य होते हैं। जितने अधिक 'यत्किंमता से आप मित्रों उत्तम ही अधिक प्रकार की धारणाएं आपकी विषय में वनेंगी। यदि इन अनेकानेक धारणाओं का सचय किया जाए तो जो चित्र बनेगा उसका पहचानना असम्भव होगा। कारण यह है कि प्रत्यक्ष व्यक्ति किमा भी दूसरे 'यत्किंम को अपने निजी दृष्टिकोण अपनी निजी प्रवृत्ति तथा शक्ति व अनमार देखना है। अतः उसकी आपके विषय में धारणा अपना निजी होती है। और यह धारणा जो कि वास्तव में आपके 'यत्किंमत्व का अवन है वह दूसरे किनी भी 'यत्किंम व समान अवन में भिन्न होगी।

लिखावट का चित्र एक सा रहता है। कोई भी व्यक्ति उसे देखे और किमी भी समय दमे एक बार चित्रित कर दी गई लिखावट अमिट रहती है। कोई भी व्यक्ति उसे देखे उसकी धारणा समान ही रहेगी और उस लिखावट के मनोवैज्ञानिक अवन के प्रयोग में हस्तत्रिपि विनान व मूलतत्त्व समान रूप से प्रयोग में आएंगे।

लोग कहते हैं कि वे अपनी लिखावट बताने हैं और समय-समय पर उस बताने भी रहते हैं। ऐसा वे जब चाहे कर सकते हैं। ऐसा लोगो का कथन रहता है। परन्तु इस कथन में ये व्यक्ति भ्रमे ही अपने आपको समझाते हैं अपने मन में मन्त्रोप कर रहे परन्तु मय यह है कि ऐसा करने और कहकर वे अपने व्यक्तिव को और अधिक प्रयत्न प्रदर्शित कर देते हैं।

धारण क्या है ?

लिखावट लिखन या 'यत्किंम व अनमन की छाया का रूप है। यह उसकी सम्पूर्ण आन्तरिक 'यत्किंमता में निहित होती है और सामयिक चिन्तन एवं भावना से प्रभावित होता रहता है। त्रिन व्यक्तिता का लिखावट स्वभाव से बताने वाली है व अस्थिर चित्त हान है और निश्चयपूर्वक बताना जा सकता है कि उनमें दृढ़ सत्त्व 'यत्किंम तथा निशय करने की 'यत्किंम का अभाव रहता है। बच्चा की लिखावट में यह 'यत्किंम सत्त्व है क्योंकि व स्वभाव में ही चंचल हान है। परन्तु वयस्क का लिखावट में जमा कि उसका व्यक्तिगत अथवा आचरण में जागा की जानी है बच में अधिक सम्भारना स्थिरता दखना जाना है। चान्ति। यदि ऐसा नहीं है तो बताना है पढ़ना कि उनका बताने वाला लिखावट व 'यत्किंम में उनका व्यक्तिव की अस्थिरता व्यक्त होता है।

यदि आप प्रयोग करके अपना लिखावट बताने अथवा बताने रहते हैं व

समय-समय पर अमुकमाया हा जात हैं क्याकि व बहूनि की तरह आवरण  
 करत हैं। कभी कुछ कभी कुछ। जा बान्धविकता है उनका लक्षण करत है। एउ  
 व्यक्ति हन भाव व शिवाग्र रहत हैं आर अपन विविध आचरण म अपन  
 व्यक्तिव का हाननाआ आ प्रदर्शित करत रहत हैं। यद्यपि बहूना उनका हम बात  
 का आमान नहा हाता और यदि उनका ध्यान हम आर आकर्षित करत का प्रयास  
 किया भी जाए तो उनका ऐसा भावना अथवा परिस्थिति का विश्वास नहा  
 हाता।

शिवाक व बहूना रहत व उगाहरण बहूना हस्माना का बनाव म  
 मिश्रत है। हस्माना एक स्थिर नमून का तरह बनाव जात है। मूहज स्वभाव व  
 गग अपना माया-माया नाम स्पष्ट लिखत है। हमस स्पष्ट व्यक्त हा जाना है कि  
 अमुक हस्माना किम व्यक्ति का है। उम व्यक्ति का नाम स्पष्ट भाषा म अक्षर  
 पं किया जाना है। एम स्पष्ट उगाहरण हम पत्ति जवाहराग नमूना भी मुनाप  
 बहूना वाम, मगार पत्ति आदि व हस्मानाओं म मिलत हैं। परन्तु बहूना-म लोग  
 अपन हस्माना ऐसा रखाआ म बनावत हैं जिनका मुनाना दुगम बाय हाता है।  
 मू पता ही नहीं जाता कि किमन लिखा है। लिखत बाग स्वय भा अपना उत्तर  
 दापित मिश्रता है। एसा गकायुक्त परिस्थिति म कबल अनत्य धाया दन की  
 प्रवृत्ति बहुरिपाया का माया अपन नियमित मरत्य म विचरित हा जाना  
 नियमानुवर्तिता का अभाव आदि हान धारणाआ की कल्पना हा सकती है।

जिनक अपन बनाव हुए हस्माना म परिवर्तन हाता रहता है उन्हें  
 अपना कर्तिता का आनाम पोस्ट आफिम एव बका म होता है क्योंकि कहा यदि  
 आपक हस्माना आपक पूर-परिचित हस्माना म चिह्नित नहा मिश्रत तो आपका  
 विद्वास कयापि नहा किया जाएगा।

बहूना की क्रिया म परिवर्तनशीलता म बान्धविक परिस्थिति का ज्ञान  
 प्राप्त हाता है। जा मूहक एक स्थिर एउ दन प्रकार का आवरण करत हैं उनके  
 मन की यत्र-युपय व्यक्त नहा हाती। उनम कौनसे विशेष गुण एउ अवगुण छिप  
 हुए हैं व पता नहीं चलत। जब कहा स परिवर्तन हाता है तो प्रकाश मिश्रता है  
 और शिवाक पटना है कि मामला क्या है। अत जा व्यक्ति अपना परिवर्तनशीलता  
 की गेनी मानत है आर इसका अपना मामध्य गति बजानत हैं व अपन-आपका एक  
 मापारण व्यक्ति म अधिक व्यक्त करत हैं और एम व्यक्तिया व चरित्र निर्धारण  
 करत में सुगमता मिश्रता है।

हम प्रकार व विवरण एउ उगाहरण द्वारा हमन पिछले पट्टा म हमन  
 शिपि विज्ञान व अपन पहल तथ्य का विश्लेषण किया है। जम कि—

शिवाक व मनोवैज्ञानिक विश्लेषण म स्थित बाग व्यक्ति व व्यक्तिव  
 का मनोवैज्ञानिक अवन किया जा सरता है।

उदाहरणा से विदित होगा कि लिखावटों के मनोवैज्ञानिक विन्शेषण से किसी आश्चर्यजनक उद्घाटन प्रकाशन का प्रयास नहीं किया गया है और हस्तलिपि विज्ञान में इस प्रकार के विवेकहीन प्रयास की उत्पत्ति भी नहीं है। हस्तलिपि विज्ञान गुप्त भेदों के प्रत्यक्षीकरण की विधि नहीं है। और यह ऐसी कुजी भी नहीं है जिसमें कि लिखने वाले व्यक्ति के अंतर्मुख के सब तात्ते खोले जा सकें और सम्पूर्ण अप्रत्यक्ष बातों को प्रत्यक्ष कर दिया जा सके। हाँ इतना अवश्य है कि लिखावट के विधिवत् निरीक्षण उसके लक्षणों के वर्गीकरण एवं मनोवैज्ञानिक विन्शेषण से व्यक्तिगत चरित्र का एक मोटा ढाँचा तयार हो जाता है। इससे हम मनुष्य की वास्तविकता को पहचान पाते हैं। यह ऐसा साधन मिल जाता है जिससे मानवीयता के विविध उदाहरण प्रत्यक्ष होते हैं। इसके वैज्ञानिक प्रयोग किये जा सकते हैं। मनुष्य को अच्छी तरह से और निकट रूप से समझा जा सकता है जिससे उसकी सामाजिक और व्यावहारिक परिस्थिति में उचित स्थान एवं महत्त्व दिया जा सकना सम्भव हो जाता है।

हम अभ्यास को सुगम और कमबद्ध बनाने के लिए लिखावट के विविध चिह्नों का मनोवैज्ञानिक विन्शेषण किया गया है। हस्तलिपि विज्ञान के विन्शेषणों ने हम विषय में अनेकानेक प्रयोग किये हैं तथा उनको अपने अनुभवों सहित विस्तारपूर्वक लिखा है। ये सब प्रयोग यूरोपीय देशों में हुए हैं और विन्शेषण रोमन लिपि पर ही हुए हैं।

मैं अपना प्रारम्भिक ज्ञान भी इन विज्ञानों के कथनानुसार प्राप्त किया है। तन्नुसार प्राप्त तथ्य रोमन लिपि पर आधारित हैं। इन तथ्यों को मैं भारतीय लिपियों पर जहाँ कि देवनागरी लिपि बंगला मराठी गुजराती में लिखी जाने वाली गणों पर अपना ज्ञान का प्रयास किया है। जितना इसमें प्रमाणित हो सका उतना मैं हिन्दी-भाषा की सूचना के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ। ये मनोवैज्ञानिक विन्शेषण हस्तलिपियों के आधारभूत तथ्यों की सही पहचान एवं उनके मनोवैज्ञानिक संकेतों का यथाचित समझन में सहायक होंगे।

## लिखावट के जाति-सम्बन्धी प्रतिरूप

१ लिखावट का स्थायी रूप—लिखावट के स्थायी रूप में आगम उन लिखावटों में है जहाँ कि लिखना साधन की पुस्तिकाओं में लिखा रहती है। लिखने के अभ्यास-काल में आगे के पुस्तिकाओं में भीखत है तथा उन लिपि हुए अक्षरों तथा उनके लिखन की गति का अनुसरण करते हैं। यह लिखावट निम्न भी लिपि में होता है। ये आगम अक्षर हैं।

जब लिखन का व्यक्ति अपना स्वच्छन्द लिखावट में लिखन के नियमों के अनुसार लिखता है और मनुष्य का लिखना चला जाता है तो उमर हम यह

समझने हैं कि यह व्यक्ति अपने आचार-व्यवहार में भी त्रुटिग्रस्त है अपना ध्यान एकाग्र कर सकता है नियम पालन कर सकता है धनवान है रीतिनिरम मानता है तथा नियमानुसार चलने वाला है।

अपने दैनिक आचरण में यह व्यक्ति सावधान है, उतना ही त्रिपाणी है जितनी कि उसको नियम पालन करने की आवश्यकता है। ऐसे व्यक्ति अपने सवों का आन्तर करते हैं। आज्ञाकारी है परिपाटी पर चलने वाला है इनके व्यवहार में यथेष्ट लिखाचार है तथा व्यवहार के प्रत्येक छोटे से छोट आचरण पर ध्यान देते हैं। यदि ऐसा न हो तो लिखावट के छोटे-से छोटे चिह्न का यथोचित अनुगमन किस प्रकार से कर सकेंगे।

ऐसे व्यक्ति में बलपूर्णा नवीनता वृत्तमयता भावुकता आदि स्वच्छ लक्षणों की स्वतन्त्रता कम प्रदर्शित होती है। यह व्यक्ति अपना वास्तविक भावना व्यक्त करना नहीं चाहते यदि वे नियमानुसार आचरण कर विरह हैं। यह मिथ्यावादी अधिक है त्रिपाणी कम।

वास्तव में ऐसी लिखावट के उदाहरण बहुत कम मिलते हैं क्योंकि इसमें व्यक्ति की भावना मौलिकता पर अवरोध रहता है। और जिन व्यक्ति में आतमिक जीवन व्यक्ति का संचार अधिक है और जो अपने मौलिक विचार का व्यक्त करने के लिए अधीर रहते हैं इतनी सावधानी तथा नियम निष्ठा का पालन नहीं कर सकते। उनकी मौलिकता यथेष्ट नियम पालन के विरुद्ध विद्रोह करता है और जैसे कि परस्पर आचरण में लिखावट में भी अपना निजा रंग प्रस्तुत कर देती है।

लिखना साक्षन के प्रारम्भ में यह प्रयोग और अभ्यास आवश्यक है कि बालक इस तरह की लिखावट का नियमित अभ्यास अवश्य करें। इससे त्रुटिपूर्ण विचार नियम-पालन एकाग्रता बलपूर्णा पर अवरोध स्पष्टता गतिभाव रचना का प्रवृत्ति आदि लक्षणा का अभ्यास हो जाता है। यह एक प्रारम्भिक प्रशिक्षण का माना हुआ आधार है।

(२) सावधानी से बने सुन्दर अक्षर—इसमें दो बातें आवश्यक हैं सावधानी और सुन्दरता। नियम-पालन इसका आधार है परन्तु इस गति में लेखक कम परिधि से आगे बढ़ता है और सावधानी का प्रयोग करते हुए लिखावट में वृत्तमय सुन्दरता प्रदर्शित करने का प्रयास करता है। लिखावट का यह सुन्दरता सुखविपुल अक्षरों की रचना से प्रदर्शित होती है। इसमें रचना की प्रवृत्ति नियम पालन की वृत्ति से आगे है। जो व्यक्ति इस प्रकार की लिखावट लिखते हैं उनमें विचारगति की मात्रा अधिक होती है अपना ध्यान एकाग्र कर सकते हैं आचरण में सांस्कृतिक विकास व्यक्त होता है। जो कुछ भाव व्यक्त है अर्थात् तरह से करता चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति सुखानुवादी होते हैं प्रमत्तचित्त रहते हैं अपने

तथा अप-यक्तिगो के सांस्कृतिक ज्ञेय सस्वारो म विस्वास करते हैं। इन व्यक्तियों में जातिविश्वास, स्वावर्धन एवं आत्मनिर्णय की क्षमता होती है।

(३) सम्प्रेषित लिखावट—कुछ लिखावटें ऐसी भी देखने में आती हैं जिनमें देखते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि लिखनेवाला व्यक्ति अपनी अनिश्चित स्फूर्ति में अपनी लिखावट को सजाने का प्रयास कर रहा है। इसमें लिखने का ध्यान गोभा की ओर अधिक है वास्तविक अक्षरों की ओर कम। इस गोभा के लिए लिखनेवाला व्यक्ति अक्षरों के प्रारम्भ एवं आन्ति म अनेक रेखाएँ इस प्रकार से बनाता है जिसमें लिखावट अधिकाधिक प्रभावशाली और आकर्षक दिखाई दे। यह आकर्षक चिह्न और रेखाएँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं। उदाहरण के लिए यह कह सकते हैं कि जिस कोई लेखक विसंग के स्थान पर छोटे-से गोले बना दे गूँथ के चिह्न बना दे इत्यादि। इस गोभा का वर्णन कठिन है। यह केवल देखा ही जा सकता है क्योंकि जितने लिखनेवाले लिखेंगे उतने भिन्न प्रकार के लेख लिखेंगे।

इतना कहना पर्याप्त है कि यह व्यक्ति अपने सहज आवश्यक व्यवहार से आगे अनिश्चित आचरण करता है। सोचने बात करने में अपने विचारों पर अधि-जोर देना सुनना कम बनेगा अधिक। प्रज्ञान की भावना प्रधान है। प्रचलित प्रथा से आगे अपनी नवानता ध्यान करता है।

वामनव में यह अनिश्चित सुन्दरता की प्रेरणा तथा सजावट आश्चर्य है।

लिखावट के अर्थ-वर्णन में पता चलेगा कि यह लिखावट कितनी नविन अथवा अननिक है। यदि नविकता के गुण अधिक हैं तो यह अनिश्चित गोभा स्पष्टि क्रियाशीलता सामूहिक परिष्कार आदि पुष्ट वर्णन की साक्षी है। यदि यह भली है तो स्वाध्याय आश्चर्य स्थापित आदि नवीन वर्णन की प्रवृत्ति करता है।

एक लिखावटें वर्णन देवन का मिश्रण है। अनुभव बताता है कि लिखावटें जमा भी हो जाय अपन हस्तांतर मजान का वर्णन करत हैं। एकरा एउ उदाहरण लिखावट मर्या १७ भी हो सकती है। यह अभिव्यक्ति क्या है कहना कठिन है। परन्तु एकरा ता निश्चित है कि यह आवरण सहज व्यवहार में जनावश्यक है।

वर्णन मजानवर लिखावट हस्तलिखित प्रभाव स्वभाव अक्षरों की भावना वर्णन प्रम हउ स्वभाव अपना प्रामा वर्णनियान्त स्वार्थी प्रवृत्ति नवानता की भावना सुविन करता है।

(४) सहज सरल रचना—गान स्वभाव गरर हस्त पुढ मन के अनिश्चित मनन भा जना मरर और मरर आवरण बनाए रखत हैं। लिखावट मर्या १५।

वर्णन एकरा एकरा है कि यह लिखावटें मरर गति म लिखा जानी है

शब्दों की स्वच्छता गति से चलती हुई भी भागती नहीं है। शब्दों की व्यवस्था प्रम  
युक्त रहती है। अक्षरों के आकार सम उनमें चुकाव मीचे अक्षर सम्पूर्ण और  
मावधानी से बने रहते हैं। लेखनी में अवरोध नहीं है। तीव्रगति भी नहीं है। यह  
समगति लिखावट है। लिखनेवाले व्यक्ति के स्वाभाविक आचरण में मानवीयता  
प्रधान रहती है। नतिकता स्पष्ट व्यवहार सांस्कृतिक संस्कार स्थिर रूप से  
विद्यमान रहते हैं। आत्म-नियम है। रचनात्मक कुशलता है। मानसिक सन्तुलन  
है। एक कार्य को हाथ में लेने और उसको सफलता से समाप्त करने में बुद्धि बल का  
सदुपयोग है। ऐसे व्यक्तियों में आत्मिक बल का संचार रहता है जो प्रभावशाली  
होता है। चित्त को एकाग्र करने में गुण आत्मविश्वास प्रमयुक्त आचरण की  
प्रेरणा रहती है। नियमापालन करने की वृत्ति का अभ्यास करने के लिए ऐसा  
लिखावट का अभ्यास हितकर होता है।

सहज सरल लिखावट की रचना करने वाले व्यक्तियों का व्यक्तिगत  
जीवन माना शुद्ध और सुलझा हुआ रहता है। इसमें आशंका और कष्ट नहीं है।  
य अपने काम और सामाजिक आचरण का सम्पादन शांतभाव और कुशलता में  
करते हैं।

यदि इनकी लिखावट में लेखनी का दबाव भारी रहता है तो चरित्र की  
दृष्टि प्रतीत होती है। आत्मबल अधिक है। अपनी बात पर बलवत् दृष्टि है जिससे  
किसी प्रकार की गंवा न रह जाए।

यदि यह लिखावट कोमलता से लिखी होती है तो स्वभाव में कोमलता  
की भावना अधिक रहती है। नम्रता मभी भाव कटना का अभाव मधुर भाषा का  
प्रयोग आदि महज गुण हैं। ऐसे व्यक्ति नहीं चाहते कि उनमें कोई कटुता बाल।

इस प्रकार की लिखावट में दो बातें देखने की और हैं। पहली यह कि  
लिखावट के अक्षर स्पष्ट और स्थिर हैं अथवा धुंधले नहीं हैं। यदि ये अक्षर स्पष्ट  
और स्थिर हैं तो यह मानना पड़ता है कि लेखक का व्यक्तित्व स्वच्छ आचरण  
करने हुए भी बलवान् है। चरित्र में शक्ति है आत्मबल दृढ़ है और अपना लक्ष्य  
प्राप्त करने की लगन है, क्रियाशीलता सफूर्त है।

यदि लिखावट में अक्षरों का आकार बलवान् रहता है तो हम समझते हैं  
कि लेखक में एकाग्रता की कमी है। एकचित्त हाकर किसी काम में लग रहने का  
मानसिक शक्ति पर्याप्त नहीं है। एक काम अधूरा छोड़ दूसरा प्रारम्भ किया  
ऐसी वृत्ति देखने में आती है। कल्पना शक्ति अच्छी है। अनेक विचार मन में जाग्रत  
होने रहते हैं। उनमें से किसी एक को पकड़कर उसको वायव्य रूप दे सकना कठिन  
है। दूसरी बात देखने की यह है कि शब्दों का अर्थ व चिह्न जहाँ कि अक्षर पाइया  
आदि पूरे बने हैं अथवा अधकच्चे हैं अस्पष्ट हैं। यदि ये अक्षर व अक्षर चिह्न  
रेखाएँ आदि अपूर्ण एवं अस्पष्ट हैं तो यह सुविक्लित चरित्र-व्यक्ति की सूचना नहीं

देते। इस अस्पष्टता का कारण यह है कि लेखक को अपना निर्धारित काय आयो पान्त पूरा करने का जम्याम नहा है अपना वचन पूरा करने की वृत्ति नहीं है। इस प्रकार की लिखावट ॥ वह परिस्थिति का सदिग्ध अवस्था म छोड़ देता है। निश्चय ही यह लिखावट का लक्षण विश्वासपात्र व्यक्तियों का नहीं है। इसमें जिम्मेगारी की वृत्ति नहीं है। कुछ लिखावटों में जिसका निणय लिखावटों के अय लक्षणों क साथ होना है यह लक्षण कूटनीति एवं वास्तविक तथ्य को गुप्त रखन की भावना से भी है।

(५) स्वच्छता से आगे बढ़ते हुए अक्षर—लखनी की स्वच्छ प्रगति उत्साह साहम उद्योग घुमककड वृत्ति वाक्य चातुरी आदि प्रगतिमूचक व्यक्तिगत लक्षण यन्त्र करती है।

का देना ॥  
अगर भी सादि फाई  
०१०००० ६००० ००००

### चित्र २

इस प्रकार का लिखावट म अगर लिखन के स्थान पर फट्टे हुए बनत हैं। अगरों क बीच गंगा क बीच पवित्रता क बीच म छोटा हुआ रिक्त स्थान अन्ग लिखाई पत्र जाता है। अगर आग की आर सब हुए भी हो सकते हैं। अरों के रमान आदि भी आग की आर प्रसारित हा सनत हैं। मात्राए आदि अय चिह्न यथास्थान नही। गिरोरेखाए नहा अथवा कहा कही हा। एम प्रकार के चिह्न लिखावट म तान्न गति क हैं। य चिह्न स्वच्छ आग बनता हूँ लिखावट म हाने हैं। एम प्रकार के एगव स्वभाव म बहिमयी प्रतिभावाए होने हैं। इनम किसी भी समस्या का तुरन्त समन एन की बुद्धि होती है और इनके मन की प्रतिबिम्बा भी तुरन्त हा हानी है। भावाद्वय जन्म प्रगति होने हैं। अनक घाना का गुण नहा गग मरन। कहा-न-कहा यन्त्र कए एन हैं।

(६) रचना मर सतल्लि लिखावट—मुख्यवर्ग्य लिखावट म अगर गुद और सम्पूरा बनत है। उनक आकार स्थिर एन है लिखावट लिखन क उपरान्त स्थान पर यथाक्रम विस्तृत जाता है। एमम चारा आर क हाणिण प्राय बराबर स्थान छाएन है। लिखावट का पवित्रता माधा और मधा हूँ रचना है। लिखावट क छाए चिह्न जम कि मात्राए, विमग विट्ट पाइयाँ आदि भी यथा-आकार तथा यथास्थान बनाए जान है। एमा लिखावट म लिखावट क प्रयक छोटे-बड़े मव

अंगों को यथास्थान महत्त्व दिया जाता है। यह लिखावट दूर से देखने में ही सुव्यवस्थित मुसतुल्लि और सुसंयोजित दिखाई पड़ती है। देखिए लिखावट सख्या २१।

## अनिल नाम छन्दः

चित्र २१

यह वास्तव में आत्मा लिखावट है। इसके लिए लिखने वाले के स्वभाव में लिखने की प्रवृत्ति के अतिरिक्त धर्म सावधाना क्रम गम्भीरता मानसिक एवं भावुक सन्तुष्ट सामाजिक स्वनिर्माण आदि गुणों के अभ्यास की अधिकता रहनी है। ध्यान एकाग्र करने लगने से दूर तक धर्म करने से ही ऐसी सुव्यवस्थित लिखावट बनती है।

ऐसी लिखावट मानव-स्वभाव के तत्त्व गुण प्रकट करती है। इस प्रकार के व्यक्ति अपने आचरण में जल्दबाजी नहीं करते। वे जल्दी में किसी निश्चय पर नहीं पहुँचना चाहते। परन्तु उनकी विचारधारा यथार्थता पर पहुँचती है। उन्हें नियम पालन की क्षमता प्राप्त करना पड़ती है। वे एक-दूसरे निश्चिन रूपरेखा पर चलते रहने का अभ्यास करते हैं। यह व्यक्ति के निमाणकारक बलियाँ बनती हैं जिसमें चरित्र क्रियाशील और बनवान बनता है।

जिनको किसी भी यात्रा का कार्य रूप में परिणत करने की आवश्यकता होती है उनका काम इस सुव्यवस्थित यत्न के बिना सम्पन्न नहीं होता। किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य में चलना तथा लपकना ही में सफलता नहीं मिलती। इसमें मानसिक सन्तुष्ट दृढ़ आन्तरिक शक्ति विचारों की प्रकृति अपने स्नायुओं पर अधिकार तथा आचरण पर अधिकार, स्वाभाविक लगन हैं।

रचनात्मक सन्तुष्ट लिखावट यत्न के पुष्ट एवं समुपयोगी लगन प्रकट करती है। ये हैं रचना-शील धर्म या यथार्थता क्रियाशीलता नियम-पालन आस्था सुव्यवस्थित विचारधारा, सुनिश्चित आचरण आरम्भयुक्त सहयोग मित्रता सारता बुद्धि प्रधान परिश्रमी युक्तिमुक्त मूर्धन्य अध्येतृत्व आदि उत्तमवर्गीय अधिक हैं परन्तु अपना वचन निभाने की क्षमता कम है। इस प्रकार की अभ्युत्थान अच्छा नतिक लगन नहीं है।

लिखावट स्वतंत्रता से लिखी हो गतिशील हो परन्तु अन्तर गतिशील स्पष्ट तथा स्थिर होना आदर्श है। यदि ऐसा नहीं है तो लिखावट सफल नहीं बड़ी जा सकती त्रिआत्मिक नतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से। लिखावट की निश्चिन रूपरेखा में ही व्यक्तिगत चरित्र एवं रचित रचना की रूपरेखा स्पष्ट है।

(७) स्थायी की मात्रा—स्थायी की मात्रा अधिक होने के दो कारण होते हैं। पहला यह कि लिखने में समय लगने पर देबाव अधिक होना है। इस परिस्थिति



म लिखनवाले यक्ति की अधिक भावुक प्ररणा दृष्टिगोचर होती है। इसमें जीवन शक्ति, प्रेरक गति चेष्टा स्वेच्छाचार हठ आदि लक्षणों का प्रादुर्भाव अधिक और स्पष्ट रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने निष्पत्ति पर विश्वास करता है।

इस प्रकार का दबाव स्वेच्छाचार प्ररणि करता है। इसमें शरीर-सुख की भावना स्वाधरता तथा भोति सुखा की इच्छा अधिक है। अच्छा खाना अच्छा भोग करना यन्निगत रज्जान म निहित है।

दूमरी परिस्थिति एसी लेखनी के प्रयोग करने की है जिससे लेखनी पर दबाव अधिक न होने पर भी अधिक मात्रा में स्याही आती है।

एसा हो सकता है कि लेखक की दृष्टि कमजोर है और कम लिखाई देने लगा है। इसलिए स्याही के गहरे रंग की आवश्यकता है।

अथवा अधिक स्याही का प्रयोग गहरे रंग के प्रति आकर्षण सुन्दरता के प्रति आकर्षण का प्रेम आदि की रुचि प्ररणि होती है।

यदि एसी लिखावट अणिष्ट अभ्य होती है तो स्वभावगत अभ्य व्यवहार दुर्लगाचर होता है। एसा व्यक्ति स्वभाव से रूखा और अविश्वासी हो सकता है। कम भी स्वच्छाचार की भावना अधिक होगी।

इसके विपरीत कोमल भार की लिखावट में स्वभाव के कोमल गुण अधिक होते हैं। यदि स्याही की मात्रा कम है तो भावुकता अधिक नहीं है।

भारी लिखावट—जब लिखन में खनी नीच की ओर अधिक दबाई जाता है तो लिखावट भारी हो जाती है। कुछ लोग बहुत हल्के हाथ से लिखते हैं। लिखावट के कुछ चिह्न जिनमें खनी नाच की आर में उपर का जाती है हल्के हाथ में लिख जाते हैं। य रेखाएं पतली होती हैं। कम स्याही की मात्रा कम रहती है। एसा रंगाल जो उपर में नीच की ओर चलती है अथवा बाई आर से भाग पा आर को घीवा जाता है खनी का दबाव प्ररणि करने की है। भारी लिखावट के निम्नलिखित कम प्रकार पाए जाते हैं। (लिख लिखावट मस्या १४)

कम उमर स्फूर्ति का भावना अच्छा स्वास्थ्य गहरे रंग का प्रति आकर्षण आत्म शक्ति हठना नाशिया म वग एव शक्ति का सचार व्यक्त होता है। निरंतर चला चलन रूत का क्षमता व्यक्त होता है। मनावग स बन्धान जीवन शक्ति खन होता है निर्भीकता जाता है स्पष्ट तथा प्रबल आररण करने की शक्ति प्ररणि होता है।

भारी लिखावट या बन्धिया प्ररणि का खण है। यह व्यक्ति भी अपना बन्धन शक्ति का व्यक्त करना है भावना प्रयान है, हठ निश्चय कर मन में ममय ३ अरु व्यक्तित्व का म अरु अनर व्यक्तिया का प्रभावित करना है परिश्रम का खना है। खना का भाग स्वाध बन्धान जीवन शक्ति का खन ३।

भारा लिखावट यदि छात्र आकार की है तो लिखनवाले व्यक्ति में अपना चित्त एकाग्र करने का भाव क्षमता है और यह व्यक्ति बहुत दूर तक ध्यान गंवाकर काम में लगा रह सकता है। इस लिखावट में वग-गति-गोलना आवश्यक है। हाथ का कपन रोकने के लिए भी कुछ योग लेखनी का दबावे हैं परन्तु इस परिस्थिति में लिखावट धीरे धीरे लिखी हुई मान्य पड़ती है और कहा-कहा लिखनी में कम्पन प्रतीत हो जाता है। यह बिह्वल भारी लिखावट का नहीं है, फिर भी निश्चय की मानसिक दृष्टता की कुछ मात्रा सूचित करता है। यद्यपि उतना नही जितना कि गतिगोल लिखावट से व्यक्त होता है।

कुछ लिखावटें मान्य लिखावटें दना हैं परन्तु भारी नहीं होती। ये लिखनी के दबाव के कारण मान्य नहीं हैं। ये लिखावटें मान्य लिखनी में तथा अधिक स्थानी का मात्रा से लिखा हुआ होता है। ये लिखावटें यदि महा लिखावटें दता हैं तो स्वभाव का स्थापन स्वाय-वस्ति इन्द्रियजनित सुख भाग विगम की भावना भौतिक वस्तुओं में आकर्षण अविवक्षित पक्षपातयुक्त मानवगत अज्ञात प्रवृत्ति आदि अनेक आचरण के प्रयोग का सूचना दता है इसमें शक नहीं है।

(८) सुगम मयाक्रम, समगति—यह लिखावट समगति में लिखी जाना है। इसमें लिखनी के वग के लक्षण नहीं हैं। अक्षर गोल पवित्रता आदि यथाम्यान होंगे। इसमें क्रमबद्धता होगी।

इसमें भावधाना प्रधान है।

पूर्वनिधारण चिन्तन निगुणता व्यवहार मयम आत्मविवक्षाम आत्म पूजना विचार यत्न करने की समारम्भ निष्पत्ति का शक्ति आदि चरित्र के गुण यत्न होता है।

भावानुभव गति तथा चरित्र अति नहीं है।

(९) श्रुतगामी लिखावट—इस लिखावट का श्रुतगामी लिखावट कहते हैं।

तौद्रगति से लिखावट में अनेक परिवर्तन आ जाते हैं। हस्तलिपि विज्ञान के दृष्टिकोण से ये परिवर्तन बहुत ही गौरे हैं तथा व्यक्तित्व के अनन्यमानक लक्षणा का स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देते हैं। तब कि अक्षरों का आग का आर श्रुतना अक्षरों का अस्पष्ट हो जाना अक्षरों का एक-दूसरे में मिल जाना आदि। स्वच्छता में लिख आग बहुत ही अक्षर लिखन वाले व्यक्ति के स्वभाव में व्यक्त करने का भावना उत्साह माहुर उद्योग का भावना तथा स्वावलम्ब का चष्टा प्रधान रहती है। ऐसा व्यक्ति बहुधा स्पष्टवादी होता है उसका आचरण में सदैव का भावना प्रतीत नहीं होता। अथ व्यक्तित्व की बात पर सहज भरोसा करने का प्रवृत्ति उसमें होता है। इसमें व्यावहारिक सकीर्णता नहीं होता। यह व्यक्ति एक साथ अनेक कार्य हाथ में लेन में नहीं हिचकता। (देखिए लिखावट मसूदा ७, १०, १६ आदि) मानसिक उत्पत्ता इसका मुख्य लक्षण है।

(१०) व्रतपति मे अस्पष्ट अक्षर—अनेक लिखावटें तीव्र गति के कारण अस्पष्ट हो जाती हैं। ऐसी लिखावट की मूठ रेखा ऊची-नीची लहरियादार हो जाती है, हाण्डियों की बाइ रेखा भी आगे तथा पीछे की ओर बनती है। अक्षर अशुद्ध तथा अस्पष्ट बनते हैं।

ऐसी लिखावट लिखने वाले के स्वभाव मे जल्दबाजी रहती है वह अपनी लिखावट घसीटता है। जो कुछ उसके मन मे आता है जल्दी से घसीट देना चाहता है। उसमे यह भावना नहीं है कि उस पढ़ने वाला उस लिखावट से क्या समझ सकेगा। उसके जिन्हे जाने का वास्तविक आशय प्राप्त होगा अथवा नहीं। ऐसे व्यक्ति उद्दण्ड असावधान जोड़ी अभिमानी तथा भावावेश मे अशिष्ट व्यवहार करने वाक्य होते हैं। उसमे सहज सामाजिक मानवीयता का अभाव रहता है। गोपनीयता असत्य भाषण उत्तरदायित्व न लेना अपना वचन पूरा न करना आदि अनेक संस्कारों की सम्भावना भी रहती है। यह व्यक्ति उत्साही होते हुए भी रचनात्मक कार्य मे सलग्नता दृढता उत्तरदायित्व तथा अपने कार्य को सुरक्षित पूरा मुक्ति से पूरा करने की प्रवृत्ति प्रदर्शित नहीं करता। उतावलेपन मे लेखक गतिपूर्वक अपनी लेखनी का संचालन करता है। बहुधा आवश्यक बातें छोड़ जाता है और अनावश्यक बातों पर जोर देता है। ऐसे व्यक्ति असावधानी करते हैं और पीछे पछताने भी ह।

(११) गतिशील शुद्ध और स्पष्ट अक्षर—प्रतिगामी लिखावट हाते हुए भी शुद्ध और स्पष्ट अक्षर लिखने की दक्षता विलक्षण निर्माणकारक प्रवृत्तिया का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने आचरण मे तत्पर होत हुए भी रीति के विरुद्ध आचरण नहीं करता। अपने उमाह मे भी सावधानी सज्जना आत्मविश्वास गत स्वभाव सामाजिकता रचनात्मक स्पष्टता शुद्धता तथा सद्ब्यवहार करने रहने मे सज्ज रहता ह।

ऐसा व्यक्ति विभिन्न व्यावहारिक परिस्थितियों मे अपने मानसिक मनुष्य का बनाए रखता है। उसकी मानसिक स्थिरता उसकी सतत्प को दृढ़ विश्वास का प्रखर प्रतिभा का बहिर्मुखी और कायस्थता एवं क्षमता का बलवान बनाता है। किसी भी कार्य के छात्र मे छात्र अंग भी उसकी दृष्टि से छूट नहीं जात। उसकी प्रखर गति उमाह उत्पन्न करता है। साथ ही उसे नियम पालन करने का भी भाव उत्पन्न होता ह। इस व्यक्ति कति परिस्थिति मे भी अपना मानसिक मनुष्य बनाए रखत है।

अन्तर्गत लिखावट मे बर अक्षरों का याग तथा लम्बी का अधिक दराव व्यक्ति के लक्षणों का अधिकाधिक प्रखर बनाता ह। इस व्यक्ति प्रभावशाली होता है अथवा व्यक्ति का संचालन नरुव करत है। उनमे मूठ-मूठ आर उद्योग परिश्रम आन्तरिक प्रणाली कल्पना निर्माण तथा रचनात्मक आश्यों की मात्रा



(१०) व्रतगति मे अस्पष्ट अक्षर—अनेक लिखावटें तीव्र गति के कारण अस्पष्ट हो जाती हैं। ऐसी लिखावट की मूला रेखा ऊंची-नीची लहरियादार हो जाती है। हाशिये की बाइ रेखा भी आगे तथा पीछे की ओर बनती है। अक्षर जुद्ध तथा अस्पष्ट बनते हैं।

ऐसी लिखावट लिखने वाले के स्वभाव में जद्दबाजी रहती है वह अपनी लिखावट घसीटता है। जो कुछ उसका मन में आता है जल्दी से घसीट देना चाहता है। उसमें यह भावना नहीं है कि उसे पढ़ने वाला उस लिखावट से क्या समझ सकेगा। इसका लिखे जाने का वास्तविक जाग्य प्राप्त होगा अथवा नहीं। ऐसे व्यक्ति स्वार्थी उद्देश्य अभावधान जोषी अभिमानी तथा भावावेग में अस्पष्ट व्यवहार करने वाले होते हैं। उसमें सहज सामाजिक मानवीयता का अभाव रहता है। गोपनीयता असत्य भाषण उत्तरदायित्व न लेना अपना वचन पूरा न करना आदि अनेक संस्कारों की सम्भावना भी रहती है। यह व्यक्ति उत्साही होने हुए भी रचनात्मक काम में सलग्नता दृढ़ता उत्तरदायित्व तथा अपने काम को सुरक्षित पूरा युक्ति से पूरा करने की प्रवृत्ति प्रदर्शित नहीं करता। उनावलेपन में ऐतक गतिपूर्वक अपनी लेखनी का संचालन करता है। बहुधा आवश्यक बातें छोड़ जाता है और अनावश्यक बातों पर जोर देता है। ऐसे व्यक्ति असावधानी करते हैं और पीछे पछताते भी हैं।

(११) गतिमिल, शुद्ध और स्पष्ट अक्षर—प्रतिगामा लिखावट होते हुए भी शुद्ध और स्पष्ट अक्षर लिखने की दृष्टि से विलक्षण निर्माणकारक प्रवृत्तियाँ का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने आचरण में तत्पर होत हुए भी रीति के विरुद्ध आचरण नहीं करता। अपने उत्साह में भी असावधानी सलग्नता आत्मविश्वास गान स्वभाव सामाजिकता रचनात्मक स्पष्टता शुद्धता तथा सद्व्यवहार कर रहे में सफल रहता है।

ऐसा व्यक्ति विभिन्न यावहारिक परिस्थितियों में अपने मानसिक अनुगम को बनाए रखता है। उसकी मानसिक स्थिरता उसके सत्य को दृढ़ विश्वास का प्रसर प्रतिभा का महिमन्ता और कायस्थता एवं क्षमता का बलवान बनाता है। किसी भी काम में छात्र में छोटे अंग भी उसकी दृष्टि सशुद्ध नहीं जाने। उसकी प्रत्येक गति उसका उत्पन्न करता है। माय ही उस नियम पाया करने का भाव प्रकट होता है। उस व्यक्ति की परिस्थिति में भा अपना मानसिक अनुगम बनाए रखता है।

अन्तर्मा लिखावट में बड़े अक्षरों का माग तथा लम्बा का अधिक दशर अक्षरों के लम्बाई का अधिकारिक प्रवृत्ति बनाता है। इस व्यक्ति प्रभावशाली होता है अथवा व्यक्ति का भवार्थ नष्ट करने में। उनमें मूल-वृत्त आदि उदात्त परिधि में अन्तर्मा लिखावट का बलवान नियम तथा रचनात्मक आत्मा की मात्रा

अधिक रहती ह।

(१२) मिले जुले अक्षर—लिखावट में अक्षरों का एक दूसरे से मिलते जाना अथवा गिरोरेखाओं का साथ हो मिलते हुए आगे बढ़ते जाना धय, क्षमता दक्षता सावधानी, उत्साह कामकुशलता का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति समाज के सामूहिक सत्कार में सफलता प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। यह लिखावट स्पष्ट होना आवश्यक है।

मिली जुली लिखावट का नमूना

अक्षरों का मिलना

अक्षरों का मिलना

चित्र २२

रोमन लिपि में अक्षरों को मित्राकर लिखने की प्रथा है। इस लिपि में अक्षर सुगमता से मिलते हैं। एक अक्षर के अन्त से ही दूसरा अक्षर प्रारम्भ होता है। कुछ कुशल 'चक्र' इन अक्षरों को बड़ी सुन्दरता तथा सादमी में मिलाते हैं। यह बुद्धि की प्रखरता का परिचायक है। अथ स्थानों में 'चक्र' बनावनी दण्ड अथवा कठिनाई से इन अक्षरों को मित्रात है। ये 'चक्र' पीटने वाले व्यक्ति हैं।

सहज बुद्धिवाक्य 'यन्त्रिणा' का माध्यम सुगम होता है। जहाँ अक्षरों का मित्रात सुगमता से किया जा सकता है वह लिखा जाता है। जहाँ कठिनाई होती है वहाँ 'चक्र' उठाकर पुनः लिखना प्रारम्भ कर दिया जाता है।

मिली जुली लिखावट में तत्परता मित्रता का भाव विषय-सामयिक सामूहिक सत्कार प्रखर-बुद्धि विचारों में नवीनता नवीन प्रकार से अक्षर मिलाने में उत्प्रेरणा वाक्य-वातुरी आदि लक्षण व्यक्त होते हैं। यदि लिखावट में कलम पर दबाव भारी है तो ऐसे व्यक्ति अधिक स्वच्छाचारि होते हैं सक्रिय होते हैं आलोचना सहन नहीं कर सकते। बच्चे भी होते हैं।

जिन लिखावट में अक्षर अल्प अल्प अक्षरों की भाँति लिखे जाते हैं, वे लिखावटें विचार प्रधान हैं। ऐसे व्यक्ति भावक कम और बौद्धिक अधिक होते हैं। ये आन्तरिक प्रेरणा मानव हैं।

एक व्यक्ति लिखने में समय लेते रहते हैं। यह एक प्रकार का विचार प्रवाह का अवरोध है। इस प्रकार के व्यक्ति वाक्ता नहीं होते। दूसरा का दृष्टि

लिखावट का मनोविज्ञान

कोण समझने का प्रयास करते हैं दूसरों की सुनते हैं।

ऐसा भी कहा जाता है कि यह रीति लिखना सीखने के प्रथम अभ्यास पर आधारित है। कुछ पाठशालाओं में अक्षर अलग-अलग लिखने की प्रथा है। बालक बड़े होकर भी इस प्रथा का पालन करते हैं। परंतु ऐसा नहीं है। मानसिक अपरिपक्वता में ही ऐसा होता है। मानसिक परिपक्वता प्राप्त हो जाने पर तथा विचार प्रवाह सहज हो जाने पर अरों में सहज ही मिलान आने लगता है। यह भारतीय लिपियाँ भी प्रतीति हैं। कतिपय हिन्दी लिखने वाले भी अक्षरों का मिलान करने लगते हैं।

(१३) सकोण लिखावट—इस प्रकार की लिखावटों में रिक्त स्थान की कमी होती है। अक्षर एक-दूसरे के बहुत करीब लिखे जाते हैं। यह भी लिखावट में अवरोध का लक्षण है। कतिपय लिखावटों में अक्षरों के मुख बंद रहते हैं। गाँठ सी भी बनी हुई लिखाई देनी है। यह सकुचित विचारधारा है जिसमें 'यकन' होता है कि लिखित वाला 'यकन' एकाग्रता पर जोर दे रहा है और स्वरभा के ध्वनि में है। कुछ पसंद करना नहीं चाहता। उठारना से कुछ देना नहीं चाहता। वृषण है दूसरे व्यक्तियों का विश्वास करना नहीं चाहता। आत्म विश्वास की कमी सामान्य विचारों का अभाव बातें न कहने की आदत झूठनीति कपट आदि लक्षण व्यक्त हो सकते हैं। चरित्र निर्धारण के लिए लिखावट के अन्य लक्षण भी देखना आवश्यक है।

(१४) लिखावट में अवरोध—लिखावट का स्वाभाविक लक्षण बाई आर स गइ आर बटना है। हममें अरों के ऐसे अंग जो आगे बढ़ सकते हैं आगे की ओर धनते हैं। हममें विपरीत लक्षण लिखावट में है। अस लिखावट का पीछे की ओर झुकना अक्षरों की अंतिम रेखाओं का पीछे की ओर घूम जाना छात्र अरों बनना मात्राओं का छात्र बनना जयवा हम प्रकार में घूमना कि अक्षरों का टुकड़े। अतः लिखावट का मूल्य परा में हम प्रकार के अवरोधन चिह्न की पहचान करनी है।

अवरोधक चिह्न अनेक प्रकार के हैं। जहाँ देखनी पड़ती है वहाँ प्राप्त होत हैं। मन्त्र प्रवाह एक जाता है। स्वभाव पर भी हम प्रकार का प्रभाव रहता है। अपरिपक्व मानसिक अभ्यास में मानसिक एवं भावक मूल्य गुप्त परिस्थिति में झुनाने चाहती हैं तथा अविवशता की परिस्थिति में हम प्रकार के अवरोधक लिखावट होत हैं।

जो व्यक्ति मन्त्र स्वभाव में मध्य भागण रहत हैं और जिनमें पाम छिपाने की शक्ति कम ममाना नष्ट है वह हम प्रकार के अवरोध का प्रयोग नहीं करते। हम लिखावट में हमन का मित्रता है जिनमें हिमा किमो अक्षरों को प्राग्भिक जयवा अंतिम हम प्रकार की पुरातन में योग्यता एक लता है। हम हम स्वरभा

की प्रणाली है और अपने स्वार्थ को प्रशान्त होने देना नहीं चाहती।

(१५) अव्यवस्थित लिखावट—यस लिखावट में हर तरह में अक्षरों का अक्षर अक्षर अलग-अलग लापरवाही रहता है। कोई अक्षर बड़े, कोई अक्षर छोटे बन जाते हैं। रेखाएँ सीधी नहीं होती, लपकी का झुकाव भी विभिन्न होता है। एसी लिखावट चाहे जहाँ बटो-फटी होती है। एसी लिखावट में अक्षर भी अधिक बगल में आने लगते हैं। इसका उदाहरण लिखावट संख्या २० है। यह लिखावट न तो मही तरह से पढ़े जाती है और न वह किसी प्रकार का स्थिर रूप प्रशान्त करती है। हाथों भी अनिश्चित होते हैं।

यह मानसिक अव्यवस्थितता का लक्षण है। अस्थिर स्वभाव भाग्यपूर्ण चंचल आचरण पण्यन निराशा द्वन्द्व विचारधारा में परिवर्तन आचरण में क्षणिक समानता, विचारों का भ्रमना हानना की भावना, अमय भाषण छोटा देन की आशंका आदि अनेक असामान्य लक्षण मिलते हैं। यह लिखावट लापरवाही का नमूना है। पुष्ट लक्षण न मिलने से निश्चय ही यह स्वस्थ व्यक्ति का उदाहरण नहीं है। यथार्थ आचरण सभ्यता का महत्त्व है। यदि उसमें भ्रम नहीं है तो उसमें किसी प्रकार की निश्चितता का सम्भावना नहीं रहती।

प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति यदि इस प्रकार की लिखावट लिखें तो उसका अर्थ ही कोई कारण होना चाहिए। उस अवस्था में शारीरिक अथवा मानसिक पक्षों में अस्वस्थता निराशा की भावना, मानसिक कठिनाई परेशानी आदि।

अथवा अपरिपक्व मानसिक अवस्था वाला व्यक्ति हा अव्यवस्थित लिखावट लिखता है जिनका लिखने का अभ्यास नहीं है और न अपने विचार मुलाना में निश्चितता पाये जाने की आशंका है।

(१६) सन्तानों का दबाव हलका—यह काम लिखावट काम चित्त चित्त ध्यान करता है। महानगलना तथा सगमप्रियता इसका प्रिय लक्षण है। सन्तानों का भावना है प्रसन्न चित्त रहना चाहता है। अप्रिय आलापना पसंद नहीं करता।

कुछ उदाहरण हम दान में आते हैं जिनमें लिपि में कोमलता है और अक्षर बहुत सावधानता से लिखे हुए हैं—छोटे आकार में। लिखनेवाला व्यक्ति बहुत ही स्वस्थ और कठोर है। उनका स्वभाव भी बहुत कठोर है। यह विपरीत परिस्थिति है। ऐसा अनुभव हुआ है कि ऐसे व्यक्ति वास्तव में आन्तरिक हीनता की भावना का कारण है अपने स्वभाव में कठोरता आदि का व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। यह स्वभाव एवं चरित्र की विचित्रता है। जीवन की विविध अप्रिय परिस्थितियों में कुछ व्यक्तियों में परिवर्तन ला देती है।

अथवा हलका लिखावट का व्यक्ति किसी प्रकार का उपयोग पसंद नहीं करता। और स्वर में आलस्य भ्रम व्यवहार करना ही उनका प्रिय है। वास्तव में मानसिक चित्त-चित्त के यथार्थ हैं। यदि लिखावट कभी हुई है तो





बाइ ओर म चक्कर दाइ ओर ऊपर को उठती जाती है।

(२०) पक्षियाँ नीचे की ओर झुकती हुई—यह अधोगामी पक्षि है। बाइ ओर स प्रारम्भ होकर नीचे की ओर ढलनी जाती है। ध्वनि हतात्साह अस्वस्थ अवस्था खिन्नता उदामीनता मलिनता प्रदर्शित करती है।

(२१) मोटी गद्दी और फली हुई—इस प्रकार की खिगावट अभद्र है। स्थापन विषयामक इन्द्रियप्रतिबिम्ब भौतिक वस्तुओं का आवरण अविचार पक्षपातपूर्ण स्वार्थी व्यवहार उद्दण्ड आचरण व्यक्त करती है। स्वाभाविक भद्रपन में हाँ ऐसा लिखावटें बनता हैं।

यदि इस लिखावट की स्थापना का अन्तिम भाग में भारीपन अधिक है तो आविर्भावपूर्ण आचरण भी व्यक्त है। ऐसी परिस्थिति में भद्रपन का भौतिक कारण भी देखना आवश्यक है अथवा पुनः हमारी लिखावट ख़ूबनी चाहिए। सम्भवतः ऐसी भद्दी लिखावट का कारण ख़ूबनी हो अथवा ऐसा वागड हाँ जिस पर लिखावट की स्याही फैल जाता है। अथवा ख़ूबनी पर भी ध्यान देना चाहिए।

मौनी भद्दी लिखावट को लागू की पाई गई है जो अपराधपूर्ण काम करने हुए पकड़े जाते हैं।

(२२) गिरोरेखाओं पर लिखना पुरानी प्रथा है। पहले गिरारखा सावना फिर उमक नाच अन्तर लिखना। यह प्रवृत्ति पहले सावने फिर काम करने की है। यह सावधानी का लक्षण है तथा गम्भीर प्रवृत्ति प्रदर्शित करता है।

इस प्रकार की लिखावट में ख़ूबनी का प्रवाह स्वच्छन्द रहता है क्योंकि एक बार रखा खींचने के उपरान्त ख़ूबनी उमक आधार में स्थित चली जाती है। यह रेखा लिखना प्रारम्भ करने में पहले एक प्रकार का अवरोध है जिसमें चिन्तन प्रारम्भ करने का अवसर प्राप्त हो जाता है।

(२३) अन्तर लिखने के बाद गिरोरेखा खींचना—यह भी सावधानी का एक लक्षण है अवरोध है। इसका द्वारा प्रविष्ट आचार विचार नियमित रहने हैं पक्षि का प्रवाह सम रहता है अस्पष्टता आता है तथा लिखावट का आकार गंभीर बनाना अन्तर रचना आदि गुण एवं पूरा हो जाते हैं। इस प्रकार का अभ्यास अपना कार्य सम्पन्न करने के उपरान्त उसका पुनः निराकरण करने का अवसर देता है। आगे बढ़ने परन्तु पीछे भी दबने आता इस प्रकार की भावना है।

(२४) गिरोरेखाओं के साथ अक्षर मिलाते हुए आगे बढ़ना—यह प्रगति नीति लेखक की वृत्ति है। अपने पूर्व-परिचित नियमों का पकड़ रहना जो पुराने स्थापना में आगे निरन्तर चाहते हैं परन्तु उस छाह भाँटना मकने। परन्तु यह लिखने वाले की चतुराई और सावधानी है कि वह लिखावट में स्वच्छन्दता एवं प्रवाह का संचार करते हुए भी अन्तर में स्पष्टता सम्पूर्णता एवं नियम-पालन करना रहता है।

यह अवरोध सामूहिक सम्कार सावधानी दक्षता धय, वायकुण्ठता का लक्षण है।

(२५) शिरोरेखा न होना—यह स्वच्छन्द आचरण है। परन्तु इस सत्तुलित रखन के लिए एकाग्रचित्त होना की अधिक आवश्यकता पड़ती है। गम्भीर विचारक जिनको अधिक लिखना पड़ता है और जिनके विचार सुलभ हुए हैं और जिनमें अपने विचार को सहज ही व्यक्त करने की क्षमता है बहुधा शिरोरेखाओं का सहारा नही लेते हैं।

इसमें उसाह अधीरता कल्पना प्रेरणा प्रवाह गतिशीलता आदि लक्षण हैं। यदि लिखावट के अन्य लक्षण अस्पष्ट है तो असावधानी अस्पष्टता उभावका पन भी प्रदर्शित होते हैं फिर भी यह विचार प्रकाशन में आत्मविश्वास एवं स्वच्छ चिन्ता प्रदर्शित करता है।

(२६) लिखावट का बड़ा आकार—इस लिखावट में सब अक्षर बड़े आकार के बन हुए होते हैं अथवा अधिकतर अक्षर बड़े आकार के होते हैं। इससे पढ़नेवाला अधिक आकर्षित होता है। ये अक्षर स्वच्छता से चलती हुई रखनी स लिखने में अधिक स्थान घेरते हैं। इनके बड़े आकार के समान ही उपर तथा नीचे की मात्राएं आदि अनेक चिह्न भी बड़े आकार के होते हैं। (देखिए लिखावट सख्या १४ और २३)

श्री ओम् से यह दोषों का  
वि-पुष्टि को लाभदायक  
के बन्धन का उत्तिबन्ध

चित्र २३

लिखावट में बड़े आकार के चिह्नों का प्रतिभा का प्रमुख लक्षण है। यह व्यक्ति अपने चिन्ता पर अधिक धारणा पसन्द नही करता और यहाँ वहाँ से फिरकर अपना काम करना पसन्द करता है। हमारा मन एक जगह नहीं लगता यह मान निक उठारना का भाव लक्षण है जिसमें मितव्ययिता का भावना नहीं है। यह भावना प्रधान चिन्ता है। यह स्वच्छता में आचरण करता है। हममें आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता का भावना अधिक रहती है। भावना में बंध जाना हमसे गिरा मन्द है। हममें बंध मन्द का गति अधिक है लिखावट का आकार गति का परिचय देता है। गतिबद्ध चिन्ता में कल्पना मजबूत रहती है। अनेकानेक विषयों की आकाशयण रहती है। मुद्रा का प्रमत्तता करने का प्रवृत्ति उगाह अतिशय भावना प्रमत्तचित्त रहने का स्वभाव चिन्ता का मुख्य कल्पना आदि अनेक लक्षण बड़ा

लिखावट स व्यक्त हान हैं ।

लिखावट का बड़ा आकार कुछ अथ सूचनाएँ भी देता है जिस विन्यास से कम लिखाई देना, एकाग्रता का अभाव युक्तियुक्त रचनात्मक कार्य का अभाव अभिमान लिखाने की प्रवृत्तियाँ आदि ऐसी लक्षणों की पुष्टि के लिए लिखावट के अथ चिह्नों की जाँच भी करना आवश्यक होगा ।

इसके कुछ सांकेतिक भाव इस प्रकार हैं—आत्मप्रतिष्ठा शक्ति का परिचय भावकता बहिर्मुखी प्रवृत्ति भावावगम मानसिक उत्थारता विविधता निर्भोक्ता प्रणालि स्वभाव स्वच्छता भविष्य की कल्पना सूक्ष्म विद्वान् प्रभावित होने वाली प्रकृति अन्त आर ध्यान कलात्मकता प्रसन्नचित्त अस्थिर लिखावट में अप्रत्यक्ष एकाग्रता का अभाव सावधान लिखावट में नञ्च निमित्तता । लिखावट के अथ लक्षणों के अनुसार ये गुण सिद्ध होते हैं ।

(२७) छोटे अक्षर—सुव्यवस्थित लिखावट में छोटे अक्षरों में भी महत्ता बुद्धि बल की अधिकता तथा चित्त को एकाग्र करने का मनोयोग प्रदर्शित करती है । ऐसे व्यक्ति में अज्ञान की नशीनता स्वाभाविक नञ्चता विचार शक्ति निरपेक्षता रचना का बौद्धिक उद्देश्य, आचरण मङ्गल भाव नियमित व्यवहार विचार शीघ्रता अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के विशेष लक्षण पाए जाते हैं । तब कर सकना परिस्थितियों की जाँच करना अपने लक्ष्य को केन्द्रित करना आदि विचार प्रधान कार्य करने के लिए स्वाभाविक हैं । व्यक्ति के ऐसे लक्षण स्वाभाविक मानसिक प्रवाह का रोकते हैं ।

कमजोर लिखावट में सूक्ष्म अक्षर इच्छा शक्ति की कमजोरी श्रम से बचने की भावना आलस्य भय मानसिक निर्जीवता आदि कमजोर सम्भावनाओं को सूचित करती हैं ।

यह अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का प्रधान लक्षण है । इसमें चिन्तन अधिक है एकाग्र चित्त है मितप्रयत्न है रचना का प्रवृत्ति है उपर्युक्त साधना का सदुपयोग है अल्प भाषण करना अपने वास्तविक विचार को छिपा जाना सावधानी आदि गुण पाए जाते हैं ।

(२८) अक्षरों का सम आकार—लिखावट में सम आकार रीतियुक्त आचरण एवं आत्म-समय का लक्षण है । यह व्यक्ति अवसर व अनुसार आचरण कर सकता है प्रेरणा से उत्साह प्राप्त करता है । सावधानी से एकाग्रता व्यक्त कर सकता है । ऐसा व्यक्ति बहुधा अपने विचार वर्तमान में स्थिर रखता है गम्भीर है उभयमुखी प्रवृत्ति प्रदर्शित करता है अपने उपर्युक्त साधना का सदुपयोग करता है होनता की भावना नहीं आनन्दता व्यवहार-कुशल है । इसका व्यवहार नियमित रहता है । प्रवाह को ग्रहण करता है उनावर्तन का अवरोध करता है ।

उद्योगी व्यक्तियों की लिखावट सदैव अक्षरों व सम आकार में प्रकाशित

यह अवरोध सामूहिक संस्कार सावधानी दशता धय, कायकुशलता का लक्षण है।

(२५) गिरोरेखा ॥ होना—यह स्वच्छ आचरण है। परन्तु इसे मातुलिन रखने के लिए एवाग्रचित्त हानि की अधिक आवश्यकता पड़ती है। गम्भीर विचारक, जिनको अधिक लिखना पड़ता है और जिनके विचार सुलभ हुए हैं और जिनमें अपने विचार को सहज ही व्यक्त करने की क्षमता है बहुधा गिरोरेखाओं का सहारा नहीं लेते हैं।

जिसमें उत्साह अधीरता कल्पना प्रेरणा प्रवाह गतिशीलता आदि लक्षण हैं। यदि लिखावट में ये लक्षण अस्पष्ट हैं तो सावधानी अस्पष्टता उदात्तता पर भी प्रतीति हानि है फिर भी यह विचार प्रवाह में आत्मविश्वास एवं स्वच्छता प्रदर्शित करता है।

(२६) लिखावट का बड़ा आकार—जिस लिखावट में सब अक्षर बड़े आकार के बने हुए होते हैं अथवा अधिकतर अक्षर बड़े आकार के होते हैं। इससे पढ़नेवाला व्यक्ति आकर्षित होता है। ये अक्षर स्वच्छता से चलती हुई लेखनी से लिखने में अधिक स्थान धरते हैं। इनके बड़े आकार के समान ही ऊपर तथा नीचे की मात्राएं आदि अनेक चिह्न भी बड़े आकार के होते हैं। (जिस लिए लिखावट सख्या १४ और २३

दी ओह से यह ओषणां  
वि-कुसुमे लाभायक  
रे अप्य पा उतिबध्य

गिन २३

लिखावट में बड़ा आकार बहिर्गता प्रतिभा का प्रमुख लक्षण है। यह व्यक्ति अपने विचारों पर अधिक जोर देना पसन्द करता है और यहाँ-वहाँ चर फिरकर अपना काम करना पसन्द करता है। जिसका मन एक जगह नहीं लगता यह मान निक उठारना का भाव लक्षण है जिसमें मित्र-मित्रता का भावना नहीं है। यह भावना प्रधान व्यक्ति है। यह स्वच्छता में आचरण करता है। जिसमें आत्मविश्वास आत्मनिश्चय का भावना अधिक रहती है। भावावगम में बड़ा जाना जिसमें सत्य है। जिसमें कष्ट मर्त्य का शक्ति अधिक है लिखावट का आकार शक्ति का परिचय देता है। शक्तिवान् ज्ञान में कल्पना सत्य होता है। अनजाने विषयों की ओर आकर्षण होता है। मुक्तता का प्रत्यक्ष करने का प्रवृत्ति उमाह अधिपति शक्ति प्रदान करने रहने का स्वभाव भविष्य का सुख कल्पना आदि अनेक लक्षण बड़े।

लिखावट से व्यक्त होते हैं।

लिखावट का बड़ा आकार कुछ अर्थ सूचनाएँ भी देता है जिससे निम्नलिखित कम लिखावटों का अभाव युक्तियों की रचनात्मकता का अभाव अभिमान लिखने की प्रवृत्तियों और ऐसे लिखावटों की पुष्टि के लिए लिखावट के अर्थ चिन्ता की जाय भी करना आवश्यक होगा।

यसके कुछ सांकेतिक भाव इस प्रकार हैं—आत्मप्रतिष्ठा, गति का परिवर्तन भावना, अहिंसा प्रवृत्ति भावना, मानसिक उत्तरता, विविधता, निर्भीकता, प्रत्यक्ष स्वभाव, स्वच्छता, भविष्य की कल्पना, सूक्ष्म, विद्वान्, प्रभावित होने वाली प्रवृत्ति, अनेक आरंभ, ध्यान, कलात्मकता, प्रमत्तचित्त, अस्मिर, लिखावट में अपेक्षित एकाग्रता का अभाव, भावना, लिखावट में नेत्र निर्दिष्टता। लिखावट का अर्थ लिखावट के अनुसार ये गुण सिद्ध होते हैं।

(२७) छोटे अक्षर—सुव्यवस्थित लिखावट में छोटे अक्षरों में भी महत्ता, बुद्धि का अधिकता तथा चित्त को एकाग्र करने का मनोपाय प्रकट करता है। इस व्यक्तियों में अतर्कन की नवीनता, स्वाभाविक नम्रता, विचार, गति, निरपेक्षता, रचना का कौशल, उद्देश्य, आचरण, संग्रह भाव, नियमित व्यवहार, विचार, शीलता, अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के विनाश, लक्षण पाए जाते हैं। तब कर सकना परिस्थितियों की जाँच करना, अपन लक्ष्य को केन्द्रित करना और विचार प्रधान कार्य करने के लिए स्वाभाविक हैं। यकिनरत के ऐसे लक्षण स्वाभाविक मानसिक प्रवाह को रोक्ते हैं।

कमजोर लिखावट में सूक्ष्म अक्षर इच्छा, गति की कमजोरी, धर्म से बचने की भावना, आलस्य, भय, मानसिक निर्जीवता और कमजोर सम्भावनाओं को सूचित करता है।

यह अतर्कन प्रवृत्ति का प्रधान लक्षण है। इसमें चित्त अधिक है, एकाग्र चित्त है, मितव्ययिता है, रचना की प्रवृत्ति है, उपलब्ध साधना का सदुपयोग है, अल्प भाषण करना, अपन वास्तविक विचार का छिपा जाना सावधानी और गुण पाए जाते हैं।

(२८) अक्षरों का सम आकार—लिखावट में सम आकार, रीतिपुक्त आचरण एवं आत्म-समय का लक्षण है। यह यकिन अवसर के अनुसार आचरण कर सकता है, प्रेरणा से उन्माद प्राप्त करता है। सावधानी से एकाग्रता व्यक्त कर सकता है। ऐसा व्यक्ति बहुधा अपन विचार वक्तव्य में स्पष्ट रखता है, गम्भीर है, उभयमुखी प्रवृत्ति प्रकट करता है, अपन उपलब्ध साधना का सदुपयोग करता है, होनता की भावना नहीं, आनन्द, व्यवहार-कुशल है। इसका व्यवहार नियमित रहता है। प्रवाह का प्रणय करता है, उतावलेपन का अवरोध करता है।

उदात्त व्यक्तियों की लिखावट सदैव अक्षरों के सम आकार में प्रकटित

लिखावट का मनोविज्ञान

होती है जिम्मे योजना पूर्वनिर्धारण एवं प्रगति तथा उत्तरता का समुचित नियोजन रहता है।

इस प्रकार की लिखावट में यदि शब्दों के अंत में अक्षरों का आकार छोटा होने लग तो निश्चय ही समझ लेना चाहिए कि यह व्यक्ति अपनी अधीरता का अवरोध कर रहा है और अपने विचार को सावधानी तथा गम्भीरता से ही व्यक्त करना चाहता है। ऐसे अक्षर अस्पष्ट हो जाने से आत्मविश्वास तथा क्रियाशीलता का ह्रास प्रकट करते हैं।

अक्षरों के सम आकार की वास्तविक शक्ति संगठन की क्रिया में है। अच्छी स्पष्ट गुढ़ तथा ससंयोजित सम आकार की लिखावट वाले व्यक्ति का किसी भी कठिन परिस्थिति में विश्वास किया जा सकता है।

(२६) दाढ़ और झकान—लिखने का सहज गुण सीधी खड़ी हुई लम्बा बर लिखावट बनाने का है। इसमें अक्षर नीचे की रेखा पर सीधे खड़े हुए दिखाई देते हैं। भारतीय लिपियों में जहाँ शिरोरेखाएँ बनाने की प्रथा है वे अक्षर ऊपर से सीधे नीचे की ओर वनते हैं।

वास्तव में प्रत्येक लिखावट ऐसी नहीं होती। कुछ लिखावटें मूल रेखा से जो कि रोमन लिपि में नीचे और भारतीय लिपियों में ऊपर होती है पीछे की ओर अथवा आगे की ओर झुक जाती हैं। पीछे की ओर का झुकाव लेखनी को दाढ़ और ल जाना है तथा आगे की ओर झुकने वाली लिखावट में लेखनी को दाढ़ और ल जाना है। अनेकानेक लिखावटों में देखा जाता है कि लेखनी कभी पीछे की ओर झुकती है और कभी आगे की ओर झुकती है और यह स्पष्ट दिखाई देता है कि लिखावट की लम्बाई के रेखाओं का चक्राव निश्चित नहीं है तथा मिश्रित है। (भेदिए लिखावटें सख्या ११ से १६ तक) लिखावट में अक्षरों का आग तथा पीछे झुकने की परिस्थिति विविध लक्षण प्रस्तुत करती है। मनोवैज्ञानिक व्याख्या में समता महत्व अधिक है।

आग का आर चकने वाली लिखावट से मनावय का व्यग्रता व्यक्त होती है। यह व्यक्ति अपना अतमन स्पष्ट कर देने का शक्ति आनुर है। इसकी भावनाओं में अवरोध नहीं है। यह ज्ञान में है मित्रमार्ग है। समाज में अथ व्यक्तियों का साथ सुगमता में व्यावहारिक मण्डल स्थापित कर सकता है। यह स्पष्ट है उमात्तम काम करता है। पुराना लोगों का भ्रूण भविष्य की कल्पना करता है। हमें आत्मविश्वास है अपने ऊपर भगवान् है। अपनी प्रेरणा में काम करता है। चला लिखा है तथा अपने कार्यक्रम में आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है। यह लिखावट भी भावना प्रधान है। रागात्मक भावना प्रदर्शित करती है। एक व्यक्ति अनैकानेक कार्यक्रम बनाते हैं और उनका मनचाह छात्र भाग्य है और सिंग नय काम में लग जाते हैं। (लिख लिखावट सख्या १६)

आग की ओर चकने वाला लिखावट लिखन का गति प्रदर्शित करती है।  
 बटुया यह लिखावट आग का आर चकता नहा है। यह लिखन व आग में आग  
 की आर चकती है। लिखनी अपनी प्राप्ति में आग का आर भागता है और लिखा  
 वार साध अक्षरों का अपने गड आर झकाती जाता है। हमकी तुलना हम प्रकार  
 की जानी है कि जब कोई व्यक्ति जल्दी भागता है तब उसने गरीब का ऊपरा  
 भाग स्वयं आग का ओर चक जाता है। हमी प्रकार यह व्यक्ति जिमा व्यक्ति  
 तथा परिस्थिति में मिलन के लिए स्वयं अपना हाथ आग चकता है।

आतीत कलर का सौन्दर्य दिखाने पर  
 ५७७ ताज्जिर-बिहार, न. खो. म. म. म.  
 ५७७ शक्ति व्याख्या और शक्ति कला

चित्र २४

अध्यवसाय उत्साह परिश्रम की गति ननुव की भावना बहिमस्वी  
 प्रवृत्ति निर्भीचना मनावेग का प्रधानता गतिमानता ननुव आग प्रमनचित  
 मिन्नमार रागात्मक मनोवृत्ति गैरिचना आत्मविश्वास आग लिखन हम प्रकार  
 की लिखावट में प्रदर्शित हो सकता है।

(३०) पीछे झकनवाली लिखावट—एमा लिखावटों में अक्षरों की लिखा  
 वार रखाण शिखर अधिनतर आधार अक्षर लड हाउ हैं नाचे व भाग में आग  
 की आर बढता है और लिखने में मातूम पत्नी हैं कि अक्षर पीछे की आर चुक हुए  
 हैं। रामन लिपि में मूल रखा म हम लिखाकार रखाजा का कोण बाई आर ६०  
 डिग्री से कम रहता है।

यह पाछ की आर का चकाव हम लिपि व स्वच्छ प्रसार में अवराप का  
 चिह्न है। लिखन वाला व्यक्ति आग चकन से हाथ राकता है। (दिए लिखावट  
 सख्या ११)

मानसिक इन्द्र में भी यह अवस्था आती है। कुछ व्यक्ति अपने लिखा  
 वार में ही अपने बडा की हम प्रकार का लिखा गति लिखावट की नकल करना  
 सामर्थ्य हैं। यह प्रारम्भिक अवस्था है। प्रारम्भिक अवस्था के कारण यदि लिखा  
 वार पाछे का आर चुकती है तब हम गति विद्यमान रहती है अक्षर मूठ हुए  
 होत हैं और अक्षर अवरापक चिह्न प्राप्त नहा हाउ।

हम प्रकार की लिखावट व मूचक मनावगतिव गति हैं। फिर भी एमा  
 लिखावट व उदाहरण में गति की भावना तथा सत्त्व का दृष्टि सत्त्व ही सम्भावित  
 लिखावट का मनोवितान



रहती है। इसकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या में सावधानी महज मृत्यु को छिपाने की वृत्ति आत्मरक्षा की भावना आगेचना से डरना अधविश्वास आत्मविश्वास की कमी सप्रही स्वभाव आदि अथ इस प्रकार के लक्षण प्रधान रहते हैं।

फिर पीछे झुकने वाली लिखावट प्रचण्ड प्रयास की निपरीत है तथा ऐसा लिखने वाले व्यक्ति के मानसिक गठन में भी ऐसे लक्षण पाए जाने की सम्भावना रहती है।

यह लिखावट में अवरोध का एक निश्चित चिह्न है। लिखावट में अवरोध के अर्थ अनेक चिह्न होते हैं। साधारणतया सावधानी के विविध लक्षण हैं। इसका एक उदाहरण लिखावट संख्या २३ में है।

यह लिखावट स्थिर है स्पष्ट है तथा एक अच्छे स्वस्थ हाथ से लिखी गई है। आगे की ओर धीरे-धीरे प्रगतिशील लिखावट दिखाई देती है। परंतु हमें अगर टी को काटने वाली छोटी समतल रेखाएं अक्षर की लंबी रेखा तक आकर रुक जाना हैं। इसका काटने के लिए आगे नहीं बढ़ती। इसका साधारण धर्म अगर की लंबी रेखा को काटता है तथा जाय करता है जैसा कि रोमन लिपि का अक्षर 'e' लिखावटों में हमने को मिलता है। इस प्रकार का व्यक्ति अपने हाथ में आगे बढ़ने में सावधानी सतर्कता पर विशेष ध्यान देता है। इसके उदाहरण तथा अन्य प्रगतिवादी लक्षणों पर आवश्यकतानुसार हाथ रखने का अवरोध रहता है। हमें व्यक्ति का कुछ भी हाथ बताने हैं। मातृ विचारक युक्ति से तथा अच्छी तरह में करना चाहते हैं। जोर नहीं देते। नियम-प्राप्ति के लिए हमें व्यक्ति का विकास किया जा सकता है। एक अन्य लक्षण भी इसी प्रकार का है जो कि हम लिखावट में लिखा जाता है। यह भी अंतिम अक्षर की अंतिम रेखा समाप्त रूप में दाएं ओर जाय करती है। यह भी लिखावट में अवरोध का विविध चिह्न है और ऊपर लिख गए विवरण का समर्थन है।

हम लिखावट के विविध गुणों में प्रकार है अवरोधमूलक सावधानी सतर्कता अंतर्भाव दिखने महज मृत्यु का छिपाना जम्हायमानिक सतर्कता हमें आगे बढ़ने का भावना सहाय आगेचना में डरना तथा कष्ट अध विश्वास का छान मरना स्वनिष्ठता आत्मविश्वास का कमी। लिखावट के अन्य प्रगति लक्षणों के साथ इनका समावेश किया जा सकता है।

(३१) अनिश्चित अक्षर—हम आगे बढ़ते हैं कि लिखावट में कुछ अक्षर पाए जा सकते हैं जो मातृ लिखावट से और कुछ जाय जा सकते हैं मिश्रित भाव में रहते हैं।

हम प्रकार का लिखावट में विविधता = चलावता = भावना = है जो कि लिखावट के सम्पूर्ण चरित्र का निष्ठापूर्वक किया जा सकता है।

हम लिखावट के दोनो चिह्न हैं जम्हायमान अस्थिरता आराधित

यथावत् यद्वात्रम्या असमान आचरण परिवर्तनगीत्या मानसिक अपरिपक्वता  
अच्छेदुरेक ज्ञान का अभाव रुचि स्थान स्पष्ट न होना मानसिक उत्पन्नभुयल ।  
यदि ज्ञियावत् हो इस प्रकार का है जा कि लिखावत् के अर्थ उदाहरणों में तथा  
जा सकती है ता अविश्वसनीय छल-वप-अन्य भाषण आदि चरित्र का गिथिना  
क लक्षण समर्थना आवश्यक है ।

(३२) सोधे म्हे अक्षर अनुगामित म विद्वाम करत हैं । ननिकता  
एव स्वतंत्र विचार आत्ममयम ममत्व आत्मनियन्त्रण परिपक्वता सम्भारता  
स्वावलम्ब नीति एव रीनियुक्त निणय ह्मत्तापन आत्मसम्मान की भावना नि  
पत्तना की भावना, 'यायप्रियता अल्पभाषण आदि' लक्षण व्यक्त गेन हैं ।

माध खदे अक्षरों की बनावट में सम आकार की लिखावट की भावना है ।  
यह भी समकोण वत् जा सकती है जिसमें अनावश्यक उपाह एव अत्राध नही है ।

अम प्रकार के अक्षर यदि अधिक लम्बे हैं अथवा ऊपर या नाच की भाषाए  
अधिक लम्बाकार हैं तो विचार गति एवं प्रज्ञान गति की अधिकता समर्थना  
चाहिए । अत्र आशय करता है कि उसमें सामान्य व्यक्ति में अधिक बुद्धि है  
ज्ञान है एवं क्रियाशीलता है । यदि लिखावट का यदि अच्छी होता य गुण  
मिष्ट है ।

(३३) गोलाकार लिखावटें—गोलाकार रखाए बनाना मन्त्र होता है ।  
यह कोमलता का साधारण लक्षण है । गोलाकार लिखावटें जावन का सहज  
सुगम भाग अपनाता पसन्द करता है । ऐसा लिखावटें अपनी स्वाभाविक क्षमता  
में अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहती हैं ।

गोलाकार लिखावट में बनेरता लगना देवाक्षर लिपिना अवरोध का  
लक्षण है । ऐसा व्यक्ति अपनी भावना का प्रज्ञान नहीं करता । अपन विचार एवं  
भाव का रहस्यमय रक्ता है तथा साम्प्रतिकता व्यक्त नहीं जान पता ।

कोमल लिखावट में गोलाकार अक्षर मृदु स्वभाव को व्यक्त करते हैं ।  
य किसी प्रकार की उपमा सहन नहीं करत । यह बल से नहीं बुद्धि में अपना  
निष्ठा करना चाहते हैं । मधुर अभिरुचि में सामाजिक प्रभाव उत्पन्न करते हैं ।  
काम और गोलाकार रखाए कोमल अभिरुचि के चिह्न हैं ।

काम अभिरुचि कोमल मानवीय प्रवृत्तियां सहजगीत्या मन्त्रप्रवाह  
शान्ति स्वभाव बौद्धिक सहानुभूति नम्र स्वभाव ह्याम्य विनोद मन्त्री की भावना  
प्रमद्व्यवहार सवाचा आत्मा गैरिक मन्त्रा मधुर स्वभाव आदि प्रज्ञान  
चरित्र के लक्षण हैं । यदि लिखावट स्थिर है तो चरित्र के स्थिर एवं स्वस्थ लक्षण  
प्रस्तुत होंगे अन्यथा अन्य अपरिपक्व लक्षण व्यक्त होंगे ।

(३४) कोणाकार अक्षर—लिखावट में कोणों का अधिकता स्वभाव में  
बटोरता की सूचक है । भाग लिखावट में कोण उपजा तथा बटुता के लक्षण हैं ।

ऐसे व्यक्ति अपने विचारों पर दृढ़ रहते हैं। य किसी तरह से दबने का नहीं।  
य लोहे की तरह है। टूट जाएगा मगर झुकेगा नहीं। अमर इनके हठ में स्वच्छ

## निबन्ध २५

धारा स्वभाव प्रतीति हान लगता है। विरोध इनको असहनीय है। शोध करना  
स्वभाव है (लिखाया संख्या २४)। इस प्रकार के व्यक्ति स्वभाव में तार्किक  
निर्भीक उग्र स्वभाव सक्षत हात हैं। इनमें तुरन्त निणय करने की क्षमता होती है।

परन्तु एसी बहुत कम लिखाये लिखा देनी हैं जिनमें अधिपति कोण  
निर्मा देने हैं। अधिपति एसी लिखाये मित्रनी हैं जिनमें कोण तथा मातापिता  
रक्षाए सम्मिलित रहता है।

रेखाए मिश्रित और गोलाकार—यस सम्मिश्रण उचित मात्रा में तथा  
उचित स्थान पर सन्तुलित मानसिक गठन प्रतीति करता है। जमी आवश्यकता  
हो आयाचित आचरण जिनमें सुदृढ़ तथा भावुर नभना का सामाजिक प्रतीति  
होता रहता है। एम व्यक्ति मंत्री की भावना सहृदयता मीत्रिक कल्पना धारण  
वानुगी के साथ ही परिधम आमगममान विचार गति तथा क्रियाशीलता का  
परिधम है। सामाजिक जीवन में सफल निर्माण इनकी एक रंग में होता है।  
एक व्यक्ति के मानवीयता तथा सम्भारता में एक अन्य व्यक्ति प्रभावित  
हो जाता है। अपना प्रगति बुद्धि के द्वारा अपने मतारण का मनुष्याण एम  
व्यक्ति जीवन का विभिन्न परिस्थितियों में सफलतापूर्वक करत रहते हैं।

यदि हम प्रकार के लिखावे में तथा वाणीकार लिखावे में रक्षापार  
रक्षाए स्थान के साथ में भाग में ना निर्णय में यह व्यक्ति हठी और स्वच्छाचारी  
है। हम न के करना सुनिश्चित नहीं है। हम मनुष्याण प्राप्त करने का माध्यम  
सक्तिपूर्ण जाना आवश्यक है।

( ५ ) हस्ता १२—हस्ता १२ का प्रथम ध १२ अग्र और स्पष्ट तथा अग्र  
आर मित्र है। यह निष्पृष्टता एवं याधप्रियता का रिश्ट पाया गया है। यह  
हस्तिक रिमा भा ममस्या का निष्पृष्टता में एक सक्ति है। अपनी ममता में यह  
व्यक्ति और व्यक्ति के का जीवन तथा समाज के अग्र आचरण में परममता  
है। यदि हम एक प्रकार का समाज में एक प्रकार में सक्ति में तो आमगममान का  
भावना सक्ति करता है और दूसरे हस्तिकता में समाज का भावना पाता है। यदि  
हम न के ना मनुष्याण मम है समाजिक है।

एक व्यक्ति मनुष्याण के समाज में समाज उमक भाव एवं तथा अन्य  
प्रकार का समाज भाव है। यदि हम समाज में और स्पष्ट हो समाज में समाज

१ म है ता त्वक व विचार का अन्तिम निणय सूचिन करती है। वास्तव म यह रखा एक सजावट की तरह है और इसका आशय मूर्खता का नाश तथा प्रज्ञानवाग्मिता ही है। इस रखा का आवश्यकता नहीं है। परन्तु मानव स्वभाव ही ऐसा है जिसम वास्तविकता से आगे आचरण करना स्वाभाविक है। य रखाए विविध प्रकार की हाना है तथा इनक व्यक्तिगत चरित्राकृत विय जा सकत हैं।

(३६) यथाय छोटे चिह्न—वस्तुम त्वक लिखावट क अनर छाट चिह्ना का अवहटना करत हैं अम मात्राएँ अनुस्वार आदि। परन्तु य निश्चिन है नि एम लोग सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त नहा कर पाव—रानियुक्त मुमयानि आचरण म छोटी छोटी वानें बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता हैं। गीघ्रता म शिवना छाट चिह्ना का छोटा जान क लिए उचित नहा है। छाट चिह्नों का उपयुक्त प्रयोग चरित्र निमाण काय म प्रभावगामी है।

(३७) अक्षरों के अन्तिम चिह्न पूरा—अन्तिम रखाए एक चिह्न यदि पूरा हैं और अधक नहा हैं ता किसा काम का पूरी तरह करन की गति एव वृत्ति प्रदर्शिन करत हैं। यदि य छाट लिख गए हैं अथवा अपूर्ण एव अस्पष्ट हैं ता त्वक भयपूर्वक अपना काम पूरा नहा कर सकता। अपना वचन भी पूरा नहा कर सकता। कम उतावलापन है तथा किंवदन्त्या श्रिया म संकटा प्राप्त नहा कर पाता। इसक लिए लिखावट एव सम्पूर्ण श्रिया है जा कि यदि अधूरी रह गई ता किसी तरह म मा काम पूरा नहा हुआ यह निश्चिन है।

(३८) मानव-स्वभाव—मानव-स्वभाव एक गहन परिस्थिति है। इनम अनेकतरह हैं जा एक-दूसर स अनिवाय रूप म सम्बन्धिन तथा उत्पन्न हुए हैं। जीवन क प्रारम्भ म हा व्यक्ति क मानस पर अनकानक प्रभाव पड़त हैं और उन मक्का अमर उनक ऊपर अनिवाय रूप स बना रहता है। जिस तरह स एव डाक्टर किसी भा बीमारी क निदान क लिए गरीर का अनकानक अवस्था का विश्लेषण करता है और अन्त म उनक योग म किमा निष्पत्ति पर पहुँचता है उसी प्रकार मनावना निर भी व्यक्तिरव का प्रकाशित करन बा अनकानक स्थिति का विश्लेषण करके व्यक्तिगत योग पर पहुँचता है।

प्रत्येक व्यक्ति एव अनाया उत्पहरण है जिसम अनकानक व्यक्तिगत लक्षणों का सम्मिश्रण है। उन स्थिति का पहचानन उनकी नाप-तोला करना ही व्यक्तिगत ज्ञान का लक्ष्य है। हस्तलिपि विज्ञान क द्वारा अनकानक स्थिति लिखावट की रचना स प्रकाशित होत हैं। एक माषा-मा प्रश्न है, परन्तु परम आवश्यक प्रश्न है। एक व्यक्ति जमी लिखावट लिखता है वमी शक्या लिखता है किसी अथ प्रकार की लिखावट क्यों नहा लिखता इस प्रश्न क उत्तर म उम स्थिति बा व्यक्ति क व्यक्तित्व का वास्तविक चित्र मिलता बाणिए। यही हमारा प्रयाम है।

ऐस व्यक्ति अपन विचारा पर दृढ़ रहन हैं। य किता तरह स दबने वाला नही। य लोहे की तरह हैं। टूट जाएंग मगर चुकेंगे नही। अकसर इनक हठ स स्वच्छा

### चित्र २१

चारा स्वभाव प्ररिणित होने योग्यता है। विराध इनको अमहनीय है। श्रेष्ठ इनका स्वभाव है (लिखावट सख्या २४)। इस प्रकार के व्यक्ति स्वभाव स तार्किक निर्भीक उग्र स्वभाव संचित होन हैं। इनम तुरन्त निणय लेन की क्षमता हाता है।

परंतु ऐसी बहुत कम लिखावटें लिखाई देनी हैं जिनम अधिकतर काण लिखाई देने हैं। अधिकतर सभी लिखावटें मिलनी हैं जिनम काण तथा गागराकर रेखाए सम्मिश्रित रहती है।

रेखाए मिश्रित और गोलाकार—यह सम्मिश्रण उचित माप स तथा उचित स्थाना पर सन्तुलित मानसिक गठन प्ररिणित करता है। जती आवश्यकता हो चायोचित आचरण जिनम बुद्धिबल तथा भावुक नम्रता का सामंजस्य प्ररिणित हाता रहता है। ऐसे व्यक्ति भत्री की भावना सहृदयता मौलिक कल्पना वाक्य चानुरी क साथ ही परिश्रम आत्मसम्मान विचार शक्ति तथा नियामीलता का परिचय देने है। सामाजिक जीवन स सफल निर्देशन इनकी दख रेश स होता है। इनक व्यक्तित्व की मानवीयता तथा सम्भारता से जय अनक व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहा रहन। अपनी प्रखर बुद्धि क द्वारा अपन मनावग का सदुपयोग ऐसे व्यक्ति जावन की विभिन्न परिस्थितिया स सफलतापूर्वक करत रहत हैं।

यदि इस प्रकार का लिखावट स तथा काणाकार लिखावटा स लम्बाकार रखाए रेखनी के दगाव से भागी हैं तो निश्चय ही यह व्यक्ति हठी और स्वच्छाचारा है। इस तक करना युक्तियुक्त नही है। इससे सहयोग प्राप्त करने का माध्यम युक्तिपूर्ण हाना आवश्यक है।

(३५) हस्ताक्षर—हस्ताक्षर का प्रथम अक्षर अग्र्य और स्पष्ट तथा अग्र्य अक्षर मित्र हुए। यह निस्पृहता एवं चायप्रियता का चिह्न पाया गया है। यह व्यक्ति किसी भी समस्या का निष्पत्ता स दख सकता है। अपनी समय स यह व्यक्ति अपन व्यक्तित्व का अपन तथा समाज क अग्र्य आचरण स परे समझता है। यदि यह पहला अक्षर आकार स जय अक्षरा स बडा हा ता आत्मसम्मान की भावना सूचित करता है और दूसरे व्यक्तिता स सत्कार की भावना चाहता है। यदि ऐसा न हा तो उसका दृष्टिबाण सम है तथा सामाजिक है।

अनक व्यक्ति हस्ताक्षर क उपरान्त जयवा उमक नीच एर तथा अनेक प्रकार का रखाए सांचत हैं। यदि यह रखा सीधी और स्पष्ट हा जमी नि उपाहरण

१ म है ता लक्षक व विचार का अन्तिम निणय सूचन करता है। वास्तव में यह रेखा एन सभाव की तरह है और इसका आशय मूल लक्षण या की गलती तथा प्रगतिकारिता ही है। इस रेखा की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मानव स्वभाव ही ऐसा है जिसमें वास्तविकता से आगे आचरण करना स्वाभाविक है। य रखाए विविध प्रकार का होना है तथा इनके यकिनगत चरित्रावन विषय जा सकत हैं।

(३६) यथाय छोटे चिह्न—यन् मल्लक लिखावन व अनक छा चिह्न की अवहलता करते हैं जम मात्राण अनुस्मार आदि। परन्तु यह निश्चित है कि ऐम लोग सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त नहा कर पात—रीनियुक्त सुसंयोजित आचरण म छोटा छोटी बातें बहुत मन्त्वपूर्ण सिद्ध हा सकती हैं। गीघ्रता मे लिखना छोटे चिह्न का छोटा जान व लिए उचित नहा है। छा चिह्न का उपयुक्त प्रयोग चरित्र निर्माण काम म प्रभावगात्री है।

(३७) अक्षरों के अन्तिम चिह्न पूण—अन्तिम रेखाए एव चिह्न यदि पूण हैं और अधकटे नहीं हैं ता किमा काम का पूरी तरह करने की गति एव शक्ति प्रगति करत हैं। यदि य छा लिख गए हैं अथवा अपूण एव अस्पष्ट हैं ता त्वक धमपूषक अपना काम पूरा नहा कर सकता। अपना वचन भा पूरा नहा कर सकता। इसम उतावलापन है तथा विश्वमनीय क्रिया म मफगता प्राप्त नहा कर पाता। इस लिए लिखावन एक मपूण क्रिया है जा कि यदि अधूरी रह गई ता किसी तरह स भी काम पूरा नही हुआ यह निश्चिा है।

(३८) मानव-स्वभाव—मानव-स्वभाव एक गहन परिस्थिति है। इसम अनेकतत्त्व हैं जो एक-दूसरे से अनिवार्य रूप से सम्बन्धित तथा उत्पन्न हुए हैं। जीवन के प्रारम्भ से ही व्यक्ति के मानस पर अनजाने प्रभाव पड़त हैं और उन सबका असर उसक ऊपर अनिवार्य रूप से बना रहता है। जिस तरह स एक डाक्टर किसी भा बीमारी के निदान के लिए शरीर की अनेकानेक अवस्थाओं का विरूपण करता है और अन्त म उनके योग म किसी निष्पत्ति पर पहुँचता है उसी प्रकार मानवता निज भी व्यक्ति के प्रगति करने का अनेकानेक लक्षणा का विरूपण करके व्यक्तिगत योग पर पहुँचना है।

प्रत्येक व्यक्ति एक अनाथा उताहरण है जिसमें अनेकानेक यकिनगत शक्तियों का सम्मिश्रण है। इन शक्तियों का पहचानना उनकी नाप-तोला करना ही व्यक्तिगत अज्ञान का उद्य है। हस्तलिपि विज्ञान व द्वारा अनेकानेक शक्तियाँ लिखावट की रचना म प्रगतिगत होत हैं। एक सीधा-सा प्रश्न है परन्तु परम आवश्यक प्रश्न है। एन व्यक्ति जमी लिखावट लिखता है वसी ही क्या लिखता है किमा अय प्रकार की लिखावट क्या नहा लिखता उस प्रश्न के उत्तर म उस लिखन वा व्यक्ति के यकित्व का वास्तविक चित्र मिलना चाहिए। यही हमारा प्रयाम है।

इसके लिए जो प्रयोग सिद्ध हो चुके हैं उनका ज्ञान उत्सुकता भौतिक कल्पना तथा अभ्यास से आवश्यक है। लिखावट के अनेक तत्वों में पाए जाने वाले चरित्र के समान व्यक्ति के प्रधान निर्देशक एवं विश्वासयुक्त ग्लान पाए जाते हैं।

लिखावट के भौतिक चिह्नों का मनन तथा उनका मानवज्ञानिक विवरण का जितना सम्भव हस्तलिपि के द्वारा चरित्रावन के लिए पर्याप्त है। तथ्य पर ध्यान देना चाहिए। प्ररणाजनक कल्पना का प्रवाह उत्तावलापन और आचरण इस कार्य में बाधक हैं।

## विलक्षण लिखावट—कुछ व्यक्तिगत अनुभव

समय बहुत कम है और इसमें अनगिनत व्यक्ति हैं—इतने कि जिनका जन्म-मृत्यु भी नहीं। बाज़र युवा और बूढ़ स्त्री और पुरुष सब हैं और भगवान्‌गान के नाते सब बाज़र अलग व्यक्तिगत द्वाइयाँ हैं। इन सबका अपना निजी व्यक्तित्व है। सब अपने-अपने क्षेत्र में ज़ानावरण में, समाज में अपना काम करते हैं अपना स्थान बनाते हैं और अपने चरित्र की मौलिकता प्रकट करते रहते हैं। सबकी निजी विशेषताएँ और समस्याएँ हैं।

इन सबकी विशेषताओं की समझना अथवा यह कह सकना कि ऐसा सम्भव है वास्तव में बहुत कठिन है। यद्यपि यह आवश्यक हो जाता है कि कुछ माटा-सा वर्गीकरण किया जाए।

बहुत-से लोग तो एस हैं और इसमें समार की अधिकतर जनता आ जाती है जो बहुत ही साधारण व्यक्तित्व का है। यह है जनता का सामान्य मनुष्य। यह बहुत बड़ा समूह है जिसमें कोई ग्रास बात नहीं है। कोन इतनी विचित्रता नहीं है जिसका स्तर सामान्य स्तर से ऊपर उठा हो। वैसे तो ये सब व्यक्ति अपने अपने भय में अपनी अपनी जगह बनाए हुए होते हैं परन्तु कोई कुछ अधिक प्रखर-बुद्धि है जो कम बुद्धि-बुद्धि है। कोई आत्मज्ञान में आगे बढ़ा हुआ है तो कोई क्रियाशीलता में, चपलता में छत्र-चपलता में या कामचोरी में आगे बढ़ा हुआ है। परन्तु हमें समाज के साधारण पर बाइ अधिक असर नहीं पड़ता। ऐसे व्यक्तियों का चरित्र विचित्र करने में उनके व्यक्तित्व के कारण इधर उधर में लगाने परत पड़ते हैं। वही चमक नहीं दिखाई देती।


एक-दो ऐसे व्यक्तियों का वर्ग है जो समाधारण स्तर से नीचे है। ये ऐसे लोग हैं जो व्यक्तिगत चरित्र के सामान्य लक्षणों में अपूर्ण हैं। इन हैं। या तो उनका बुद्धि अथवा सामान्य भावदण्ड कम है या यह व्यक्तिगत चरित्र के किसी लक्षण में कम है या उनका अभाव है। अपनी इस प्रकार का कमी के कारण हम



प्रचार के 'यक्ति पिछड़े हुए' व्यक्ति कहते हैं और इनका भी अच्छे धनात्मक गुण हैं व सामने नहीं जात। मनावनानिक विरोध इन व्यक्तियों का 'यक्तित्व' निर्धारण करते हैं और इनमें सुधार लाने का प्रयास करते हैं। कम से कम उनकी निम्न करने व प्रयत्न करते हैं।

जिन लोगों से हम प्रभावित होते हैं व हैं वचे हुए व व्यक्ति जिनमें महानता के कुछ लक्षण प्रतीत होते हैं। बहुधा उनका सम्पूर्ण 'यक्तित्व' प्रभाव गायी होता है उनकी बुद्धि की प्रसरता सामाजिकता आत्ममूल धर्मता निया गोता मौलिक कल्पनागोता आदि अनेकानेक गुण एसा 'यक्तित्व' प्रस्तुत करते हैं जिसका हम सहज ही अभिमान करते हैं। उनकी बदना करने के लिए प्रयत्न हा जाते हैं। इनकी निजी विपत्ताओं की खोज करने का प्रयास मानव-व्यभाव की दुर्दृष्टता की ओर ले जाता है। ऐसे 'यक्तियों' में कुछ ऐसे प्रकार की विचलता होती है जिसमें हम प्रभावित हुए बिना नहीं रहते।

मेरा सबसे प्रथम सम्पर्क हुआ था 'य' प्रकार के एक महान् 'यक्ति' से सन् १९३६ म। आकाशवाणी स्टेशन 'ग्वेनर' में मुझे भाग्य से नौकरी मिल गई थी। नियुक्ति अस्थायी थी परन्तु थी आकर्षक। यह बहा के नाटक विभाग में थी जिसके छाने अधिकारी स्वर्गीय श्री गोबत धानवी थे। यह नौकरी ठके पर होता थी मामिक वतन पर नही। और नियुक्ति पत्र पर हस्ताक्षर होने पर स्टेशन मंचालक के। स्टेशन सचिव 'य' थीमान् एन ए एस 'य' मणन। कभी इनके दान का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था 'य' नाम मुना था। जब मुझे नियुक्ति पत्र मिया गया तब इनके पत्र दान हुए। यह व्यक्तिगत परिचय नही था—केवल उनका हस्ताक्षर से सामना हुआ था। गिवाकट उन्हाहरण सख्या २६ म प्रस्तुत है।

Yours faithfully,  
  
 For and on behalf of the  
 Governor General in Council  
 1/6

चित्र २६

बा' म 'य' कार्य'य' म मुझे कुछ अस्थायी टाइप का कार्य भी करना पडा। 'य' समय भर सामन बहा व अधिकारियों के 'य' हुए पत्र भी टाइप व 'य' आया करते थे। हस्ताक्षरियों का विविधता से भी यह बरा पहा सम्पर्क

था। कुछ शिष्याओं ने लगी हानी थीं जिनका टाँप करने में आनन्द आता था। यमराज भी जोर शोर से हँसता था और इनकी पत्नी महान् हँसता था। परन्तु अनेक शिष्याओं ने लगी हानी थीं जिनको स्पर्श हो मन बहुरा हो जाता था। यमराज का लिखावट में स्थान-मन्त्रों का महान् को लिखावट भी थी। इनकी महान् लिखावट वं अगस्त प्रायः एक इंच ऊँचे होने थे और अगस्त का बनावट बंकर सीधा खींचे जाते हँसता था। इस तरह से वह एक पूरा कापु प्रायः ४ अक्षरों आठ मनरा में भरता था।

यह सब पढ़ा इस तरह का लिखावट टाँप के लिए यमराज पाम पट्टी ताँ में समान गया कि आज नीकरी का अन्त है। माय हो उनके चपराभा में आया और उसने कहा कि बड़े माह्व न बुझा है। यमराज की लिखावट लिखनेवाला महापुरुष का स्वरूप था। अनेक उनके सामने प्रस्तुत हुआ। वह मरा कर्माद की कल्पना पढ़ा मने विषय एव य और उन्होंने मुझे अपना लिखावट पत्नी मिलाया। उनका बाँध उनके बगीचे पञ्चन के अनेक अवसर मिले।

आज बीस वर्षों में अधिक हो चुके हैं विविध प्रकार का लिखावटें दत्तन एव और उनका व्यक्तिगत चरित्राचन करते हुए परन्तु यथा इस प्रकार की काँ स्मरी लिखावटें स्वरूप का मिली और न श्री यमराज जमा का व्यक्तिगत हाँ मिला। आज तब यथा भी समान मन में आया कि उनके चरित्र में लगी सौन्दर्य-शक्ति या अथवा विषय-शक्ति या त्रिकोणीय यह कहा जा सके कि वह यमराज का लिखावट लिखने में अथवा इस प्रकार के हस्ताक्षर करने में यमराज प्रस्तुत है।

उनका ज्ञानन बाल में ही जाना था कि उनके व्यक्तिगत विषय था। वह उमाहू मायम निर्माणात्ता का आनन्द था। वह उमाहू अथवा राय का था। लुगता महापुरुष प्रारम्भ में आता था। लिखना के व्यवहार में श्री यमराज बहुत ही कुशल था। परन्तु यथा विषय और मने भी योग्य अणिष्ट व्यवहार का सक्ता होता था ताँ उनका उत्तर नुरा ही था य। विषय का स्वरूप मन्त्रात्ता नहीं था जा समानता से उनके सामने करने का साहस महान् ही कर सके। उनका व्यवहार में सब तरफ में विद्यान्ता था—विद्यान्ता महापुरुष उमाहू नासन आयाजन् मन्त्री सबगुण-श्रेष्ठ एव महान् था। हस्ताक्षर में स्वरूप बं आकार की २१ ममा नाल्तर शरारे माचना और प्रत्येक हस्ताक्षर में मन्त्र एक-आ बनावट में विधिबन् विषय भव और परिपूर्णता का अपूर्व समागम था जा कि एक साथ हाँ गम्भार विषय निधाय निष्ठा और बन्तुर विद्यान्ता प्रशान्त करते हैं।

विशेष लिखावट में यमराज पञ्चविध था जा लिखावट के अध्ययन का अध्ययन बनकर रह गया।

सन् १९४२ में एक दूसरे अधिकारी के सम्पर्क का श्रावण करने की

नियुक्ति प्राप्त हुई। यह काम दिल्ली में था। अधिकारी अग्रज था। भारतीय सरकार के मंत्रालय में। यह श्रीमान्जी मुचको गीघ्रख दिया करते थे। मैं इनका शीघ्र उत्तर था। कभी तो इनके गीघ्रख उनके अपने यन्त्रासन विषय हुआ करते थे और कभी-कभी व्यक्तिगत चरित्र चित्रण के छोटे विवरण। मैं दबना था कि इनके पास उनके और विभिन्न विभागों से फाइलें आती रहती थी जिनमें अनेकों अधिकारियों के हाथ के लिखे हुए लख प्रतिबन्ध आते हुआ करते थे। इनका निरीक्षण करते हुए यह व्यक्तिगत चरित्र चित्रण वाला जात था।

यह लख बहुत ही शुद्ध हात थे। किम्वं विषय में हैं यह मुझ कभी पता नहा चला। केवल जो लिखा जाता था वह मुझे मिलता था टाइप करने के लिए।

बाद में पता चला कि अनेकानेक अधिकारियों की लिखावटें होती थी। इन फाइलों पर और इस तरह से हस्तलिपि विज्ञान के द्वारा उनके व्यक्तिगत परन्तु गोपनीय चरित्रावली लिखे जाते थे। अभिप्राय यह था कि कौन सा व्यक्ति कितना विश्वसनीय है उसका कितना और किस प्रकार के कार्य पर विश्वास किया जा सकता है। स्वेच्छा से नियंत्रण करने की शक्ति कितनी है प्रशासन की क्षमता कितनी है निस्पृहता कितनी है कूटनीति कितनी है आदि। इस प्रकार की रिपोर्टों पर ऊँच तथा विशिष्ट पदों पर अफसरों की नियुक्ति की जाती थी।

गल्लड वापस जाते समय हमारे ये अधिकारी मुझे कुछ हस्तलिपि विज्ञान का साहित्य दे गए। कुछ नोट्स थे हस्तलिपि विज्ञान के मूल तत्वों के विषय में। तब उस विषय का पहला परिचय मिला। बाद में उन्होंने मुझे कुछ अधिकृत साहित्य भी इंग्लैंड से भेजा जो आज भी काम आता है। इसके बाद त्रिवावटों की तलाश निरन्तर होती रही और दूसरी एक लिखावट मिली जिसका चित्र त्रिवावट सम्ख्या २७ में प्रस्तुत है।

Durga Dutt Pant

चित्र २७

इसका पहला चित्र श्री दुर्गास्त पत के हस्ताक्षर हैं और दूसरा उनका सहज लिखावट का उदाहरण है।

हस्ताक्षर एवं चित्रबूझ व समान हैं जिसमें प्रवर्ग या मक्का दुट्ट है।

श्री पतञ्जी मयूरी व पाम एवं पाठगान म मुख्य लिपि व थ। गहर म दूर हिमालय पवन की गहाना म पाठगालि म्थित थी और उमर निकट ही उनका बेंगल था जिसमें उनका प्रायः सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हुआ था। अधिकतर समय अध्ययन म तथा चिन्तन म व्यतीत हुआ था। आत्म चिन्तन का विषय रचि थी या बन गई था।

हस्तलिपि म व्यक्त है कि था पतञ्जी चान्द्र प्रभावान् विचारवान्, जीवन गतिवान् और ह्म आत्म विज्ञान का व्यक्ति हैं। उनके जीवन अथवा विचार क्रिया का गली गुड सबल और स्पष्ट है निम्नलिखित म है।

यह एक दूसरा महान् व्यक्तित्व था जिसमें प्रभावित किया और उनके हस्ताक्षर न पुन लिखना की समस्या प्रस्तुत कर दी जो आज तक वास्तव में अच्छा तरह समुपन नही मचा है। स्वार्थों का सधय करना एक बहुत ही मना रजन तथा गिनाप्रम प्रिय काय कहा जाता है। वाक्का तथा मुवा विद्याविद्या का बहुधा स्वाक्षर प्राप्त करने व लिखे आत्मार्थ लिया जाता है। उल्ट उक्ति भा उनके अपने स्वाक्षर प्रभाव कर दिया करते हैं। यह स्वाक्षर-मुक्ति का बहुमूल्य तथा रखने की अमूल्य वस्तु है। मृध एन स्वाक्षरों की वास्तविक आवश्यकता रता है। और साथ ही यह देखने का भी कि यह महान् व्यक्ति लिखने कम हैं तथा उनके अक्षर आचरण कम हैं।

एक वाक्का को स्वाक्षर दे देना महज है। उसका स्वाक्षर वक्का स्वाक्षर सञ्चय म है परन्तु एक प्रौढ हस्तलिपि विज्ञान व विद्यार्थी का अपना लिखावट का स्वलिखित उदाहरण दे देना दूसरी बात है।

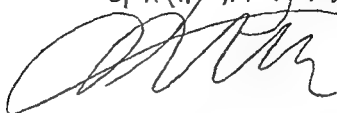
अनुभव न यह सिखाया कि कुछ लोग यद्यपि नतत्व व पत्र पर मुगामिन हैं अपना लिखावट का उदाहरण दे देना उचित नही समझते। वक्का व ममूना हस्ताक्षर हों ता दूसरा बात है, म न लिख जाई कयाकि कम जायमाशा का डर है। परन्तु सहज लिखावट या माधारण स्वाक्षर भा प्रभाव करने स परहज करने हैं। सम्भव आगय यह है कि उनका वास्तविक व्यक्तित्व जा जाता हुआ है उनका हा पर्याप्त है। यह चिन्तन का विषय है भरे लिए।

दूसरी ओर व मगपुष्प उगार हृदय व्यक्ति है जो स्वलिखित अक्षर तथा हस्ताक्षर देने म प्रसन्नता प्रगट करते हैं।

वाक्की म था सम्पूर्णानन्दी का अमिनन्त-यय छपा था उनका साठवा वषगाठ पर। इसमें उनकी हस्तलिपि व आधार पर एक छाप मा अमिनन्त लिखित का अवसर मिला था। यह पटना सन् १९५० का है। उसके सम्पादक

मरण म श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी भी थे। श्री चतुर्वेदीजी की उत्तरता एवं सहानुभूति प्रसिद्ध है। उटान मरी प्रायना म्बीमार का और सहप अपना आशीर्वाद

बनारसीदासजी के




चित्र २८

प्रमाण दिया। यह पत्र मरे पत्र सचय म अष्ट है। उम पर लिये गए हस्ताक्षर का चित्र लिखावट सख्या २८ म प्रस्तुत है।

यह हस्तलिपि विज्ञान के सदस्य म इनके लिए कुछ कह सकना सम्भव नहीं है। अपन क्षत्र व यह महान् स्तम्भ हैं तथापि उनके विषय म सम्भवत ऐस कोई व्यक्तिगत गुण नहीं हैं जो प्रकाशित नहा हैं। परन्तु तना चिन्ता आज भी गयी हुई है कि इन्होंने अपन हस्ताक्षर व नीचे स्तनी बहुत सी गोरामार रेखाएँ क्या खींच दी थी (जिनकी वास्तव म आवश्यकता नहीं थी)। यह सम्भव

Keep Your Cheek up  
Happen what may



चित्र २९

आ चतुर्वेदीया का विना प्रियता का एक उदाहरण है।

आ पृथ्वीराज कपूर धान हुए अमिनता है। इनका नाटकीय व्यक्तित्व अच्छा तरह प्रकाशित और प्रसारित है। सम्भवतः भाग्यवश म यह उन कुछ गिन-बुन व्यक्तियों में से हैं जो नवाविक ध्यात हैं। लिखावट में विविधता है, हस्ताक्षरों में क्लिष्टता। लिखावट इनके चित्र का प्रतीक है, हस्ताक्षर प्रभावकारिता का। (देखिए चित्र २६)

लिखावट आकार में बड़ा अक्षर का है जिसमें ध्यान का धारण है। रेखाओं में अधिक मात्रा में जाना है, फाट्टा है और रेखाओं में अन्त में बड़ा-बड़ा तीर जैसा चिह्न बन रहा है।

यह एक चित्रवान् हठी बमठ चित्र का प्रतीक है। उनके काफ़ी बड़ा कापस का चाहिए, जिसमें उनकी प्रसारित विद्यार्थिता मुगलता में फाट्टा तथा इनका महान् प्रभाव प्रिया का व्यक्त किए जान का अवसर मिले। इनका लिखावट की तीव्रता तथा भारी रचना का दबाव में आम बच्चे अपना स्थान बनाने की शक्ति है और इसमें हनीयता है। मोड़ी रेखाओं का अंतिम चिह्न तीरा का दबाव दबाना का प्रतीक है। ऊँचा आकार है और उसका पूरा तरह में प्राप्त करने की शक्ति है।

ऊँचे, अक्षर हस्ताक्षर यथाय में अपना आन्तरिक नाटकायता का प्रतीक है। यह उनके अन्तर्मन का छाया है जो मात्र प्रभाव का लिए प्रसिद्ध है और जिसके लिए यह अपने रजतपत्र की प्रारम्भिक अवस्था में स्थिति प्राप्त करते आ रहे हैं। उनका नाम आज भी उनके विचारों की शक्ति का धारण है। चाहें बिनापट्ट हा अपनी नाट्य में उनके नाम में प्रवेश करने प्रतीक लिखा चला जाता है।

विशेष आवरण इनके हस्ताक्षर है भावुकता के लिए एक प्रतीक बना के लिए।

माधुर्य आकार से बड़ा अधिक बड़ा आकार वाला एक और हस्ताक्षर है। यह समस्त चित्र तथा चित्रों के लिए दोनों में उपलब्ध तथा प्रसिद्ध है।

१५ ८ ४०

चित्र ३

यह लिखावट भी अपना निजी विविधता रखती है जो अपने निजी प्रभाव में प्रभावकारी है। उस समय था ब्रह्मानन्द गुप्त उत्तर प्रभाव में मन्त्रि मन्त्र में मन्त्र था। मोड़ी आय हुए थे और बहूत हा व्यक्त कायक में मुख्य अनिधि

विशेष लिखावट—कुछ व्यक्तित्व अनुभव

थे। स्वाक्षर की याचना के लिए उनके पास तक पहुँचना अमम्भव नहीं तो कठिन अवश्य था। जैसी के तमाम सरकारी अधिकारी तथा नेतागण उनको घरे हुए थे। एक नेता मित्र के द्वारा किमा प्रकार अपनी स्वाक्षर पुस्तक उनके पास पहुँचाई। हस्ताक्षर मिल गए हिन्दी में तथा रोमन लिपि में परन्तु उनके पास तक न पहुँच सकने का खेद मिट गया—उनके हस्ताक्षर इन प्रमाणकारी प्रतीत हुए कि उनको लिखते नहीं देख सकने की कोई बात नहीं रह गई।

15-8-49

चित्र ३ (घ)

हिन्दी के हस्ताक्षर का लिखावट काफी फली हुई है बड़े अक्षर है परन्तु स्पष्ट पढ़ में नहीं आता। अंग्रेजी के हस्ताक्षर के प्रथम दो अक्षर स्पष्ट पढ़ने में आते हैं। आगे के अक्षर अस्पष्ट हैं।

उत्तना में स्फूर्ति प्रचुर मात्रा में है। प्रवाह है शक्ति है बल है और साथ ही साथ प्रदान की भावना है। हस्ताक्षर की बनावट पूणतया तकसगत नहीं। विनापकर हिन्दी में। ऐसा प्रतीत होता है कि इनका आत्मबल इनके मानसिक तक अधिक है। पूरी ताकत लगा रह हैं। चाहे उसकी आवश्यकता हो अथवा न हो। सतुल्य बराबर नहीं है।

यह लिखावट पूणतया बहिमखी प्रवृत्ति प्रकट करती है जिसमें चिन्ता करना अधिक और मानसिक विधिवत् क्रिया कम रहती है। इसमें विधिवत् योजना और ध्ययुक्त स्थिर गति एक उद्योग का प्रवाह नियोजन नहीं है। इनकी लिखावट से यह पता लगाना कठिन है कि यह कौन-सी आदमी रखा का अनुसरण करते हैं अथवा इनका अपना निजी आदमी है अपनी निजी कार्यशैली है। इनकी जीवन शक्ति तथा आन्तरिक प्रेरक बल अपनी विलक्षणता से अवश्य ही बर्णनीय है।

×

×

×

जमा कि हम पहले कह चुके हैं लिखावट स्पष्ट गुद और सहजगति में होना आवश्यक है। यह लिखावट के मुख्य लक्षण हैं। कोई भी लिखावट विच्छिन्न बनाया जाना आवश्यक नहीं है तथा ससार में अनगणन व्यक्ति हैं जो वास्तव में महान् हैं और विच्छिन्न हैं इस प्रकार की गुद लिखावटें लिखते हैं। अतः अमामात्र लिखावट जो कि विच्छिन्न लिखाई देता है, निश्चय ही बनावटपूर्ण प्रकट करती है। इसमें बाल्मिक शक्ति विनशु है यह शवायुक्त है।

## हस्तलिपि विज्ञान के उपयोग

हस्तलिपि व्यक्तिगत वस्तु है। इसका उपयोग भी व्यक्तिगत है। परन्तु कोई भी व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत इकाई में उपयोगी नहीं है। समाज में ही उसकी व्यक्तिगत सामर्थ्य का वास्तविक उपयोग है। अतः यह महत्त्व की स्फूर्ति है कि हस्तलिपि की उपयोगिता उस व्यक्ति के लिए वह जिनकी व्यक्तिगत है उनका ही अथवा उसमें भी अधिक उसकी सामाजिक उपयोगिता उस समाज के लिए है जिसकी वह एक इकाई है।

प्रत्येक व्यक्ति उपयोग करना है। उपयोग करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्म जान गण है। हम सब कुछ-कुछ करते ही रहते हैं। परन्तु वास्तविक क्रिया तथा कृत्य वह है जिसमें हम पूर्ण अन्तर्गत प्राप्त होता है। हम उस काम का अधिक अच्छी तरह में करने हैं जिसके लिए हमारा आंतरिक गतिविधियाँ उपयुक्त हैं और जिस काम में हमारी अन्तर्गत स्वाभाविक स्थिति है। परन्तु समस्या यह उत्पन्न होता है कि हमारा ज्ञान क्या है? हमारी गतिविधियाँ क्या हैं? और हम कौन-सा काम हैं जो कि हमारी गति-सामर्थ्य के अनुकूल हैं और उनमें हमारी अन्तर्गत स्वाभाविक स्थिति भी है।

ऐसा देखा जाता है कि डाक्टर का रोग टाक्टर बनना चाहता है। वकील का रोग दफा बनना है। दुकानदार का रोग दुकान करना है। और कभी ऐसा नहीं भी होता है। उपयुक्त गति प्राप्त करने के लिए अपने अपनाय हुए व्यवसाय में सफल नहीं होता।

ऐसा भी देखा जाता है कि बेटा अपने पिता के व्यवसाय में पूणतया विपरीत व्यवसाय अपनाता है और सफल होता है। किसान का रोग सना का उच्च अधिकारी बनना है अथवा पत्रनिष्ठा डाक्टर का व्यवसाय अपनाता है और सफल होता है। यह एक अवसर की हा बात रहती है कि कौन-सा युवक अथवा युवती किस प्रकार की गति प्राप्त करते हैं और कौन-सा व्यवसाय में पड़ते हैं। किसी



नरहम कर्म च न मेा दूनेरुयाने । अन्ये बुद्धि जन योनि । योनि । त  
अधिक व्यवसाय एवं परिस्थिति में अपना काम चला रहे हैं और कुछ एम मन्त्र  
ताए भी प्राप्त कर रहे हैं परन्तु एम व्यक्तियों का पूर्ण रूप से सदुपयोग हो गया  
है । यह कह सक्ता बर्तन होता है ।

निम्नलिखित एक समय व्यक्तियों को बर्ती नही है । आज के प्रगतिशील युग में  
व्यक्तिगत विकास की सुविधाएँ तथा अवसर अधिनाधिक उपलब्ध हैं । साथ-ही  
साथ अनेकानेक व्यवसाय भी प्रकट हो गए हैं । औद्योगिक, वावसायिक, वनानिक,  
कलात्मक आदि अनेक पेशों का विधिवत् पृथक्करण हो चुका है और प्रत्येक व्यव  
साय में विविध योग्यता के उम्मीदवार उपलब्ध हैं । प्रत्येक व्यवसाय का मना  
वनानिक अध्ययन किया जाता है यह निर्धारण करने के लिए कि किस अन्तर्वर्ती  
योग्यता का व्यक्ति उसको सफलता से निभा सकेगा । इसको वावसायिक योग्यता  
अथवा क्षमता कह सकते हैं ।

इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति जो कि उस व्यवसाय अथवा पेशे के लिए  
प्राणी है उसका भी मनोवनानिक विन्पण किया जाता है । मनाविज्ञान के विन्पण  
इस तरह से होना का मिशन करते हैं और निष्पत्ति पर पहुँचते हैं कि बौद्धिक-ना  
व्यक्ति किस प्रकार के व्यवसाय अथवा पेशे के लिए मनोयोग के अनुसार उपयुक्त  
है । इस क्रिया में किसी एक निश्चित व्यवसाय तथा पेशे की वावसायिक एवं  
स्वभावजन्य योग्यता का व्यक्तिगत स्वभावजन्य योग्यता से मिलान किया  
जाता है ।

मनाविज्ञानिक विन्पण ने इस प्रकार का आँच के लिए विविध प्रयोगों का  
आविष्कार किया है और निम्नलिखित उपयोगी हैं । इस प्रकार के प्रयोगों से  
व्यक्तिगत बुद्धि उपलब्धि विचार शक्ति कल्पनाशीलता उत्साह साहस  
निर्भीरता क्रियाशीलता मानसिक सन्तुलन भावुकता अनुशासनप्रियता जीवन  
शक्ति तथा व्यक्तिगत रुचि रुचान का पता लगाया जाता है ।

इसके उपयोग दो प्रकार से है

(१) व्यवसाय के लिए व्यक्तिगत चुनाव के लिए । अनेक प्राणियों में से  
किस व्यक्ति का सर्वोत्तम चना जाए यह निर्णय करने के लिए और

(२) नवयुवक नवयुवती आदि प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार की  
वावसायिक सलाह देने के लिए कि वह किस प्रकार के व्यवसाय के लिए उपयुक्त  
है । यह सलाह व्यवसाय के आवश्यक अंतर्वर्ती लक्षणा का और व्यक्तिगत योग्यता  
योग्यता एवं स्वाभाविक चरित्र गुणों का दखन हुए की जाती है ।

एम मनाविज्ञानिक प्रयोग तथा सलाह देने के अनेकानेक विन्पण तथा  
वायाग्य हैं । यह क्रिया यूरोप अमेरिका के देशों में प्रचलित हो चुकी है तथा सर  
कार विज्ञान उद्योग विज्ञान आदि में भी मायत्रा प्राप्त कर चुकी है । भारतवर्ष

म भी यह प्रयास काफी आगे बढ़ चुका है।

परन्तु हम जाना कि क्रिया में सबसे बड़ी समस्या एक यह है कि जिस व्यक्ति का मानवचार्ज निरीक्षण होता है उसका उपस्थित होना आवश्यक है तथा उसका महा और श्रद्धापूर्ण मह्योग का आवश्यकता है। हमें बिना उसका वास्तविक एवं निष्पक्षकारी निरीक्षण किया जा सकता है कि नहीं।

उमर। व्यक्तिनाम कम प्रयास में ही व्यक्तित्व प्रभाव पा। जब नाम व्यक्ति मनावधानिक व समय उपस्थित होता है उमका पूरा व्यक्तित्व प्रभावित करता है। यह व्यक्तित्व का वह भाग है जो मायन दृष्टिमाचर होता है। मनावधानिक अपन बिनाप जान स प्रविन व अनवर्ती लक्षण का निरोक्षण करता चाहता है। इस मुलाकान में जो प्रभाव बाह्य वग भूषा वानवान आनि स होता है वह अन वर्ती जिनामा की क्रिया में बाधा डालता है और इस तरह स किसी भी व्यक्ति का वास्तविक निराक्षण एवं चरित्रावन निष्पन्न न हो पाता। हा सफता है कि मनावधानिक बुद्धि-अव भावकता आनि कुछ एक चारित्रिक लक्षणा का जीव निष्पन्नता में कर सब परलु रधान अभिरुचि आनि अय अनवानक लक्षण हैं जिनस सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनता है, उन सबकी जीव निष्पन्नता में कतापि मही की जा सकती।

अम तरह की व्यक्तिगत समस्या बना हा रहनी है। मानव-स्वभाव दुःख है, व्यक्तिगत चतुरता का अंत नहीं और यह किसी भी व्यक्तिगत मुलाकात में अविनाश्या एव अमुनिषाएँ उत्पन्न करना रहनी है। यहा सवम बडा कारण है कि कई अन्द्रेजे श्रद्धे, चुनाब-मण्ण निपयन एव निणयात्मर चुनाब करन अथवा मनायनानि सलाह देन म गलता कर जान हैं। मन् विविध विकण्या द्वारा अच्छी तरह म विनिन होना रता है।

तथापि मानव-स्वभाव की तुम्हना का निराकरण करने का प्रयत्न जारी रह है और विचारक इस विषय में अग्रसर होने का प्रयत्न निरन्तर करत हा रह है । व इस प्रकार के मानवीय आधार की ग्राह करने में रुचि रहे हैं जिसका द्वारा मनोवैज्ञानिक शोध की वृत्ति-तथा अनुविद्या-का निराकरण किया जा सके और इस प्रकार के माधन प्राप्त हो जाए जिनमें मनुष्य के स्वभाव के निवृत्त-निवृत्त पृथक् जा सके ।

“य प्रकार का निष्पन्न मानवीय आधार हम हस्तलिपि में मिलता है। हस्तलिपि विभागा में व्यस्ति के सम्पूर्ण व्यक्ति-वृत्त का विश्व है जो कि एक तथा अनेक बार उपरान्त किया जा सकता है। इसका निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण एवं तथा अनेक विषयों पर तथा अनेक बार कर सकते हैं।

हस्तर्गिण प्राप्त हो जाने पर 'श्वव' का 'यक्तिगत' मुगवान जिसे मना बनानिक विरोध से ज्ञान की आश्रयता नही रहती। इसमें व्यक्तिगत प्रभाव के तत्व भी सामन नही आते। हस्तर्गिण उस प्रकार का आधार प्रस्तुत कर देता है

### हस्तलिपि विज्ञान के उपयोग

जिसमें चरित्रावन का काय बहुत हल तक चिन्नानि विधि से किया जा सकना सम्भव है। इसके द्वारा चनाव सम्बन्धी तथा यावसायिक संग्रह निष्पत्तमक रूप से दी जा सकती है।

हस्तलिपि विज्ञान द्वारा इस प्रकार के विभिन्न प्रयोग किए गए हैं। यूरोप के विद्वान् डा. हैस जेकोबी तथा हैरी जो टर्नर आदि ने इस विषय पर बहुमूल्य तथा नवीन खोज करके पर्याप्त प्रमाण डाला है जिसमें हस्तलिपि विज्ञान का वनानिक स्तर प्राप्त हुआ तथा और इसका मान स्थायी तथा विनमनाय मना-वनानिक स्तर पर होने लगा।

आपने समाचार पत्रों में देखा होगा कि अनेक सेवायोजक स्वामी आवेदन-पत्र हस्तलिखित मांगते हैं। ऐसा प्रकाशित होता है कि विसा पत्र की प्राप्ति के लिए आवेदन प्रार्थी अपना आवेदन-पत्र अपनी स्वयं की लिखावट में लिखकर भेज जिसके टाइप द्वारा प्रथम प्राप्ति-पत्र वही अधिक स्पष्ट हो सकता है फिर भी स्वलिखित आवेदन-पत्र ही मांगते हैं।

यूरोप आदि अनेक स्थानों में इस प्रकार के स्वलिखित आवेदन-पत्रों का जाच हस्तलिपि ज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा की जाती है और उसके उपरांत आवेदन-पत्र प्राप्ति की विधि योग्यता की जाच होती है उन अनेक योग्यताओं को देखने के लिए जो शिक्षा स्वास्थ्य आदि के अनुसार आवश्यक हैं। चरित्र स्वभाव स्थान आदि सम्बन्धी जाच हस्तलिखित आवेदन पत्रों से ही हो जाती है।

हैरी ओ. टेलर जो कि पिछले महायुद्ध के समय से संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में निवास कर रहे हैं लिखते हैं

सबसे महत्वपूर्ण कार्य हस्तलिपि विज्ञान ने हमारे महायुद्ध में किया है जबकि इसका उपयोग संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के सना-विभाग ने चरित्र एवं यशस्वी की धारिता जाच करने के लिए सफलतापूर्वक किया था।<sup>1</sup>

इस महायुद्ध में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सना के उच्च अधिकारी सत्तर के अनेक महत्वपूर्ण मोर्चों पर गए हुए थे और हम महायुद्ध का अंतिम निष्पत्ति वास्तव में उन अधिकारियों की उच्च उत्तरदायित्व की भावना पर ही निर्धारित था। यह स्वर स्पष्ट है कि उन अधिकारियों के बहुत हा ऊंच चरित्र तथा बलवान् यशस्वी के हात का आवश्यकता था।

हम पुनः हम टर्नर ने अनेक किया है कि हस्तलिपि विज्ञान सम्बन्धी कार्य करने के लिए यह स्वयं संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के प्रथम विभाग में नियुक्त था।

1 Hand Unting The Key To Successful Living published in London 1946

इस विषय में अत्य विवेचना के महत्वपूर्ण कथन निम्नलिखित हैं

हस्त० एल्० फ्रेंच लिखत हैं

प्रायः एक शताब्दी से फ्रांस एवं जर्मनी में और बाद में इंग्लण्ड में भी हस्तलिपि विज्ञान का अध्ययन एवं प्रयोग किया जाता रहा है। इसका महत्व अपराध के मामलों में यायालयों में माना जाने लगा है। यह काम लिपि विज्ञान से भा कहा आया है। (लिपि विज्ञान के विशेषज्ञों द्वारा लिपि की जाड़माओं पहचानने तक सीमित है।) यावयायिक क्षमता महस्तलिपि विज्ञान का उपयोग विविध हस्तलिपियों से मान्यकारी नीलनिष्ठा प्रामाणिकता सूक्ष्मशुद्धता जाति अनेक यकिनगत एवं परस्पर श्रेष्ठ गुणों की जांच करने के लिए किया जाता है। लेखनी तथा यकिनय में इस प्रकार से सामूहिक महत्ता प्राप्त करती है।<sup>1</sup>

महत्वपूर्ण उद्योग एवं व्यवसायों में यकिनगत श्रेष्ठता पर ही सम्पूर्ण हानि लाभ निर्धारित रहता है तथा ईमानदार भाव निष्ठावान् एवं विश्वस्त कार्यकर्ताओं की नितान्त आवश्यकता रहती है।

इंग्लैंड के हस्तलिपि विज्ञान के विवेचक हैंस जकाबी का कथन है कि

‘अभी कुछ काल से ग्रेट ब्रिटेन में भी बड़ी व्यापारी संस्थाओं द्वारा कमचारियों की नियुक्ति के सम्बन्ध में हस्तलिपि से मनोबलान्वित यकिनगत विश्लेषण का उपयोग किया जाना लगा है अथवा इस बात की जांच करने के लिए कि किसी अच्छे कमचारी का कामभरना का हानि हान का भनावधान कारण क्या है।

सम्भवतः यह प्रतीत होगा कि अधिकाधिक लोगों में प्राप्त भ्रमों से पता चलता है कि ऐसे यकिनों की गणना कहीं अधिक है जहाँ मानसिक व्याधि के लक्ष्य हैं आज रहित हैं मानसिक दुबलता के लक्षण हैं तथा ऐसी यकिन त्रिंशका भ्रमनिष्ठा गतिहीन एवं अस्त व्यस्त हो गई हैं जो बाड़ी सी कठिन परिस्थिति में अपना मानसिक सम्बलन त्याग देती हैं अनिश्चय से यकिनों के जो कि नागरिक याधिया के वास्तविक रोगी हैं अतः गतिहीन हो गए हैं (जिनके कारण उनकी कार्यक्षमता कम हो गई है)।

हस्तलिपि विज्ञान का सफल उपयोग एक अन्य क्षेत्र में भी हुआ है। यह व्यापारी संस्थाओं के कमचारियों की अनेक गुणकारी बाध समता की तलाश करने में किया गया है जिनमें उनकी नियुक्ति अधिक ऊँच पदों पर की जा सक (जिनमें सम्पूर्ण औद्योगिक संस्था

1 W L French The Psychology of Hand Writing

का उद्योग एवं उसकी अधिक लागत हो सकती है।<sup>1</sup>

स्विट्जरलैंड के माय हस्तलिपि-विद्वानों एरिक सिंगर ने भी इस विषय में महत्वपूर्ण प्रमाण दिए हैं

आजकल हस्तलिपि विद्वानों के अग्रगण्य अल्पक स्विट्जरलैंड में हैं जहाँ कि प्रत्येक सामान्य नागरिक हस्तलिपि विद्वानों के हित एवं विकास में अधिराधिक रुचि प्रदर्शित करता है।<sup>2</sup>

× × ×

बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति अपनी अन्तर्दुर्लभ शक्तियाँ बाहर निकालते हैं दूसरे शक्तियों के साथ सामाजिक सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं। उनकी मूल दुःख की समस्याओं में उनका साथ देने के लिए उनसे मिलना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र तथा अपने व्यक्तिगत जीवन में अन्य अनजान शक्तियों का साथ चाहते हैं। अपनी भावनाओं का अपनी मनोरंजन के अनुसार स्वच्छलता से व्यक्त करना चाहते हैं और ऐसा करते भी हैं। उसे व्यक्ति एक स्थान पर जमकर बैठना तथा काम करना नहीं चाहते। वह चल फिरकर अपने सम्पर्क स्थापित करते हैं सत्कार की विविधताएँ देखना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति स्फूर्तिवान् लिखाई करते हैं उत्तम प्रकृति के होते हैं और अपने भावक विचारों का स्वयं व्यक्त करते रहते हैं।

इस प्रकार की भावना उनको अपने से आगे लाचली है जिससे स्वयं स्वच्छल गति से उनकी शिष्टाचार आग की आरंभ होती है तथा अंतर आदि लिखने के स्थान पर आजादी से करते हैं अधिराधिक स्थान धरते हैं। लिखावट में ये चिह्न बहिर्मुखी प्रवृत्ति के हैं।

बहिर्मुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति इस प्रकार से ऐसे कार्य क्षेत्र का अपनाना चाहते हैं जिसमें उनकी जन समुदाय की सेवा की आंतरिक प्रेरणा का स्वतंत्र गति प्राप्त होती है जन-समुदाय का प्रेम आवरण तथा उत्तम स्वभाव के ज्ञान का पूरा करने का अवसर प्राप्त होता है। इस तरह से बहिर्मुखी प्रवृत्ति के वग में हम धार्मिक प्रचार करते वाले व्यक्ति प्राप्त होते हैं जो धर्म ज्ञान तथा वास्तविक समाज प्रेम में जीवनपथ अपना काम करते रहते हैं।

व्यापार में नियुक्त व अधिकारी जिनसे अन्य अनजान व्यापारियों से मित्रता का अवसर रहता है तथा घर में बाहर बाक कार्य तथा भी फिरना पड़ता है वकील लोग जिनकी सामाजिकता प्रभाव दृष्टि है विविधता जिनका प्रेम मान्यता से है

जबकि जिसमें तुलना विचार स्पष्टता एवं व्यक्त करने के स्वाभाविक

गुण हैं

1 HANS JACOBY in his Book Analysis of Hand Writing

2 ERIC SINGER in his book Graphology For Every Man

प्रकाशन एवं विनायन करने वाला लोग जिनको विमी भी प्रकार का व्यावसायिक प्रकाशन करना है।

एक मंत्र यकिन बहिमखी प्रवृत्ति न गग स हा जान हैं तथा इस प्रकार न बायों म सफलता प्राप्त करत हैं।

यदि य बहिमखी प्रवृत्ति वाल व्यक्ति विमा कारण म अन्तमखी वग म दबन दिा पाते हैं अथवा बतन व गम म इस वग न काम म ग जात हैं ता जीवनपयन्त उह अपनी नियागोन्मा म मुख व सन्नाप प्राप्त नग हाता अपने भाव्य को कोमन रहन हैं। उनक काय म भा उननी अठा सफलता प्राप्त नहा हातो जा कि उनका बहिमुखी प्रवृत्ति-मन्व खी बाय-भग्न म प्राप्त ह। सक्नी थी।

अन्तमुखी प्रवृत्ति वाल व्यक्ति अपना आन्तरिक भावना की ओर मुग्नित हात हैं। यह अन्तमखी प्रवृत्ति का विन्दुल उलटा है। बहिमखी प्रवृत्ति वाल व्यक्ति जिन स्फूर्ति को अपने स बाहर प्रसारित करता है, अन्तमुखी प्रवृत्ति काग अर्थात् उस स्फूर्ति का अपनी ही ओर प्रग्न करता है। उनका ध्यान बबन अपनी हा समस्याना की ओर कद्रित रहता है। उनका अपना मुख दुल अपना आवश्यकताए अपना स्वाय त्रिर्दार केा है। अय सामाजिक समस्याए उनक लिए नहा हैं। उन तरफ उनका ध्यान आर्षित नहीं है। उनक चिन्तन का क्षत्र अय व्यक्ति नहीं है वे वस्तुए हैं व विचार हैं जिनम उनका स्वाय है। वह दूसरे गंगा को समपना मनी है उनम विचारम नहीं करता अविचारम का भावना अधिक है।

प्रवर बुद्धि वाल अन्तमखी व्यक्ति अविचारमपूण तब अकिन प्रदर्शित करत हैं। आलाचना तथा यग्न उनका भाव्यम है। उगागना का वास्तविकता उनक स्वभाव म नहीं है।

लिगावट म भी इस प्रकार की आन्तरिक वृत्तिपा निर्दिष्ट हैं। इनकी स्वाभाविक लिगावट म स्वच्छ मति न रिपरीत अवगेषमूचन विह्व अधिक मिश्रत हैं जस कि छात्र छाकार का मूम लिगावट मकाण अक्षर गाग गाठें मुल बग पीछेकी ओर झुकन वाले तथा भूमा वाल वत एव रेखाए आग। अन्तमुखी प्रनिभा वाल व्यक्ति अय व्यक्तिपा म मुख माहता है तथा अपने म हा छिपा रहना चाहता है। अन उसकी लिगावट भी इसी प्रकार स पाछ बाइ ओर जान बाउ विह्व म बनी र्ई हाती है। उसम प्रग्नक विह्व नहा हात। यनि हात भी हैं तो एस ही जिनम वह अपने व्यक्तित्व को अपनी गतिन न अनुसार आवरण म छिपाए रहना चाहता है।

एक गमाज म एस अनवानक व्यक्ति हैं जो वास्तव म अन्तमुखी हैं परन्तु प्रतिकूल परिस्थितिवश बहिमुखी व्यक्तिपा न वग म पम जान हैं। अपने वास्तविक स्वभाव का सम-वय नग कर पात ओर प्रतिक्रियावाली बन जात हैं। इनर आचरण समान नहा रहन और इनक व्यवहार म विद्वाम एव उन्नरगपिवपूण

आवागमन कदापि प्राप्त नही होता ।

जिस व्यक्ति का एक म्यान पर एकाग्रचित्त किसी विषय पर जमना अच्छा लगता है वह बाह्य में इनके सम्बन्ध में जिस प्रकार से आनन्द प्राप्त करेगा यह चिन्तन का विषय है ।

जनमन्त्री प्रतिभा वाले व्यक्ति का काय शत्रु रूप प्रकार है

रत्न-काय कायात्याग के विधिक तथा रूपेय-म का लया जाता रखने वाले रत्नपात्र । य जनम काम में मूर्ख दष्टि विधिवन् काय यवस्था आदि पूण रूप से रख सकने है । उनका चित्त अपनी लखना जाति अथ कायात्य-मन्मधी वस्तुओं पर एकाग्र रहता है । उनका जय अनक व्यक्ति का स तथा उनकी व्यक्तिगत भावनाओं से सम्बन्ध नही रहता ।

वास्तुका तथा अभियांत्रिक काय में सम्बन्ध रखने वाले यवमाय जिनमें वस्तुओं में यथा स तथा उनका काम में आने वाले अनकानेक मशीनों में काम पन्ता है । मम भा मानव से माया सम्पक नही है । अपना चित्तन एव श्रियागीता एकाग्र एव विधिवन् आचरण की आवश्यकता नही है । ऐसे व्यक्ति बिना जिना लगाव के अपना काम करते रह सकते हैं ।

समावेधक रखक जिनको बहुत ही निष्पक्ष होकर सोचना विचारना पड़ता है और जो अच्छे बुरे का तुलना कर सकते हैं तथा यथायत्न का प्रयोग कर सकते हैं ।

वैज्ञानिक एवं कूटनीतिज्ञ आदि ऐसे व्यक्ति जिनको अपना प्रत्येक आचरण पूर्व निधारित रहति के अनुसार साधना पड़ता है । म प्रकार के व्यवसाय में बहुत साध-समयकर काम करना पन्ता है और प्रत्येक निया पूर्व निधारित हानी है तथा इन काय का जनाव वन्त ही सावधाना से करना पन्ता है । वैज्ञानिक एवं कूटनीतिज्ञ का आचरण वास्तविक अन्तमन्त्री प्रवृत्ति का उद्गाहरण है ।

×

×

×

उभयमुखी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति में बहिर्मुखी एवं जनमन्त्री का सम्बन्ध रहता है । म बहिर्मुखी का प्रवृत्ति एवं प्रवृत्ति के विचार नीलता एवं तत्संगत रवि ज्ञाना निश्चयाने रहता हैं । आवश्यकतानुसार उभयमुखी प्रतिभावाले व्यक्ति अपना जातिगिक एवं बाह्य वृत्तिया का उपयोग कर सकते हैं । समस्वभाव ज्ञान के कारण ये व्यक्ति जियाव में भी समआचरण करते हैं । उनकी जियाव के जगता का आकार प्रसार उनकी जाय तथा पीछे ज्ञान आदि मम समस्वभाव में रहती हैं । उनका साधन का आवश्यकता नही है भावावग नही है तथा जिना प्रसार का जगताव भी नहीं है ।

उच्च स्तर की बुद्धि प्रगता के साथ उभयमुखी प्रतिभावाले व्यक्ति अच्छे प्रवृत्ति मिष्ट ज्ञान हैं । प्रवृत्तिप्रकारक प्रवृत्ति इनके समस्वभाव का प्रथम तथा मूळ

रक्षण है। अतएव स्वाभाविक है।

उत्तरदायित्व जिस व्यवसाय में आवश्यक है, उसमें उभयमुखी प्रतिभा में व्यवसाय है।

Y

X

X

एक नियुक्ति के लिए वनार्थ यह चुनाव-प्रक्रिया बहुरूप आवश्यक व्यक्तियों के साथ सामाजिकता का आधार होती है। यह मौखिक परीक्षा है। इस मौखिक परीक्षा का आशय जमा कहा जाता है उम्मीदवार आवश्यकता के व्यक्तिगत लक्षणों का जांच करना है जिसमें उनका उपयुक्तता का अंश दिया जा सके उस विषय पर पर नियुक्ति के लिए जिसके लिए परीक्षा की जा रही है। इस प्रकार का परीक्षा में मानसिक प्रवृत्ति सामाजिकता एवं नैतिक लक्षणों का पता लगाया जाता है जिनके मानसिक तत्त्वों में समझारी स्पष्ट एवं तर्कपूर्ण विवरण दिए गए हैं। इस प्रकार के लक्षणों का जानने की क्रिया इस प्रकार की विषय-वार्ता-वार्ता करने का है जो कि हमारी तथा आवश्यक व्यक्तियों के लिए उभर आए।

इस प्रकार का व्यक्तिगत चुनाव-प्रक्रिया बहुत कुछ मिला-मिली हो जाती है क्योंकि आवश्यक व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है अतः प्रत्येक का थोड़ा ही समय मिलता है। यह आशय का विषय है कि कुछ एक प्रश्नों में ही जांच कर लिया यह निर्धारित कर दिया है कि किस आवश्यकता के व्यक्तित्व किस प्रकार है जबकि मानव-व्यवसाय एक दुर्लभ समस्या बन जाती है। यह जांच की रीति आवश्यकता के साथ बहुत अलग है यदि अर्थ माधन नहीं अपनाए जाते तो इसका परिणाम यह होता है कि विभिन्न पक्षों पर अनुपयुक्त प्रकार के व्यक्ति नियुक्त कर लिए जाते हैं जो कि व्यक्तिगत मनाया गया है उन पक्षों के लिए विपरीत हैं। जिनके निराल आत्म-वर्त-वर्त व्यक्तियों किमी-व्यवसाय का अधिकारी नियुक्त करना किमी उच्च स्वभाव वाले व्यक्तियों का समाज-व्यवस्था के पर नियुक्त करना किमी प्रभाव-प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों का एम पर नियुक्त करना जहाँ का बारबार गुण रखने का आवश्यकता है। जिस व्यक्ति का नियम इन में निश्चय है उसको प्रत्येक के पर नियुक्त करना जिस व्यक्ति में अल्पनिहित भावना भागविलान गारोरिक सुख एवं आराम में रहने की प्रवृत्ति है उस गारोरिक पश्चिम के कार्य पर रहना जो स्वभाव में स्वार्थी एवं धन-प्रेमी है उस व्यवसाय का भार होता है। इस व्यक्ति को ही जा अपना स्वभाव से विपरीत कार्य भार पाकर अपने नैतिक उत्तरदायित्व का लोभ है और अपनी मानसिक चतुरता से अपना निजी बचाव भी करते रहने का प्रयास करते रहने हैं। कुछ भी हो, इस प्रकार के व्यक्तिगत साक्षात्कार में सहाय्य उपयुक्त आवश्यकता का चुनाव सम्भव नहीं है।

व्यक्तिगत स्वभाव की सहरी जांच का साधन हस्तलिपि विज्ञान ही है



जिमसे स्वभावजन्य अनेक प्रवृत्तियाँ और गतियाँ गिन्यावर के विभिन्न चिह्नों से पहचाना जाती हैं। इस पहचान से किसी भी व्यापार व्यवसाय पद एवं उत्तर दायित्व के लिए व्यक्तिगत चुनाव किया जाना सम्भव है तथा व्यक्तिगत व्यावसायिक सलाह दे सकना भी सम्भव है। यही कारण है कि यूरोप के अनेक देशों में हस्तलिपि विज्ञान व्यावसायिक महत्ता प्राप्त कर चुका है और जिन विभिन्न क्षत्रों में मानव स्वभाव महत्वपूर्ण समझा जाता है उन क्षत्रों में इसका उपयोग किया जा रहा है जहाँ कि ऊपर कहा जा चुका है।

×

×

×

बालकों का व्यक्तिगत चरित्रावन बचपन तथा सुस्था हुआ व्यक्तित्व बनाने के लिए किया जाता है। उनकी लिखावट से पता चलता है कि उनमें अपने विचार एवं क्रियाशीलता का नियोजन करने की कितनी गति जागरूक हो चुकी है। अनेक बालक जिना विचार काम करने की आत्मा में पड़ जाते हैं उगावगपन और अनियमित आचरण सहज प्रदर्शित होना लगते हैं। उद्दण्डता अधीरता नियम अधिकार भाजा की अवहाना करना नीति के विरुद्ध काम करना आदि अनतिक्रमण उत्पन्न हो जाते हैं। यह निशान बहुत ही छोटी और प्रभावशाली अवस्था में प्रारम्भ हो जाती है। यदि इसकी सही पहचान प्रारम्भिक अवस्था में ही हो जाए तो उचित निर्देशन तथा मार्गदर्शन से बहुत जल्द तक ऐसी आत्मा से बालकों को बचाया जा सकता है और उनमें इस प्रकार के स्वच्छ क्रमण प्रबल किये जा सकते हैं जिनसे उनका व्यक्तित्व क्रियाशील एवं उपयोगी बनाया जा सके।

व्यक्तिगत रुचि रुचान एवं उपयुक्त आन्तरिक गतियाँ प्रवृत्तियों के अध्ययन से उन्हें शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण-सम्बन्धी सलाह भी दी जा सकती है। बालकों के स्वभाव-सम्बन्धी मार्गदर्शन में हम विज्ञान का महत्व है जिसका परामर्श बालकों के भाता पिता अभिभावक शिक्षक मित्रों के आदि सामाजिक कार्यकर्ताओं को गमावित कर सकता है।

×

×

×

सबसे अधिक उपयोग हस्तलिपि विज्ञान का साधारण नागरिक को है जिसमें एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति में काम पड़ता रहता है तथा उसे किसी अन्य व्यक्ति के साथ अपना व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक निर्वाह करना पड़ता है। प्रत्येक हस्तलिपि में जिसने बाल व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रदर्शित होता है। ऐसी लिखावटें हममें से प्रत्येक व्यक्ति के सामने नियत हो आती रहती हैं जहाँ कि साथ में काम करते वक्त अन्य व्यक्तियों के सम्बन्धित व्यक्तिगत व्यक्तित्वों के पत्र आदि। इनके साधारण मनावनानिर्वाह विच्छेदन में आवश्यकतानुसार आचरणों का निराकरण हो जाता है। हस्तलिपि विज्ञान का अधिकाधिक एवं महजान



मनाव्यानिक 'याप्यानाआ ने अपन मुसयोजित अध्ययना म किया है। उनका कथन है कि जीवन क सुख सन्तोष और गानि का प्राप्ति के लिए तथा आत्मा मह यामी की प्राप्ति क लिए गहर चिन्तन एवं छानबीन की आवश्यकता है और इसम स्वाभाविक सम्बन्ध की समझारी प्राप्त करने के लिए लिखावट का सहज मनो वनानिक अध्ययन पर्याप्त महायना प्रदान कर सकता है। एम अनकानर विविधा जनक प्रश्न हैं जाकि लिखावट के माध्यम स सहज ही स्पष्ट हो जात हैं।

विवाह विच्छेद के कारणों क विषय म गिरठ अमन का निवचन बहुत ही यथाथ एवं विचारग्राही है। जो दो 'यक्ति कभी विवाह मूव म बंध गय थ उनका पथक होना जा बचन दिय गए थ जीवनपथ न सहवास क उनका टूटना जा घर बन चक थे जिस सुखी भविष्य की कल्पना की जा चुकी थी उसका मिट जाना किन्ता अधिक दुःखान एवं असफल सामाजिकता का प्रतीक हो सकता है इसका कल्पना कर सकना कठिन है। फिर भी यह हो रहा है और इसकी वृद्धि भी होती जा रही है।

इसके कारण अनेक हो सकते हैं। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ और। आज का प्रगतिवाद भट्ठाई उद्भूता स्वाथ आनि अनेक कारण प्रस्तुत किए जाते हैं। परन्तु वास्तव म कोई भी 'यक्ति साधारणतया ऐसे बने हुए सम्पक तथा सम्बन्ध को तोड़ना नहीं चाहता। यथाथ म उसका कारण 'यक्तिगत मनायाग की असमानता ही है।

सामयिक भावक उद्भव की परिस्थिति म तब प्रवृत्ति नहीं कर पाता। लोग भूल जात है कि विवाह क प्रथम उल्लास एवं रोमांच क उपरान्त दैनिक जीवन का साधारण नित्यक्रम प्रारम्भ होता है इसम दा 'यक्तिया का पारस्परिक सम्बन्ध बन्त ही निकट हो जाता है दो 'यक्तिमा का निजी अपनापन मिट जाता है पथक जीवन नहीं रहता तथा दोनों व्यक्तिमा का निजा रुचि रज्जान स्पष्ट होकर सामने आन ग्यता है।

यदि हम प्रकार क दा 'यक्तिया के स्वभाव की यथाथ वास्तविकताएँ एवं विगपनाएँ विज्ञा क सम्बन्ध क पूर्व उनर सामन जा जाए जिनम विपरीतता के अभिप्राय प्रधान हा ता सम्भवतः क विवाह क सम्बन्ध क प्रारम्भिक उद्भव मिट जाए और जागे जानवा क विच्छेद क कष्ट उत्पन्न न गन पाए।

एक 'यक्ति स्वभाव म बहुत क्रमबद्ध है मित-पथी है अल्पभापी है माधधान है और पुगन रीति रिवाजा क अनुसार यवन्ताराधित आचरण करने वाला है। उगवा सम्बन्ध एक ठम व्यक्ति म हो जा कि स्वभाव स उसक विपरीत भावक धचर गमाग अपन्ययी बन्भापी है जिसके स्वभाव म प्रगति की प्रवृत्ति अधिक और माधधाना का क्रम अपवाप्त है। इस प्रकार क सामगरी क अवगुण दैनिक जीवन म ग्राघ हो प्रगति हान ग्येग और निरुत्तरी भी सहनगी गता

यद्यप्येव सौजन्यता इस विषय में पर्याप्त नहीं होगी। यमूल विभिन्नताएँ मर्यादा हो कष्टकारक रहनी।

दूसरा व्यक्ति अपने सहज स्वभाव से समाज प्रिय है अपने दैनिक जीवन में व्यवहार-कुशल है उसका महंगामी का आचरण यन्त्रिक विपरीत व्यवहार का जो और जिसको अर्थ-यक्तियाँ समाज में मिलना जुटना प्रिय नहीं है तो जीवन सन्न हो भारी हो जाएगा और स्वाभाविक विपरीतता का कारण शीघ्र ही मानसिक थकान उत्पन्न हो जाएगी।

इस प्रकार के अनबानस कारण हैं। लियारक में अनमुखी वहिमुखी तथा भावुकता, मानसिकता प्रधान विचारधारा उत्पन्नता कृपणता अपमान तथा घट्टभाषण आदि के लियारक के चिह्न द्वारा सहज ही भाव व्यक्त होता है। चिह्न का पहचानना तथा इनका कि-हा भी दो लिप्यावटों में सामंजस्य एवं विभिन्नता दबना कठिन नहीं है।

समाज में ऐसे सन्नगीत एवं स्त्री-व्यक्तिगत सामर्थ्य के उत्पन्न होने मिलते हैं जो जीवन के विविध कारणों से रित्तना भी मानसिक विपरीत आचरण होते हुए भी अपना गुजारा करते हैं। परन्तु ऐसे उदाहरण कम हैं। बहुत-से घरों में स्वाभाविक विपरीतता के कारण आगनि जगडे होने रहते हैं।

इस प्रकार के उदाहरणों में जबकि शान्ति व्यक्तियों का विवक्षित स्पष्ट हो जाना है तो कुछ सम्भावना इस प्रकार की हो जाना है कि यदना व्यक्ति अपने दृष्टिकोण में स्वच्छ हो जाने हुए भी अपने लक्ष्य की एकता को ध्यान में रखते हुए, अपने दैनिक जीवन के आचरण में सन्नगीता के व्यवहार से अधिकाधिक सुगम सौजन्यता प्राप्त करें। इसमें वास्तविक व्यक्तिगत तथा का विपरीत उनको स्वच्छ स्वीकृति महान्वितता आग में निदबाम उत्तरदायित्व की उच्च भावना तथा दानियुक्त आचरण प्रत्यक्ष हैं। व्यक्तिगत मनायाग में इस प्रकार के मूल तथ्यों का होना अथवा उनकी अनुपस्थिति लियारकें स्वयं प्रकृत एवं प्रस्तुत करनी हैं।

मनोवैज्ञानिक 'यास्याताजा न अपन सुमयोजित अध्ययना म किया है। उनका कथन है कि जीवन के सुख सतोष और शान्ति का प्राप्ति के लिए तथा आत्मा मह यागी की प्राप्ति के लिए गहरे चिन्तन एवं छानबीन की आवश्यकता है और इसमें स्वाभाविक समन्वय की समझगरी प्राप्त करने के लिए लिखावट का सहज मनो वैज्ञानिक अध्ययन पर्याप्त सहायता प्रदान कर सकता है। ऐसे अनेकानेक विविधा जनक प्रश्न हैं जोकि लिखावट के माध्यम में सहज ही स्पष्ट हो जाते हैं।

विवाह विच्छेद के कारणों का विषय में गिरा अन्तर्जन का शिवेचन बहुत ही यथार्थ एवं विचारग्राही है। जो दो यमिन कभी विवाह मूल में बंध गए थे, उनका पथक होना जो वचा स्थि गए व जीवनपर्यंत सहवास के उनका टूटना, जो घर बन चके थे जिस सुखी भविष्य की कल्पना की जा चुकी थी उसका मिट जाना कितना अधिक दुःखान्त एवं असफल सामाजिकता का प्रतीक हो सकता है उसका कल्पना कर सकना कठिन है। फिर भी यह हा रहा है और उसकी बढि भा होती जा रही है।

इसके कारण अनेक हो सकते हैं। कोई कुछ कहता है और कोई कुछ और। आज का प्रगतिवाद भट्ठाई उद्दण्डता स्वाय आदि अनेक कारण प्रस्तुत किए जाते हैं। परंतु वास्तव में कोई भी व्यक्ति साधारणतया ऐसे बने हुए सम्पद तथा सम्बन्ध को तोड़ना नहीं चाहता। यथार्थ में इसका कारण व्यक्तिगत मनोयोग की असमानता ही है।

सामयिक भावक उद्भव की परिस्थिति में तक प्रवेश नहीं कर पाता। लोग भूल जाते हैं कि विवाह के प्रथम उत्साह एवं रोमांच के उपरान्त दैनिक जीवन का साधारण नित्यक्रम प्रारम्भ होता है इसमें दो यमिनया का पारस्परिक सम्बन्ध बहुत ही निकट हो जाता है दो यमिनया का निजा अपनापन मिट जाता है पथक जीवन नहीं रहता तथा दाना यमिनया की निजा रचि रज्जान स्पष्ट होकर सामने आने लगती है।

यदि इस प्रकार के दो यमिनया के स्वभाव की यथार्थ वास्तविकताएँ एवं विगणनाएँ विवाह के सम्बन्ध के पूर्व उनके सामने आ जाएं जिनमें विपरीतता के लक्षण प्रधान हों तो सम्भवतः विवाह के सम्बन्ध के प्रारम्भिक उत्सव मिट जाएँ और आगे जानना कि विच्छेद के कष्ट उत्पन्न न हो पाएँ।

एक व्यक्ति स्वभाव में बहुत क्रमयुक्त है मिनययी है अल्पभाषा है सावधान है और पुराने रीति रिवाजों के अनुसार व्यवहाराचिन आचरण करने वाला है। उसका सम्बन्ध एक कम व्यक्ति से हो जा कि स्वभाव में उसका विपरीत भावक चर्च उगाता अप्रत्ययी बन्भाषा है जिसके स्वभाव में प्रशान की प्रवृत्ति अधिक और भावधाना का क्रम अपर्याप्त है। इस प्रकार के साझगरी के अवयुक्त दैनिक जीवन में साध हो प्रशान होना लगभग और कितनी भी सहनशीलता

यद्यपि एव सीजयता इस विषय में पर्याप्त नहीं होगी। य मूल विभिन्नताएँ सदा ही कष्टकारक रहेंगी।

दूसरा व्यक्ति अपने सहज स्वभाव से समाज प्रिय है अपन दैनिक जीवन में व्यवहार-कुशल है उसका सहगामी का आचरण यदि उसका विपरीत अक्सर उसका ही और जिसको अत्यन्त व्यक्तिता से समाज में मिलना जुटना प्रिय नहीं है तो जीवन सहज ही भारी हो जाएगा और स्वाभाविक विपरीतता के कारण पीछे ही मानमित्र बनाने लगता है।

ऐसे प्रकार के अनमानक कारण हैं। लिखावट में अतृप्तता, बहिष्कृत तथा भावना, मानमित्रता प्रधान विचारधारा उत्पन्नता कृपणता अल्पभाषण तथा बहुभाषण आदि लिखावट के चिह्न शरीर सहज ही भाव व्यक्त होता है। इन चिह्नों को पहचानना तथा इनका चिह्न ही दा लिखावट में सामयिक एव विभिन्नता देखना कठिन नहीं है।

समाज में ऐसे सहनशील एवं अच्छे व्यक्तिगत सामर्थ्य के उत्पन्न होने मिलते हैं जो जीवन के विविध कारणों से वित्तना भा मानमित्र विपरीत आचरण होने हुए भी अपना गुजारा कर लेते हैं। परन्तु ऐसे उत्पन्न कम हैं। बहुत-से घरों में स्वाभाविक विपरीतता के कारण आए दिन झगड़े होने रहते हैं।

इस प्रकार के उत्पन्नता में जिनका व्यक्तिता का विवेक स्पष्ट हो जाता है ता कुछ सम्भावना इस प्रकार की हो जाती है कि ये दोनों व्यक्ति अपने दृष्टिकोण में स्वच्छ होत हुए भी अपने स्वयं की एकता का ध्यान में रखते हुए अपने दैनिक जीवन के आचरण में समन्वयिता के व्यवहार से अधिकाधिक सुगम जीवन प्राप्त करें। इसमें वास्तविक व्यक्तिगत तथ्या के विवेक उनकी स्वच्छ स्वीकृति महत्त्वपूर्ण आत्मा में विश्वास उत्पन्न करने की उच्च भावना तथा रीतिभक्त आचरण प्रत्येक तत्त्व हैं। व्यक्तिगत मनायाग में इस प्रकार के मूल तत्त्व का होना अथवा उनकी अनुपस्थिति लिखावटें स्वतः प्रकटित एव प्रस्तुत करता है।

## विविध लिखावटें

इस अध्याय में हम इस विविध व्यक्तिता की लिखावटों का विवचन करेंगे जिनको हमन देखा है अथवा जिनके विषय में हमन सुना या पढ़ा है।

इसमें हमारा लक्ष्य लिखावट के आवश्यक तत्त्वों का पहचानना एकल करना तथा उनके मनोवैज्ञानिक महत्त्व को रखने के व्यक्तित्व से सम्बन्धित करना है। लिखावट एक व्यक्तिगत चरित्र में समानता स्थापित करता है।

प्रत्येक लिपि की पूर्य निर्धारित षणमाला तथा उस रूप देने की निश्चित विधि है। प्रत्येक व्यक्ति इन असरों तथा लिखने की विधि को अपनी निजी शैली में क्रियाशील करता है। यह उसकी अपनी मौलिकता है।

लिखावट में भूत तत्व हैं जैसे कि लिखने का कोरा स्थान रखनी स्याही का मात्रा एवं प्रकार रखाए जायामी अधोगामी सीधी या गिराकर आधार रेखा ऊपर अथवा नीचे तथा अन्य छोटे चिह्न जिनसे लिखावट में विमल विराम तथा उनकी गति प्रसार अवरोध आदि। इस प्रकार व्यक्तित्व के स्थायी लक्षण हैं प्रत्येक व्यक्ति की जीवन गति भावुकता बुद्धि प्रभावशालिता प्रभावशीलता इति एतानि आदि। इनका आन्तरिक प्रेरणा में व्यक्ति का क्रियाशीलता बलपना प्रज्ञान सामाजिकता वृत्तत्वता यत्न हान हैं। इनसे सुनिश्चित समय में इनमें स्थायित्व प्रसरता प्रीति आत्मविश्वास गहन क्षमता इत्यादि उत्पन्न आदि अन्यान्य व्यक्तिगत लक्षण प्राप्त हान तथा व्यक्त हान हैं जिनके समान आचरण से व्यक्तिगत स्वभाव मनावग प्रगति आदि चरित्र के लक्षण विरहित हाने हैं जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति निजा आचरण एवं वृत्तित्व से सम्मानित हाना है।

एक साधारण व्यक्ति वास्तव में अपनी शारीरिक एवं बौद्धिक शक्तिता का साधारण एवं मामूल प्रयोग करता है। विकसित एवं सफल व्यक्ति इससे कहीं आगे है। वह अपना शक्तिता का वास्तविकता का स्वाज करता है तथा गहन परिश्रम धर्म समाप्त एवं विनाश में आग बनाता है। अपनी अतृप्त शक्ति का

विकास करता है तन्त्रित गारोरीक मानसिज एव भावुक प्रवृत्तियों का संगत  
मुसयमित एव मुनियोजित करता रहता है।



### चित्र ३१

गुरुत्व की लेख लिपि उनका सौम्य व्यक्तित्व की चित्रण आत्मा है चेतन,  
गम्भीर कलात्मक, सम्पूर्ण मुसकृत तथा सहज सजनात्मक। उनकी चतुर्मुखी  
प्रतिभा का अनिवाद्य गुण उस कि प्रण सतुल्य, महत्त्वता सहानुभूति गतिभाव  
लिखावट का समझाकार यथाचित सम प्रवाह गालाकार रेखाएँ उनका विस्तार  
रचनी की समरूपता में निहित हैं।

इस प्रकार की सम्पूर्ण और भरी हुई लिखावट में सहज सावधानी पूर्व  
निर्धारण औपचारिकता निपुणता आत्मविश्वास सर्वांगीण विकास, मन्त्री का  
भावना कलात्मकता अपन स्व-उद्दिष्ट विचार व्यक्त करने की सुगमता आदि अनेक  
नए पुष्ट लक्षण व्यक्त होते हैं।

महान् माहिर्यकार की हस्तालिपि एक हस्ताक्षर समान सीध और स्पष्ट  
है। न तो दोना का आकार में समानता है। आश्चर्य नहीं है। इस प्रकार में इनके  
सम्पूर्ण कृतियों में स्पष्ट रचनात्मकता है आत्मीयता है आत्माभिमान नहीं है।

साधारण का स्मृति एक महान् प्रश्न वेग है, सत्यवापी है प्रभावशाली  
है। हम सब इसका अनुभव करते हैं। व्यक्त करना कठिन है भाषा का सामर्थ्य के  
बाहर है।

एक लिपि प्रस्तुत है। लेखनी की गरिमा और उसका प्रवाह अद्भुत है।  
इसमें आत्मविश्वास की दृढ़ता नित्यता स्पष्टि क्रियाशीलता हठ मानवीयता  
स्पष्ट है। सम्पूर्ण लिखावट में चिन्तनधारा एक है एक ही रुद्ध है। एक ही आत्मा  
है। सशय नहीं है। बाधा नहीं है। कोई अवरोधक चिह्न नहीं है। अपना रुद्ध  
प्राप्त करने के लिए कष्ट सहन करने की आंतरिक गति है। कठिनाइयों पर विजय  
पान के लिए किसी भी प्रकार का त्याग करने की क्षमता है। अपन विचार स्वच्छ  
प्रभाव व्यक्त करने की निर्भीकता है।

सम्पूर्ण लिखावट आशापान्त मुसकटित है। यह सफ़्त आयोजक का  
प्रतीक है।

विविध लिखावटें



भाई रामनरेश जी,

आप का खत मिला है  
और वही का मानस भी  
आज कम आराम के दिनों में  
रोग आध धरा रामायण  
पुनर्ता है। तीन दिन से  
आप को पुरतक पठता  
हूँ। जो प्रसंग चल रहा  
है सो तो पढ़ता ही हूँ और  
असि काये आराम किया  
हूँ अब जीवनी चलती है  
मेश तो आपके अनुवाद  
पर आ रहा है

वधु आपका  
२-२-३६ मन्मथजी

निर ३२

जिना माह्व का लिखावट प्रमयुक्त है प्रगतिशील है और स्पष्ट है। यह  
विधिवत् लिखावट प्रणिमागो नाकिना चिन्तनागना औपचारिक आचरण

की प्रतीक है।

ॐ लिखावट में दो चिह्न प्रधान हैं। पहला, हस्ताक्षर के अन्त का अक्षर पूरा शुद्ध बना हुआ और उसका अर्थ अक्षरों से बना होना। अविष्मणीय सक्ती लिखावट में जिसमें जिस अक्षर एक-दूसरे से मिट्टा हुआ और पाप-पाम बन जाने हैं और जिसका प्रभाव सतकता, गापनायता, बुद्धि प्रधान चतुरता एवं अवरोध का है एक अन्तिम अक्षर की स्पष्टता अद्भुत है। ॐ का अर्थ है कि लिपि-लक्षक अपनी लयन में हस्ता से अन्त तक लगा रत्न। अपने बाय की सफाई का प्रयास में सत्त्व प्रियागोचर रह। ॐ का साथ ही इसमें आत्म प्रज्ञान की भावना भी अनिवार्य निहित है।

*The Jinnah*  
15/4/47

चित्र २३

हमारा चिह्न हस्ताक्षर का प्रथम अक्षर का आदि भाग है। इसमें ॐ अक्षर को प्रारम्भ करने वाली रत्ना एक गाथाकार मुखरुद्ध आहूति बनाना है। इसका तात्पर्य भा पहल चिह्न के समान है। यह आत्म अभिमान एवं गापनीयता का लक्षण प्रस्तुत करता है। लिपि-लक्षक अपने व्यक्तिगत विचार का व्यक्त नहीं करना चाहता। साधना सत्त्वमय है एवं वापान-महिम नीतियुक्त है।

लेखक ने जो प्रकाशक को  
अपना ले जा रहा है।  
३५-३५-३५

चित्र २४

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का ॐ लिपि अद्भुत मध्या प्रज्ञा अंगन एवं नेत्र का स्वाभाविक भावना का सजाव उत्पत्ति है।

लिखावट का सीधे लम्बाकार सजे हुए अक्षर तीव्रगति में शुद्ध स्पष्ट अक्षरों का बड़ा आकार आदि अन्त चिह्न सम्मत्ता, निर्माणकारक प्रवृत्ति आदि आभविष्यम, विविधता लक्षणा गन्तव्यता आत्मसमय नानियुक्त निणय

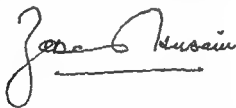
विविध लिखावटें

निष्पन्ना आग्नि प्रकाश प्रकाश यन् करते हैं। ऊपर से नीचे की ओर आ। वाता भारी तथा लम्बा पाइया निश्चयात्मक हठीलापन स्वच्छ प्रकृतितया अग्न प्रकाश की चोमन है।

विन्दीजी की गिरीसाखा का अग्नराक साथ भिन्न हुए अग्रसर होना प्रभावगानी लक्षण है। यह स्वाभाविक चित्तनधारा के प्रवाह में नीनियकन अवस्था का चिह्न है। सजना एवं जामकता प्रगति करना है। यह पूर्व परिचित आग्नि नियमा का पालन करना है, प्रगति में भी इनका न त्यागने का प्रवृत्ति है तथा इनके मायम से अपना प्रगतिवाता स्वच्छता को रूप देना है। यह प्रवृत्ति एवं नवान विचार का सत्तुति समवेय है मानसिक वातुम का प्रतीक है। इस समय नियम के हृदय विन्दास एवं आधार को मानते हुए विन्दीजी न अपनी नवीनता का स्पष्ट किया। यह सफल हुआ जातिम अभिरुचि लगने जयक परिणम त्याग एवं साधना के कारण। एक नवीन युग का सजन हुआ।

हस्ताक्षर में प्रथम अक्षर में एक द्वितीय अक्षर प्र' के उपरांत बिन्दु के स्थान पर छोटे वृत्ती के चिह्न बने हैं। य पुन स्पष्टता पर जोर देने के स्मारक हैं। इनके यक्तिगत कृतित्व में भी समान आचरण है स्पष्ट करना तथा पुन स्पष्ट करना। यह एक ऐसी नतिर शक्ति है जो निश्चित एवं गतव्यता की सफलता को श्रम करती है उसकी प्राप्ति का पुन स्पष्टीकरण चाहती है।

अक्षर एवं अनेक रेखाओं का बगवुन एवं कोणाकार होना स्वाभाविक अधीरता यक्त करते हैं। सम रीनियुक्त तार्किकता अधिक मानसिकता परिधम हठी एवं उग्रस्वभाव आलाचना तथा तुरन्त निणय लेने की विपता है। प्रतिकूल परिस्थिति का निर्भीकता में मुकाबला करना सहज गुण है।



चित्र ११

जाकिर हमीद मातृ का व्यक्तिगत गम्भीर चिन्तनशील एवं अन्तर्मयी है। गहन गम्भीर गान्त विवचन तथा निष्पन्ना स्वर मन्त्र पथ प्रदर्शन गुण हैं। इनके हस्ताक्षर के अनवानक मूल्म अक्षर सम तथा रीनियुक्त मित्रक अक्षर होन हुए इनकी अनवर्ती मूल्म हलि आगचनामक तक तथा नीनियुक्त आचरण व्यक्त करते हैं। इनका पान एवं क्रियाशीलता का क्षेत्र बन्द है। परन्तु उसमें लगन का वास्तविकता तथा एकाग्रता अधिक तथा प्रगतिवादिता कम है। जो कुछ

व करने हैं उसमें मूलतत्त्व सद्भावना है उच्च आदम है तथा स्वयं प्राप्त करने की गति है। उसमें गति भाव है वास्तविकता है जागृकर नहीं है।

मम्मक है कि इनकी गतिप्रियता में कुछ दार्शनिक-निष्क्रियता के आभास का धावा हो और ऐसा प्रतीत हो कि इनको सामाजिकता से अलग हो गया है। परन्तु वास्तविकता हमसे निराला विपरीत है जमा कि इनके हस्ताक्षर की रचना एवं गति प्रस्तुत करता है। १०० आकर हमने की लिखावट उनके वास्तविक अन्तर्गत की शुद्ध प्रतिच्छाया है। यह बहुत ही सचित्र मन्त्रिय मन्त्र है। गारोकि मानसिक एवं भावात्मक स्फूर्ति है। हस्ताक्षर के पक्ष दोना अरु अ एवं ह काजी बड़े और फटे हुए हैं। यह अन्तर्गत की विचारणा है जो मन्त्रापी है और बड़ धर्म में फगे हुई है। इनके ध्यान का प्रसार भी बहुत फग हुआ है। कोई बात गती नहीं होगी जो उनकी दृष्टि में न आ जाए। कोई विषय ऐसा नहीं होगा जो उनमें छुट गया हो। विचारणा यह है कि विचारणा में मन्त्र एक ही जान है तथा गन्तव्य प्राप्त करने में एकचिन्त हो जान है। हस्ताक्षर के बीच बनी हुई स्पष्ट एवं निष्पातमक सीधा रखा मन्त्र गन्तव्य की निष्पातमक गति है। यहन ही निष्पात होकर गन्तव्य चिन्तन में अपना गन्तव्य एक बार निष्पात करने तथा उसकी गतिप्रियता में गन्तव्य में मह्याग में प्राप्त करने में लग रहना है। इनके प्रक्रिया की महानता है।

गण्ड की नीति एवं उसके सवाग्न का भार इनके गम्भीर वास्तविक मृगनामक एवं गतिप्रिय व्यक्ति में मुरझित है। यह गती सन्तुलित गरिमा है जिसका प्रभाव मन्त्रापी है मन्त्रप्रिय है मन्त्रापी है। इनकी स्वाभाविक मधुरता में गति है।

गतिप्रियता

चित्र ०६

यह लिखावट छात्र मन्त्र अन्तरा से बनी है। कामल और स्पष्ट है। मन्त्राक्षरी गतिप्रिया भी बनी है। स्वभाव में महज मरणा मधुरता मन्त्र गति मन्त्रापी एवं मन्त्रों की भावना गति अन्तर्गत कामल मानवीय गुण व्यक्त हैं। एहि रचना में विविधता है। व्यक्तिगत जीवन के विभिन्न क्षणों में इनका ध्यान आकर्षित है।

भावुकता पर मन्त्रिण की प्रधानता है। दक्षिण अन्तर कुछ पीछे की ओर सच हुए प्रतीत होत है। यह अवगम्य स्वाभाविक है। परन्तु भारी और मन्त्र विषय मन्त्रिण का गीत ही बका दत्त है। इनमें सच रहना है दूर रहना है। अपने

विषय लिखावट

वाम्त्विक विचार एवं भावना का अपने तक ही सीमित रहना है। उसका प्रत्यन करना उचित नहीं है।

सहज और सुखद विषय आकर्षित करते हैं जिनसे सहानुभूति का सामाजिक सुख प्राप्त होता है। जीवन की सुखद कलामकता सुन्दर वस्तुओं का सचय वार् एवं म्रियोचित आचरण में आकषण स्वाभाविक है प्राकृतिक वस्तुओं का प्रेम है—अच्छा घर घञ्च और यत्किनगत जीवन सहज प्रण है छोटी कोमल एवं गोराकार लिखावट की रखाआ का।

आलोचना प्रिय नहीं है उत्साह निष्क्रिय करने वाली है प्रतिक्रियात्मक है सामाजिक प्रोसाहन की आवश्यकता है अनिम जगामी रेखा स्पष्ट है। यह अपना निणयमूचक चिह्न है जोकि निश्चित है और निश्चय ही स्वस्था की भावना स्पष्ट यकन करती है।




(नान बहादुर)

(Lal Bahadur)

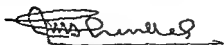
पत्र ३७

नोनों हस्ताक्षरों की रचना रेखाएं प्रसार आदि समान है। छोटे नम्र गोलकार अक्षर है। गान्तभाव अल्पभाषण मृदुभाषण महानुभूतिपूर्ण मद यवहार मंत्री की भावना मानवता की भूति सहृदय दयालु।

नोनों हस्ताक्षरों की रेखाएं अधिकांश मिनी जुला हैं तथा प्रगतिशील बग म है। अंतिम रेखाएं आग की आर बनी हुई हैं। यह क्रियाशीलता है। उत्साही आग बड़कर काम करने वाला। मन्त्र समान गान्त भाव मानसिक सतुर्जन रतन वार् जिनामु रीनियुक्त जयक परिश्रम करनेवाला निष्ठा परंतु सदक हमारे यत्किनया तथा परिस्थितिया को समझन में चितनशील। जनों के सम आकार से अधिक उपर-नीच की रखाआ में प्रसार नहीं है। अग्रजी तथा द्विती के मंत्र अक्षर समान आकार में छाते हैं। व्यक्तिगत क्रियाशीलता निकट परिस्थिति पर केन्द्रित है। भावुक बनना विवचन असिद्धी निरान्ध आवश्यकता है उसमें आग नहीं है। स्फूर्ति उस काम में लगी है जो अभी हाथ में है।

रस निश्चायक में एक निधि विपणन है। यह है श्रेष्ठों का गालकार म चरना गात्र मुखवत् गाँठें बनाना। यह अवरोध अंतमस्वी व्यक्तित्व का एक प्रधान चिह्न है। सहज मन्त्राभाव उत्तम चित्त होन हुए भी काम स्वभाव होने हुए ना गाम्त्राजी के मन का थाह पा गया अमम्भव है। न उस जनक विचार एवं भावनाओं का जिनका वार् वाम्त्व म यस्त नया करना चान्त व्यक्त करेगा।

उतना ही भाषण करे उतना ही प्रभाव आचरण करे जिनका कि निरान्त आचरण है।



चित्र २८

गल माहव व ह्यनाथर म अनर रगाए हैं प्रगतिवाग हैं और निपयात्रक तए रखा ना है। सम उमाए है भावन गक्ति है स्फूर्ति है।

इस प्रगतिवाग निपि गव म मवन याग्य चित्त अवराध व चित्त हैं तानि अनर हैं। मवन पदए आनि म कम-म-कम तान गाए चक्कर हैं यह भावना कि आग वें अभा अथवा कुठ ठहरकर। अतर पीछे की आग वन हुए हैं यह दूसरा चित्त है मुरगा की भावना एव गवायुक्त चित्तन। अन्न की स्वावाद और धूमता है। तरेला यद्यपि भीषा है दम गरिमा नग है और ममा भी अन्न भाग पादे की ओर धूमता है। य अनर लक्षण मज्ज प्रभाव प्रगति स्फूर्ति आनि क्रियाशील आचरण व विरुद्ध हैं तथा दम मनावगाति आचरण निपि गव व जलमत म निहित हैं छिप हुए हैं।

यह व्यक्ति व त्रिपरान लक्षणा व सगम का आचरण है जिमम महज गक्ति का प्रभाव है वास्तविकता गुण भावना स्वायचिन्तन एव स्वाय भाषन का है।

२। अविद्या/मह/म

चित्र २९

यह निपि-गव मवन प्रयग है। स्थिति व भा मवन व्यख्यान है।

निपि-गव का प्रथम प्रभाव एव जाकषण अतरा का वग आवार है। यह अत्यधिक जावन गक्ति का परिचय है। सम अत्यधिक स्फूर्ति ह सक्रियता है। सम क्रियाशील विगाए है। आत्म विवास है, निर्भीकता है उद्योग है, अनर आर ध्यान वन का वक्ति एव दमता है।

गति प्रगति है। यह गक्ति का परिचय है भावुव आवेग है। स्थिरता है दृढ़ता है। यह गक्ति भावना का मनुजिन रखन का मानमिक दृढ़ता है। कुछ आग का आर ववाद दान म मित्रता का प्रभाव पक्त होता है। मित्र-भुव अतरों म अतरा का रेलाभा मात्राओं एव गिराखाभा का मनुजित सामन्तस्य विषय सामजस्य प्रवृ बुद्धि तत्परता प्रभाव है। निमाक आवापान मयूण एव

विविध लिखावटें

सुसंस्कृत है। यह नियात्मक क्षमता है तथा व्यक्तिगत की नतिवृत्ता एवं गुणता है।

वैशेषिक द्रव्यगामा सत्तुष्टि आगे की ओर बढ़ने हुए मित्र जुल स्पष्ट एवं सम्पूर्णता के लिये चिह्न का याग एवं बहुत ही स्वस्थ व्यक्तित्व प्रस्तुत करत हैं। तत्सम प्रतिभा चतुर्मुखी है विचार स्वच्छ है काय गली स्वतन्त्र है नवीनता है यकीकरण स्वतन्त्र एवं स्पष्ट है।

इस प्रकार के महान् व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों की वास्तविकता तुरन्त समझते हैं। उचित-अनुचित आवश्यक अनावश्यक का निणय स्वतन्त्र एवं तुरन्त कर सकते हैं। अपने विचार शुद्धता निष्पन्नता एवं विश्वास से यत्न करने की क्षमता रखते हैं। समाज में इनका मनोयोग सहानुभूति उत्पन्नता मित्रता की भावना का रहना है। गति प्रगति है। कुछ-न-कुछ अवश्य करते रहते हैं। जनका नक काय एवं साथ ही हाथ में लिए रहते हैं। इनके अथ गुण उत्साह प्रसन्नचित्त मिलनसारी भविष्य की सुखात्मक आगावादी कल्पना मानवता के सद्गुणों की कल्पना एवं उसमें विश्वास विश्वासी प्रवृत्ति का सीधापन आता है। एक नितान्त अपरिचित भी इनके पास पूर्ण स्वतन्त्रता तथा आत्मविश्वास संपद संपन्नता है और उस निराशा नहीं होगी। ऐसे शुद्ध एवं स्वयं पूर्ण व्यक्ति के दान कम होते हैं।

रामे. २- विचार

चिन् ४

यह महानुभाव मानवता के आत्मा हैं। कोमल खल हुए अक्षर आपस में मुग्ध एवं स्वच्छता से मित्र-जुल एवं जलमर हाते हुए उनके शुद्ध विचार-हृदय प्रेरणा सन्निधता के सहज लक्षण हैं।

यह लिखावट सरल एवं इसकी रचना प्रवाह्ययुक्त है। व्यक्तिगत भी यापक है। सक्रियता सामाजिकता प्रवाह आता व्यक्तिगत लक्षण उत्साह लगन एवं सवहित के कार्यों में लग रहने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे व्यक्ति सभी पुरस्कार नहीं रखते। अनेकानेक काय उनके हाथ में रखते हैं। श्रियागीरता उनके विषय गुण है। लोग स मिलना जुटना उनकी समस्याओं को समझना तथा तत्सम्बन्धी कार्यों को सम्पन्न करना व्यक्तिगत वृत्ति है।

हस्तलिपि विज्ञान के प्रारम्भिक काष्ठ में भुक्त इनके दान करने तथा उनके निष्पन्न मन्त्र में ध्यान का अवसर प्राप्त हुआ था। उन दिनों यह भारतीय मन्त्रिमन्त्र के मन्त्र्यय तथा ममूरी मन्त्र। कुछ अवकाश मन्त्र। मैं उन दिनों विविध लक्ष्य विधिया का संघटन कर रहा था। १९४८ का समय था। आपस में मिलने में कठिनाई नहीं थी।

तब से बानचीन करना बठिन था। आपका स्वभाव एव नान विस्मयण है। नवानता का प्रामाह्नन दन ०। दानिक तत्त्वनानी भी हैं। अन स्वच्छन्दता पूण ग्व गिपि का उगाग्रण प्राप्त हा गया। भाग्यवग उनक साथ ही डा० वाल कृष्ण बसकर भी ठहर हए थे। उनक दान तो ननी हा सके। परनु उनको भी गिखावट गिवाकरजा व आग्रह स प्राप्त हा गई।

गिवाकरजा का मानव पथ विकमिन एव थप्ट है उनकी महानुभूति गुद सहृदय एव थापक है। सामाजिन ननत्व का प्रतिपादन इनके यक्तिगत स्वभाव में है।

### विषय ४१

डा० नगद प्रमिद समागेषक हैं। उनकी मूर्ख दृष्टि गम्भीरता विचारामकता एव विचारमकता सुप्रमिद है और मनावज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्वत सिद्ध है।

गिपि-लेज छोटा और सगिप्य है देखिए उमरा उगाग्रण। इसम मूर्ख दृष्टि अत्रेषण तक गीगता एवाग्रता एव निणयात्मक निदेष्य है। भावुक उन्माह पर प्रतिबध है।

विचार चिन्तन गम्भीर मयठ और प्राट हैं जस कि स्वलिखित हस्ताग्र हैं। अन्तिम रेखा जाति गहरियाग्र बाफा लम्बी है और मोच तक चगी गई है, स्वत-ग्रता स आम प्रगान-मूचक यकन हानी है। परनु वास्तव मन्मका मना बनानिक प्रवाट इस गिखावट म उग्टा है। नगेद्रजी का स्वभाव धुद अन्तमुखी है। प्रगान की वति इसम है नही। यह रसा एर एमा बिहू है विचारक व गिए उनमे मिग्न वाग अन्य व्यक्ति व गिए कि इसस आग कुछ मत बहा। नगेद्रजी धारा बर्ग स्पष्ट बहग परनु मही नानियुक्त और गीनियुक्त बहेंग। उनके विचार मूर्ख पने स्पष्ट एव सम्पूर्ण हैं।

गिराना व विषय म जा कुठ भी मुनन तथा पठने म आता है उसम उनने स्वर्गीय विना वयाहरगा नग का उत्तर अवय हाना है। उनके व्यक्तित्व की छाप उनके स्वभाव की छाया, प्रभाव आग गक्षाणा का विवरण दिया जाता



है इन्दिराजी के 'यकित्व' के विषय में। यह एक तुलनात्मक विवरण होता है, जबकि यह सत्य है कि श्रद्धा पंडितजी के महान् सबव्यापी व्यक्तित्व की छाया उसका प्रभाव इन्दिराजी के 'यकित्व' पर होना अनिवार्य एवं उचित है। यह इन्दिराजी के निजी 'यकित्व' के प्रतिपादन, निरूपण के लिए प्राप्युक्त नहीं है। श्रद्धा पंडितजी एक महान् आत्मा थे। उनका प्रभाव सबव्यापी था। ममार के अनेकानेक सक्रिय व्यक्ति उनसे प्रभावित हैं। परन्तु इन्दिराजी का 'यकित्व' जिसमें समाज सहज सम्बन्धित है अपना निजी है 'यकित्व' है स्पष्ट है तथा पर्याप्त है।

Yours sincerely  
Indira Gandhi

पत्र ४३

इन्दिराजी के 'यकित्व' का निरूपण हम उनकी लेख लिपि में पर्याप्त मात्रा में पाते हैं। इन्दिराजी का 'यकित्व' शुद्ध है स्पष्ट है स्थिर है स्वयं पूर्ण है तथा प्रभावशाली है।

छोटे आकार के सीधे अक्षर जिंदु जालि चिह्न पर्याप्तान मुखवत् तथा गोलाकार रेखाएं अल्पमुखी प्रवृत्ति के शुद्ध चिह्न हैं। इनमें किसी प्रकार का उद्गम प्रदान की भावना तथा अतिरिक्त यकनीकरण नहीं है।

निखावट स्थिर है प्रौढ़ है जमी हुई है अक्षर स्वावलम्बी सीधे सटे हुए हैं प्रगति स्वाभाविक है। गान्धे के बीच रिक्त स्थान अधि है गान्धे में अक्षरों का समयित प्रतिपादन है।

स्पष्ट है कि इन्दिराजी अपने 'यकित्व' में आत्मविश्वासी हैं स्वतंत्र हैं और श्रियात्मक हैं। जिनामु हैं छानखान करना चाहती हैं। वास्तविकता को समझना तथा उसके अनुसार निष्पत्ति काय करना अपना स्वतंत्र नियम बना लेना स्वभाविक गुण है। वह सत्य ही साफ बात करेंगी। उनमें धनुरता नहीं है। स्पष्ट चाहेंगी। जमकर काम करेंगी। अपना उत्तरदायित्व नतिकता और पूरी तरह से समझेंगी एवं सम्पन्न करेंगी। उनका विषय प्रमाण स्वावलम्बी है निष्पन्नता है श्रियागालना है आत्मरक्षा नहीं है निरयन भाषण नहीं है मिद्धाता पर अटक रहना है। अपनी स्वतंत्र मुनियोजित मुसष्टन एवं सति त्त निखावट हमना माती है।

उनके प्रधानमन्त्री हान के विषय में आलोचना की जाती है कि उनमें बुद्धि धानुय नहीं है। यह कहना अधिक उचित है कि उनमें निष्ठा नहीं है। यह भी कहा जाता है कि उनमें अपने पूर्ववर्ती प्रधानमन्त्री का शक्ति उत्साह, पटुत्व

प्रखरता एवं निर्भीकता की कमी है। इस प्रकार की समानता उचित नहीं है। पंडितजी में जितनी वास्तविक शक्ति थी उतना अधिक उसकी प्रशान्तकारिता थी। यह एक करने का अभ्यास ही तथा अपने उत्साह में कहीं भी पहुँचकर अपना प्रभाव प्रशान्त करते थे। यह एक युक्ति है। परंतु सफल व्यक्तित्व एवं नतुव की केवल यही एक युक्ति नहीं है।

संलग्नता यथायथा शक्तिवता तथा प्रतिपान्न की वृत्तियाँ भी इसी प्रकार की दूसरी युक्तियाँ हैं जो कि सफल नतुव के माग की अग्रगण्य विषयताएँ हैं।

माराजी देसाई

चित्र ५३

माराजी देसाई ने अपनी सामर्थ्य कायक्षमता एवं संलग्नता का ऊँचा स्तर स्थापित कर लिया है। यह नई बात नहीं है। उनके प्रारम्भिक जीवन से ही इस प्रकार के निपुणता के गुण प्रशिन हैं। कम अधिक इनका आत्मविश्वास है जो निश्चित एवं सशक्त है। यह आत्मजीवी हैं। जीवन में अपना आत्म एक ही द्वार स्थापित होता है। उसका उपरान्त के आचरण अनुकरण करते हैं।

लिपि-शैली में शब्दों पर दबाव अधिक अग्रगामा देखाएँ स्वच्छ एवं सुविस्तृत बड़े अक्षर मानाएँ ऊँचा और लम्बी स्पष्ट और मीठी न रेखा महत्वपूर्ण हैं। ये स्पष्टता एवं गहनता के लक्षण हैं। व्यक्तिगत जीवन में शक्ति एवं गरिमा के लक्षण हैं।

माराजी देसाई का व्यक्तित्व अपने में स्वतंत्र बलशाली प्रेरक व्यक्तित्व का उदाहरण है। इसमें आत्माभिमान है जो कि किसी भी बाधयुक्त क्षमतायुक्त सफल व्यक्तित्व में होता है परंतु सामाजिकता एवं सहयोग भी है। लिखावट का वेग ऐसा है जो स्वच्छ आचरण करता है और चाहता है। परंतु उसका सतुलित प्रतिपान्न भी है जो कि अनेकानेक परिस्थितियाँ में युक्तियुक्त सहायता भी प्राप्त कर सकता है। यदि स्वाभाविक हरीलापन न हो तो व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना जिस प्रकार से किया जा सकता है परिस्थितियाँ पर विजय किम प्रकार से पाई जा सकती है।

लिखावट का सीधा आकार स्पष्टता एवं स्थिरता निष्पाद्यत्मक आत्मबल के प्रतीक हैं। इसकी शुद्धता एवं बलात्मकता सौम्य-आकषण एवं भावात्मक सवेदनीयता के भी स्रोत हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता

४७

वि० ४४

एक उदय क्रियाशील यावन्निवृत्ता तथा लभन वसकरजी के व्यक्तित्व के सरल साधन हैं। स्वच्छ स्पष्ट साधारण अक्षर इमर उगाहरण हैं। समगति वित्त की स्थिरता गतभाव गम्भीरता एवं सौम्यता प्रगन करती हैं। प्रत्येक आचरण के छोटे-से छोटे उदाहरणों को समझना उसका उपयोग करना तथा उससे अपनी क्रियाशीलता का पर्याप्त सम्पूर्णता देना वसकरजी का विनियम है। यह व्यक्तित्व मुख्यतः अतमुसी है चिन्तनगाल गिष्ट अल्पभाषी एवं व्यावहारिक। अपने काम में ध्यान लगाए रहना सहज स्वभाव है। व्यक्तिगत भावना वधि रूपाय आचार विचार आदि का प्रगन करना इनके अन्तर्गत मनोयोग के बाहर है। ये विद्वान् पण्डित के विषेण गुण हैं जिसमें पाण्डित्य की मात्रा महान् तथा भावुक प्रगन आडम्बर की मात्रा शून्य है।

श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद्भगवद्गीता

वि० ४४

पण्डित रामचन्द्रा रिछारिया का यह चित्र की स्पष्टता आश्चर्यजनक है। प्रत्येक अक्षर पाठ एवं मात्रा शुद्ध तथा सम्पूर्ण है उदाहरणों में गति है बल है रूपाय है। इनका मात्रा प्रगन तथा व्यक्तित्व निगमात्मक वास्ति अपार है। जिस काम में लग जाते हैं उसे पूरा करके हा छानते हैं। उनका पीछे लग ही रहते हैं। बाधा

एक कष्ट जमी बन्धु मन्त्रका परिचय ही नहीं है। किसी प्रकार का अन्त एव आत्म्यन्त्रन्त्रका छुट्टर नही निकल है। मरन्त्र गूढ भिन्नताका भावनामन्त्रन्त्रका सामानिन्त्रका का प्रामाद्वन्त्रका है। मन्त्रानुभूति एव उन्त्रान्त्रा इनके महान्त्र गुण हैं। माघागन्त्रा त्रिन्त्रा क स्थान पर छन्त्र का निमाणन्त्रा उनकी नन्त्रानन्त्रा एव न्त्रान्त्रा बन्त्रे की गन्त्रिन्त्रा का पन्त्रिन्त्रा है। कन्त्रा मन्त्रका भा है पन्त्रा तु यन्त्रिन्त्रा न्त्रका मन्त्रागन्त्रा विगन्त्रा छान्त्रा ना यह अपन्त्रा की त्रिन्त्रा पर जा जान्त्रा हैं तथा उन्त्रा समय न्त्रका मन्त्रा मन्त्रका कन्त्रिन्त्रा ही नन्त्रा दुम्त्रागन्त्रा है उन्त्रा कि न्त्रा न्त्रा हमन्त्रागन्त्रा के उन्त्राहरण मन्त्रा व्यक्त्रा है।


परन्तु जब यह अपन्त्रा हमन्त्रागन्त्रा की मानन्त्रिन्त्रा अवन्त्रा मन्त्रा जान्त्रा हैं पन्त्रिन्त्रा अनुन्त्रा हन्त्रा जान्त्रा है। त्रिन्त्रा मन्त्रका अपन्त्रा वास्त्रावन्त्रा निन्त्रावन्त्रा पन्त्रा न्त्रा है। उन्त्रा समय उन्त्रा मन्त्राका का सामन्त्रा कर मन्त्रा कन्त्रिन्त्रा हन्त्रा जान्त्रा है।

  
 (V.V. Giri)

चित्र ४७

हम त्रिन्त्रावन्त्रा की मुख्य रेखाएँ स्पष्ट हैं अधोगामी तथा अधोगामी रेखाएँ अधोगामी एव काफी लम्बी हैं। जीवन गन्त्रिन्त्रा तथा त्रिन्त्रागन्त्रा का वास्त्रावन्त्रा है चन्त्रागन्त्रा है। त्रिन्त्रावन्त्रा के अन्त्रा लम्बाकार हन्त्रा हुए कुन्त्रा मन्त्रा हैं विन्त्रागन्त्रा अधिक्त्रा नन्त्रा हैं मन्त्रा काणाकार हैं। इसमन्त्रा मानन्त्रिन्त्रा अधिक्त्रा है भावन्त्रा भी बन्त्रा है परन्तु भावन्त्रा मन्त्रा मुमन्त्रागन्त्रा है। तन्त्रा विन्त्रावन्त्रा प्रत्यक्त्रा छान्त्रावन्त्रा लन्त्रा पर ध्यान्त्रा दन्त्रा एव न्त्रागन्त्रा स परित्यक्त्रा करन्त्रा आन्त्रिन्त्रा त्रिन्त्रा मन्त्रा लन्त्रा है। स्वन्त्रावन्त्रा में उन्त्रा निम्त्रावन्त्रा अपन्त्रा निम्त्रावन्त्रा पर उन्त्रा रहन्त्रा आन्त्रिन्त्रा व्यक्त्रिन्त्रावन्त्रा के प्रयान्त्रा न्त्रागन्त्रा प्रन्त्रात हन्त्रा हैं।

मुख्य रेखाओं का अन्तर त्रिन्त्रागन्त्रा मन्त्रा पन्त्रा वन्त्रे वास्त्रावन्त्रा विन्त्रागन्त्रा नन्त्रा एव विन्त्रागन्त्रा प्रन्त्रागन्त्रा करन्त्रा है। स्वन्त्रावन्त्रा-मन्त्रागन्त्रा के प्रायः प्रारम्भ मन्त्रा श्री गिरिजी के नन्त्रावन्त्रा वृत्तिवन्त्रा एव त्रिन्त्रागन्त्रा त्रिन्त्रा स मन्त्रागन्त्रावन्त्रावन्त्रा परिचिन्त्रा है।




चित्र ४८

प्रथम हन्त्रागन्त्रा अधोगामी मन्त्रा है। एन्त्रा प्रन्त्रात हन्त्रा है कि हन्त्रागन्त्रा का वास्त्रावन्त्रा विन्त्रा मन्त्रागन्त्रा यन्त्रा है। अन्त्रा हम इन्त्रा हन्त्रा मन्त्रावन्त्रावन्त्रा विन्त्रावन्त्रा कन्त्रा के विन्त्रावन्त्रा लिखावन्त्रा

प्रयाम करेंगे। समस्या कठिन है। इस लिपि में को बन् आकार का नहा कह सकते क्याकि इसका अन्तिम भाग छाने अक्षरा का है। छोटा आकार भी नहा कह सकते क्याकि इसका आन्ति भाग बड़ आकार का है। फिर इसमें सब अक्षर मिल गए हैं। वेबल एक जगह में उठाई है सम्भवत सुगमता के लिए। अन्तिम अक्षर की अतरेखा आग नहा बढ़ती पीछे भा नहा जाती सीधी नीच की जार चली जाती है। हिंदी में हस्ताक्षर की पूरा में लिपि छाने अक्षरा के आकार की है।

दोना हस्ताक्षर प्रगति में ऊपर की ओर उठन हुए हैं। दोना हस्ताक्षरा के नीचे छोटी परन्तु हल्का निश्चयात्मक तरेखा बनी हुई है।

ये अक्षर एवं ऊपर उठनी लियावत् उत्साह आमविद्यास स्फूर्ति के लक्षण हैं। जसा कि श्री चहाण "यत्किन्तु सामाजिक जीवन में हैं प्रयत्नचित्त और मिलनसार। क्रियाशीलता का दृष्टिकोण भिन्न है। उसमें एकाग्रता है लगन है और हस्ता है। किसी भी कार्य की याजना हाथ में लने के बाद एकाग्रता अधिकाधिक बढ़ती जाती है जिसे प्रचार एवं प्रदर्शन कृति नहा है। और जब तक यह योजना सम्पूर्ण न हो जाए उनका ध्यान इधर उधर विचलित नहीं होता। इस प्रकार के काम में तथा अपनी कार्य-कृति में वह किसी प्रकार का हस्त क्षय नहीं होने देंगे। उनके मन की बात जान सकना कठिन है। यह गुप्त मात्र है सम्भवत सरदार पटेल का जाकि अपन कृत्य के विषय में "यथ एवं अनिरिक्त बात विवाद करना तथा अपनी श्रिया वाली "यत्न करना पसंद नहा करते थे। जो काम करना है उससे विषय में अधिक बात करना "यथ है। जहाँ तक गम्भीर विषय का सम्बन्ध है चहाणजी से रहस्यादृष्टादन की आगा नहा है। यह निश्चयात्मक है हल्का है।

पूरी निष्ठावत् गम्भीर एवं निश्चयात्मक शाली की प्रतीक है।

विनीता,  
 सुशीला नैयर  
 (सुशीला नैयर)

चित्र ४६

मुनीगजा की यह लिपि स्वच्छ वढ आकार की तथा स्पष्ट है लक्षनी का दबाव हल्का है परन्तु स्थिर है।

स्वभाव में मुनीगजा सरल उसाही प्रयत्नचित्त हैं। बहिमत्वी प्रतिभा के लक्षण स्पष्ट हैं। अनवरत परिस्थितिया में सम्पन्न रूप में समर्थ हैं। समाज

प्रिय हैं। समाज के विभिन्न स्तरों में लोगों से मिलना जुलना उनकी बात को समझना उनके लिए सहज है।

क्रियाशीलता में उनकी लगन पकरी है अनेक कार्यों का संचालन कर सकने में समर्थ हैं।

अपने उत्साही सरल उदार स्वभाव में समाज में प्रभावशाली एवं प्रिय हैं। भावुकता व चिह्न अधिक हैं। मनोवृत्ति सवेदनशील है।

विविध लिखावटों के प्रस्तुत उदाहरणों से तथा उनकी मनोवैज्ञानिक समीक्षा से प्रस्तुत है कि लिपि-लेख केवल बौद्धिक एवं गणितीय क्रिया नहीं है। इसमें वास्तविक मौलिकता है और यह मौलिकता व्यक्तिगत मनोयोग से प्रभावित होती है तथा यह ऐसा सुसंमिश्रित चित्र प्रस्तुत करती है जिसमें लिखने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण लक्षण प्रस्तुत एवं प्रकटित रहते हैं।

हस्तलिपि विज्ञान इस लिखावट की रचना विलक्षणता एवं व्यक्तिगत संस्कार के माध्यम से व्यक्तिगत मनावैज्ञानिक विवेचन का प्रयास करता है। यह कितना सफल है तथा इसे कितना सफल बनाया जा सकता है यह व्यक्तिगत पाण्डित्य प्रतिभा एवं क्षमता पर निर्भर है। परन्तु इतना तो मानना ही पड़ता है कि लिपि-लेख एवं व्यक्तित्व की सफलता स्वच्छ विचार एवं आचरण अथवा भाग्यपक्षी धारणा पर निर्धारित नहीं हैं। सफल लेख लिपि एवं व्यक्तित्वसमय में लगन एवं निश्चय जीवन शक्ति समझ और रीतिरूपक आचरण की शक्ति की साधना का फल है।

ज्ञान एवं विवाद में आगे ये लिपि-लेख के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रदर्शित करते हैं कि सफल व्यक्तित्व की प्राप्ति लगातार दृढ़ निश्चय एवं सघन संशोधन से प्राप्त होती है। जिन व्यक्तियों की जीवन शक्ति जाग्रत तथा सुसंस्कृत है वे अपनी क्षमता के समुचित विकास के स्वरूप में लगे हो रहते हैं जिनसे उनका अधिकाधिक निष्कार होता रहता है तथा उनकी क्रियाशील क्षमता, क्षमता एवं व्यक्तिगत प्रतिभा में प्रगति होती रहती है। इस व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य एक बार के प्रतिष्ठित कर लेते हैं तथा उसके मार्ग पर निरन्तर धन चतुरता एवं निश्चयात्मक शक्ति से लगे रहकर अपनी सफलता की चरम सीमा पर पहुँचते हैं।

लिपि-लेख व्यक्तित्व की क्षमता मनायोग एवं सजीव सकलता अपने सहज छायावत् स्वभाव से सदैव व्यक्त रहते हैं।

● ● ●

## GERMAN

- (1) Graphologische Praxis von Alfred German
- (2) Der Wille in der Handschrift von Merce! De Trey
- (3) Trieb und Verbrechen in der Handschrift Ausdrucksbilder asozialer Persönlichkeiten von Dr Max Pulver
- (4) Kleines Handbuch moderner Graphologie Praktische Einführung in die Handschriften-Deutung von Dr Kurt Rohner Berne
- (5) Intelligenz im schrift ausdruck von Max Pulver Zurich

## FRENCH

- (1) Initiation Graphologique by Charles Dietrich Paris
- (2) L'Ecriture Ne Ment Pas Preface De J Crepieux Jamin Traduit Par Ivan Goll by Raphael Schermann Paris
- (3) La Graphologie mise a la portee de Tous Texte orne de 800 modeles d'ecritures Paris
- (4) Graphologie Georges de B auchamp Paris

## परिशिष्ट-२

### संस्थाओं की सूची

#### INSTITUTIONS

Graphology is studied in various Universities in Europe and in other Institutions given exclusively to Graphology Some of these are as follows

##### West Germany

Institute of Psychology University Mainz Saarstrasse Mainz

Association of German Graphologists Deutsche Graphologische Vereinigung V Berufsverband deutscher Graphologen—M3 3 Mannheim

University of Hamburg Facilities for studies in graphology are available in almost every University in Germany as a part of studies in Psychology

##### FRANCE

La Societe de Graphologie : 6 rue Casimir—Delavigne Paris VI

The activities of this society consist of Publishing a Quarterly known under the title of La Graphologie—and offering courses at the end of which a diploma is delivered

##### SWITZERLAND

University of Zurich

Institute of Angewandte Psychologie Zurich

A student who wants to go in for examinations and Diploma in Graphology has to attend seminar lectures in Graphologie as well as other courses of Psychology for three years

Schweizerische Graphologische Gesellschaft Luisenstr—46 Bern



A strict examination in Graphology can be taken. A student who passes the exam can become a member of the above society. The only requirement for this examination is the talent, the ability and the knowledge of Graphology as well as some knowledge of Psychology.

Zentralinstitut für Schriftpsychologie Berlin Zehlendorf  
Am Fuchspass 44

Institute for Psychology and Characterology at the Freiburg  
University Freiburg i.Br. Belfortstrasse—11

### **United Kingdom**

The Insight Institute—School of Personal Analysis and  
Development New Malden Surrey

Offers postal tuition courses and thereafter Associate  
Membership of the Institute

### **U S A**

The New School for Social Research 66 West 12th Street  
New York 11 NY

This school has two courses on graphology

(a) Graphology I Handwriting Analysis

(b) II Advanced

The first course is designed to introduce the student to the  
Fundamental concepts and techniques of graphological analysis.  
Competence in at least one other projective method is pre-  
requisite. Students who complete the course in handwriting  
analysis in the previous year may enroll for the second year  
only for one point of credit at a fee of 25 \$.

The pre-requisite for the advanced course is a basic course  
in graphology, some Psychology or clinical training or  
equivalents.

It is concerned with the problems of screening personnel  
and analyzing personality for individual productivity. Empha-  
sis is on the practical application of graphological procedure.

## परिशिष्ट-३

### जेकोबी का मौलिक कथन

The science of graphology is based on the fundamental principle that every single handwriting has a character of its own and claims that this manifoldness of handwriting apart from minor influence of writing materials of various school models etc is primarily due to the uniqueness of its writer's personality

Therefore the question arises whether the properties of handwriting are numerous enough for the structure of every individual handwriting to be different from that of all others

In order to avoid intricate details the problem shall be reduced to the question How many different ways of shaping a single stroke are possible ?

The following procedure was adopted from two hundred addressed envelopes the 1's of W C I were cut out and pasted side by side as illustrated in Fig 1 and Fig 2 The reader may carefully compare these strokes with each other but he will not be able to discover two strokes which are completely identical or even conspicuously similar to each other It may be pointed out that these samples were by no means selected on account of their dissimilarity they were cut out from envelopes just as they happened to arrive

the result however is interesting enough The considerable difference between these two hundred strokes displays the manifoldness of shaping a single stroke The strokes differ in width writing angle pressure decisiveness and other characteristics Some strokes are drawn rapidly like downward other thickening towards the top some show unsteady and some even pressure some strokes are facile and tender

A strict examination in Graphology can be taken. A student who passes the exam can become a member of the above society. The only requirement for this examination is the talent, the ability and the knowledge of Graphology as well as some knowledge of Psychology.

Zentralinstitut für Schrift Psychologie Berlin Zehlendorf  
Am Fuchspass 44

Institute for Psychology and Characterology at the Freiburg University Freiburg i Br Belfortstrasse—11

### United Kingdom

The Insight Institute—School of Personal Analysis and Development New Malden Surrey

Offers postal tuition courses and thereafter Associate Membership of the Institute

### USA

The New School for Social Research 66 West 12th Street  
New York 11 NY

This school has two courses on graphology

(a) Graphology I : Handwriting Analysis

(b) II Advanced

The first course is designed to introduce the student to the Fundamental concepts and techniques of graphological analysis. Competence in at least one other projective method is prerequisite. Students who complete the course in handwriting analysis in the previous year may enroll for the second year only for one point of credit at a fee of 25 s.

The prerequisite for the advanced course is a basic course in graphology, some Psychology or clinical training or equivalents.

It is concerned with the problems of screening personnel and analyzing personality for individual productivity. Emphasis is on the practical application of graphological procedure.